ISBN: 978-93-342-4722-0

मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन
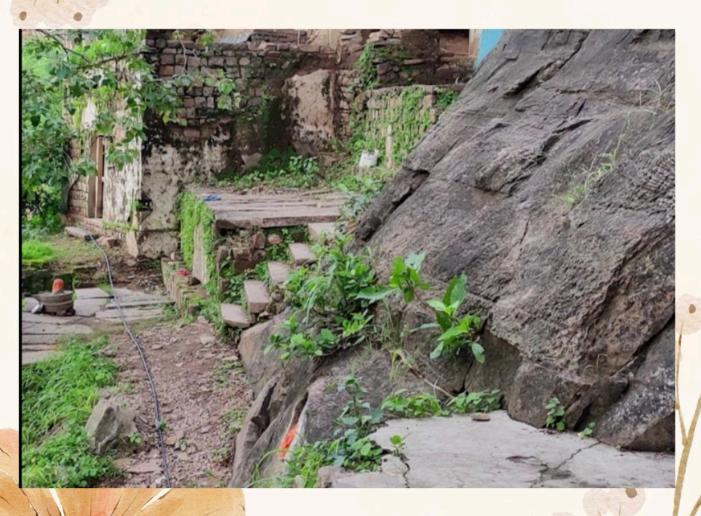
- डॉ. राजीव अग्रवाल
- अनुराग कुमार
- दीक्षा सिंह

मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन

डॉ. राजीव अग्रवाल

अनुराग कुमार

दीक्षा सिंह

E-book संस्करण: 2024

मूल्य: रु. 69

ISBN: 978-93-342-4722-0

प्रकाशक-

दीक्षा सिंह
पुलिस चौकी के पास, नौबस्ता, हमीरपुर (उत्तर प्रदेश)
- 210301
Mob-8318429964

E-mail: deekshasingh200805@gmail.com

मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन

डॉ. राजीव अग्रवाल

एसोसिएट प्रोफेसर- शिक्षा संकाय

अतर्रा पी० जी० कॉलेज, अतर्रा (बाँदा)

अनुराग कुमार

बी०एल०एड०, एम०एड०

दीक्षा सिंह

बी०कॉम०, एम०ए० (इतिहास)

प्राक्कथन

किसी भी राष्ट्र का इतिहास, उसके वर्तमान और भविष्य की नींव होता है। देश का इतिहास जितना गौरवमयी होगा वैश्विक स्तर पर उसका स्थान उतना ही ऊँचा माना जायेगा। वैसे तो बीता हुआ कल कभी वापस नहीं आता लेकिन उस काल में बनी इमारतों और लिखे गये साहित्य उन्हें सदैव सजीव बनाये रखते हैं। यह सत्य है कि वक्त रहते यदि हमने अपनी गलतियों को नहीं सुधारा तो हम अपनी ऐतिहासिक विरासतों को खो देंगे। अतः आवश्यकता है कि हम सभी ऐतिहासिक इमारतों के प्रति जागरूक हों। साथ ही आवश्यकता इस बात की भी है कि समाप्त हो चुकी या समाप्ति की कगार पर पहुँच चुकी ऐतिहासिक विरासतों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाए तथा भविष्य के लिये इन्हें संरक्षित किया जाये। यह तब ही सम्भव होगा जब देश का प्रत्येक नागरिक अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक होगा तथा उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी को समझेगा।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक **"मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन"** है। इस पुस्तक को छः अध्यायों में विभक्त किया गया है, जिनका विवरण निम्न प्रकार है:

प्रथम अध्याय में शिक्षा: विकास की प्रक्रिया, इतिहास का आशय, वर्गीकरण एवं महत्व: शिक्षा में इतिहास का स्थान, इतिहास शिक्षण की समस्याएँ, चित्रकूट का इतिहास, चित्रकूट की ऐतिहासिक विरासत, प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या, अध्ययन के उद्देश्य, परिसीमांकन, शोध विधि, शोध उपकरण, शोध कार्य महत्व एवं सार्थकता पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय में जागरूकता एवं ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित कतिपय शोध कार्य की समीक्षा प्रस्तुत की गयी है।

तृतीय अध्याय में मोरध्वज आश्रम का सचित्र वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में शोध विधि, शोध अभिकल्प, लक्षित प्रतिदर्श, जनपद एवं संस्थाओं का चयन, शोध उपकरण, परीक्षण का प्रशासन, फलांकन एवं सांख्यिकीय प्रविधि का सविस्तार वर्णन किया गया है।

पञ्चम अध्याय में प्रदत्त का विश्लेषण एवं निर्वचन प्रस्तुत किया गया है।
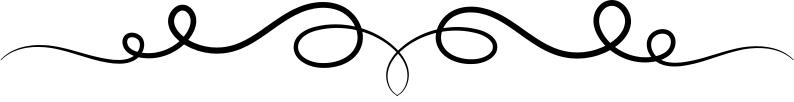
षष्ठ अध्याय में निष्कर्ष, सुझाव, शैक्षिक उपादेयता एवं अध्ययन की सीमाएँ प्रस्तुत की गयी हैं।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबन्ध पर आधारित है। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसन्धानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं है जब तक कि वह जनसामान्य के लिए सुलभ न हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उललेखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वभाविक है। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो हम अत्यन्त आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन का प्रयास करेंगे।

16/07/2025

डॉ. राजीव अग्रवाल
अनुराग कुमार
दीक्षा सिंह

अनुक्रमणिका

अध्याय	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या

अध्याय	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या

अध्याय	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
चतुर्थ	अध्ययन विधि एवं प्रक्रिया	55-92

अध्याय	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या

अध्याय	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या

अध्याय प्रथम

अध्ययन परिचय

1.1 शिक्षा: विकास की प्रक्रिया

शिक्षा ही मानव विकास का मूल आधार है| शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपनी शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक शक्तियों को अनुशासित करता है। इस प्रकार मनुष्य के स्वानुशासन के विकास में 'शिक्षा' का महत्वपूर्ण स्थान है। जब से बालक इस संसार में जन्म लेता है, तभी से वह वातावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करना प्रारंभ कर देता। वातावरण एवं पर्यावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करने में शिक्षा की महती भूमिका होती है।

प्रारंभिक अवस्था में बालक की सीखने की गति प्राय: कम होती है। धीरे-धीरे जब बच्चा बड़ा होता है तो वह वातावरण से कुछ नए अनुभव अर्जित करता है और उसके फलस्वरुप उसका व्यवहार परिवार एवं समाज तथा समुदाय के अनुकूल हो जाता है। बालक के अनुभव का यह क्रम दिन-प्रतिदिन बढ़ता रहता है, जिसके परिणामस्वरूप उसका व्यवहार संयमित होने लगता है। शिक्षा के द्वारा ही एक असभ्य, अविकसित, अपरिपक्व मानव, सुसभ्य एवं सुविकसित इंसान के रूप में परिवर्तित हो जाता है|

शिक्षा केवल मानव जाति के व्यवहार में परिवर्तन लाने तक ही सीमित नहीं है " अपितु उसका चारित्रिक विकास भी करती है संसार के अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य पर शिक्षा का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक होता है क्योंकि मनुष्य एक विवेकशील एवं बुद्धिमान प्राणी है शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य के पशुवत व्यवहार में परिवर्तन करके उसे एक सामाजिक प्राणी बनाया जाता है। सामाजिक प्राणी बनने की प्रक्रिया में परिवार विद्यालय, समाज तथा समुदाय बालक की सहायता करते हैं। बालक की शिक्षा के विकास में प्राथमिक माध्यमिक तथा उच्च स्तर पर अलग-अलग कार्यक्रम निर्धारित किए जाते हैं, जिससे बालक के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य की प्राप्ति आसानी से की जा सके। बालक की शिक्षा में माध्यमिक शिक्षा अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है| उच्च माध्यमिक शिक्षा स्तर पर ही बालक की शैक्षिक व्यावसायिक एवं सामाजिक परिपक्वता की प्राप्ति होती है, जो उसके आगे आने वाले भविष्य की दिशा निर्धारित करती है।

समाज की आर्थिक व्यवस्था चार प्रकार की श्रेणियों में विभक्त रही है ब्राह्मण वर्ग से अपेक्षा की जाती थी कि वह समुदाय को पुरोहित, चिंतक, लेखक, विधायक, धार्मिक नेता तथा पथ प्रदर्शक देंगे। क्षत्रिय वर्ण समाज को योद्धा शासक प्रशासक, वैश्य समाज को उत्पादक, कृषक, शिल्पकार, व्यापारी देते थे। शूद्र वर्ण छोटे-छोटे कार्यों के लिए भत्तों या नौकरी की आपूर्ति करते थे | इस प्रकार की प्रणाली में धर्म चिंतन तथा विद्या को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया| सामाजिक व्यवस्था जन्म के आधार पर नहीं, अपितु व्यक्ति क्षमता व आंतरिक व्यवस्था के आधार पर निर्धारित की गई | वर्णों के आधार पर तदनुरूपी चार पुरुषार्थ स्थापित किए गए जो उस समय की दार्शनिक सोच के द्योतक हैं- ब्राह्मण-मोक्ष, क्षत्रिय काम, वैश्य अर्थ, शूद्र-धर्म कालांतर में यही वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था में परिणत हुई तथा जातीय संघर्ष का जन्म हुआ जो आज के सूचना तकनीकी युग में भी यह संघर्ष उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यमान है, चाहे वह राजनीति में हो, शिक्षा में हो, या शासन में हो, यह राष्ट्र निर्माण में बाधा स्वरूप है। इस सामाजिक विघटन को दूर करने के लिए समाज में ऐसी शिक्षा का होना नितांत आवश्यक है जो हमें संकीर्ण सोच से ऊपर उठाकर वैश्विक स्तर तक पहुंचा सके, और इस सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी युग में एक सकारात्मक सोच का विकास कर सके। वर्तमान समय में उच्च माध्यमिक शिक्षा की जो

स्थिति है उसमें कुशल शिक्षक के साथ वर्तमान तकनीकी भी महत्वपूर्ण भूमिका में होती है, क्योंकि उच्च माध्यमिक शिक्षा के संदर्भ भारत की स्थिति अभी निराशाजनक है।

1.2 इतिहास का आशय, वर्गीकरण एवं महत्व

इतिहास मानव जीवन की समस्त क्रियाओं पर प्रकाश डालने वाला एक कथ्य या कहानी है, जिसमें मानव की समस्त क्रियाओं तथा उत्थान पतन की झाँकी हमें देखने को मिलती है। इतिहास के द्वारा हम अतीत के उन सारे गुण दोषों को देख पाते हैं जो मानव के द्वारा सम्पादित किये जाते रहे हैं। वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में इतिहास विषय का शिक्षण व अध्ययन की महती आवश्यकता है। इस विषय का अर्थ, परिभाषाएं, अवधारणाएं, उद्देश्य तथा उपयोगिता अत्यन्त व्यापक एवं दूरगामी है। अतः भविष्य निधि के रुप में इतिहास विषय का अध्ययन व शिक्षण की व्यवस्था आवश्यक है। अतः समस्त मानव जाति को इतिहास विषय के अध्ययन हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए तथा इसकी सुरक्षा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

इतिहास मानव जीवन की समस्त क्रियाओं पर प्रकाश डालने वाला एक कथ्य या कहानी है जिसमें मानव जीवन की समस्त क्रियाओं तथा उत्थान पतन की झाँकी हमें देखने को मिलती है। इसमें समस्त कृत्यों को क्रमवार ढंग से निष्पक्ष रुप से प्रस्तुत करने की क्षमता है। इतिहास नामक शिक्षा शाखा की उत्पति सर्वप्रथम यूनान में मिलती है। परीक्षा सिद्ध गवेषणा के अर्थ में स्वयं इतिहास शब्द का प्रयोग उस समय हुआ जब किसी विशेषज्ञ के द्वारा वाद विवाद के निबटारे के लिए अभ्यर्थना की जाती थी। अतः इतिहासकार से अभिप्राय वाद-विवाद के निर्णय करने वाले व्यक्ति से होता था। सर्वप्रथम हिस्ट्री शब्द का प्रयोग करने वाला इतिहास का जनक हेरोडोटस था। इस प्रकार यह सर्वमान्य है कि हिस्ट्री अथवा इतिहास का उद्गम स्थल प्राच्च संस्कृति का केन्द्र यूनान रहा है। वैसे विद्वानों और इतिहासकारों ने इतिहास शब्द का प्रयोग संकीर्ण तथा व्यापक दोनों अर्थों में किया हैं। सबसे पहले हम इसके शाब्दिक अर्थ पर प्रकाश डालना चाहेंगे तदुपरांत इसके संकीर्ण और व्यापक अर्थों का विवेचन करेंगे।

इतिहास विषय की आवश्यकता पर बल देते हुए इतिहासकार रोमिला थापर का मानना है कि मानवीय एवं राष्ट्रीय विरासत को समझने के लिये बालकों को इतिहास का ज्ञान देना अत्यावश्यक है। इतिहास विषय के अध्ययन से बालकों में स्थानीय राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के ज्ञान से परिचित होने का सुअवसर प्राप्त होता है जिससे वे अपने देश के स्थानीय स्तर के इतिहास को जानते हुए राष्ट्रीय तथा स्तर के इतिहास को समझ पाते है। 19 वीं शताब्दी के अन्तिम चरण तथा 20 वीं सदी के प्रारम्भ में जब विज्ञान का बोलबाला हो गया था,तब इतिहास को समाज के सच्चे विज्ञान के रूप में देखा जाने लगा था। केवल इतिहासकारों ने ही नहीं वरन राजनीति शास्त्रियों तथा दार्शनिकों ने भी इसे विज्ञानों के विज्ञान का अध्ययन करना आरम्भ कर दिया था। फिर भी इतिहास की प्रकृति के सम्बन्ध में विवाद बना रहा। कुछ विद्वानों ने इतिहास को कारण तथा कार्यकारण भाव का सूचक माना। इसके विपरीत दूसरे विद्वानों ने इतिहास की समाज के सच्चे विधान या विज्ञानों के विज्ञान के रूप में देखा। आज कोई भी इस बात से सहमत नहीं होता है कि इतिहास अलौकिक शक्तियों के हस्तक्षेप से प्रभावित होता है। अब सामान्यतः यह विश्वास किया जाने लगा है कि इतिहास को उन्हीं विधियों का अनुसरण करके समझा जा सकता है जिनका अनुसरण भौतिक और सामाजिक वैज्ञानिक करते हैं। इसी कारण आज इतिहास को उस अध्ययन क्षेत्र के रूप में देखा जाता है जो वास्तविकता का वर्णन करता है। इस अध्ययन क्षेत्र में वैज्ञानिक विधि का प्रयोग करके ही वास्तविकता की खोज की जाती है।

इतिहास को सार्वभौमिक रूप से विद्यालय पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण विषय माना गया है। यह समाज में मनुष्य के विकास का अध्ययन है। इतिहास के अध्ययन के अभाव में न तो हम अपने वर्तमान को समझ सकते हैं और न भविष्य का आंकलन कर सकते हैं। इसी कारण पाठ्यक्रम में इतिहास को स्थान प्रदान किया गया है। इतिहास के शिक्षण

से विद्यार्थियों में अपने देश के अतीत के प्रति प्रेम एवं गौरव की भावना उत्पन्न होती है एवं इसके ज्ञान से जाति ए धर्म ए भाषा आदि के बन्धनों को समाप्त कर भावनात्मक एकता का विकास किया जा सकता है। इतिहास के द्वारा छात्रों को ज्ञान का भण्डार प्रदान किया जाता है अर्थात् इतिहास स्वयं ज्ञान का भण्डार है जिसमें बालक स्वेच्छानुसार अन्वेषण कर सकते हैं। इतिहास उनको विभिन्न राष्ट्रों व्यक्तियों, उनके विचारों, परम्पराओं, प्रथाओं तथा समस्याओं का ज्ञान प्रदान करता है। इतिहास में बालक को अपने मस्तिष्क का सबसे अधिक उपयोग करना पड़ता है उनको स्मरण रखने के लिए स्मरण शक्ति का उपभोग करना पड़ता है। जब बालक इतिहास में विभिन्न सभ्यताओं एवं संस्कृतियों संस्थाओं आदि के विषय में ज्ञान प्राप्त करता है तब उसकी कल्पना शक्ति को विकसित होने के बहुत से अवसर प्राप्त होते हैं। इन सभी में प्रमुख लाभ इतिहास के अध्ययन से यह होता है कि बालक निष्पक्षता एवं अपनी योग्यता के अनुसार तथ्यों को संकलित, परीक्षित एवं समन्वित करना सीख जाता है। इतिहास बालक के मानसिक अन्तरिक्ष को विस्तृत करता है, जिससे वह समस्त वसुधा को कुटुम्ब समझने के लिए उद्यत हो जाता है। वह समस्त विश्व को ऐक्य के दृष्टिकोण से देखता है। इस प्रकार इससे उसमें सत्य, देश, प्रेम के साथ-साथ विश्वबन्धुत्व की भावना भी विकसित हो जातीहै।

इतिहास का प्रमुख कार्य यह स्पष्ट करना है कि मानव तथा समाज का विकास किस प्रकार हुआ। उसका यह कार्य नहीं है कि वह राजाओं, रानियों, युद्धों, सन्धियों तथा तिथियों के विषय में ही विवरण प्रस्तुत करे इतिहास अतीत के वर्णन द्वारा वर्तमान का स्पष्टीकरण करता है। वर्तमान की विषद रीति से सहृदयतापूर्वक व्याख्या करना ही इतिहास का महान उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य है। भावनात्मक एवं राष्ट्रीय एकता आधुनिक भारत की एक महत्वपूर्ण माँग है जिसे किसी के द्वारा अस्वीकृत नहीं किया जा सकता। भावात्मक एकता के लिए इतिहास का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है जिसके महत्व को निम्न बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

- **शैक्षिक महत्व**

  शैक्षिक दृष्टि से इतिहास का ज्ञान अत्यंत महत्वपूर्ण है। इतिहास भावी शिक्षा का आधार है। इतिहास मानव जीवन को परिष्कृत,पुष्पित तथा पल्लवित करती है। यह मनुष्य को परिपक्व बुद्धिमान तथा अनुभवी बनाने वाला एक उपयोगी विषय है। अतीत के आधारशिला पर वर्तमान का निर्माण करने तथा भावी मार्गदर्शन के लिए इतिहास मनुष्य को सक्षम बनाता है। हीगेल ने लिखा है कि मनुष्य इतिहास से वह शिक्षा प्राप्त करता है जो अन्य विषयों में अप्राप्त है।

- **व्यावसायिक महत्व**

व्यावसायिक दृष्टि से भी इतिहास का कम महत्व नहीं हैं। इतिहास का ज्ञान प्राप्त करने वाले व्यक्ति पुस्तकालयों संग्रहालयों तथा अन्य संस्थाओं में कार्य करने का सुअवसर प्राप्त कर सकते हैं। पत्रकारिता के लिए तो इतिहास का ज्ञान वरदान हैं। प्रशासकीय सेवा में भी इतिहास का ज्ञान सहायता कराता है क्योंकि इसके ज्ञान के माध्यम से प्रशासक मानवीय एवं सामाजिक समस्याओं को समझने एवं उनके समाधान में समर्थ होता है।

- **नैतिक महत्व**

इतिहास का नैतिक दृष्टि से भी महत्व है क्योंकि यह नैतिकता की शिक्षा प्रदान करता है। यह समाज के नैतिक मूल्यों को भी संरक्षित रखता है। विश्व के तमाम महापुरुषों की जीवनी को यह मानव समुदाय के समक्ष परोसकर उसकी नैतिकता का पाठ हमें पढ़ाता है। इसके अतिरिक्त इतिहास अध्ययन के माध्यम से छात्र विश्व के महान व्यक्तियों के जीवन दर्शन से परिचित होता हैं तथा उनके आदर्शों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करते हैं। इससे छात्रों व पाठक के व्यक्तित्व में नैतिक गुणों का विकास होता है।

- **अनुशासनात्मक महत्व**

इतिहास विषय का अनुशासनात्मक महत्व भी कम नहीं है क्योंकि इतिहास अध्ययन द्वारा छात्रों की मानसिक शक्तियां प्रशिक्षित होती है। अन्य विषयों की तुलना में इतिहास अध्ययन में छात्रों को स्मरण एवं कल्पना के लिए अधिक अवसर प्राप्त होते है। जब छात्र इतिहास अध्ययन में किसी ऐतिहासिक घटना के कारण एवं परिणाम का सूक्ष्म अध्ययन करते हैं तो वे तथ्यों का परीक्षण एवं विवेचन करके साक्ष्यों के आधार पर निष्कर्ष निकालने का प्रयास करते हैं। इतिहास पुरुषों की जीवनी से छात्र अनुशासन, समय की उपयोगिता एवं आचरण आदि की बातों को सिखाता है।

- **सांस्कृतिक महत्व**

सांस्कृतिक दृष्टि से भी इतिहास का व्यापक महत्व है क्योंकि यह मानव मस्तिष्क एवं आचरण को सुसंस्कृत बनाने का प्रमुख एवं प्रभावपूर्ण साधन है। इसके अध्ययन से छात्र अपने देश की अतीत कालीन सभ्यता एवं संस्कृति के आधार पर वर्तमान संस्कृति को समझने में समर्थ होते हैं और उसके क्रमिक विकास का ज्ञान प्राप्त करते हैं। इतिहास द्वारा विद्यमान तथ्यों की अभिव्यक्ति, अपनी रीति रिवाज, अपनी प्रथाओं एवं अपनी परम्पराओं आदि का ज्ञान कराया जाता है। प्राचीन सभ्यता संस्कृति के अनुसार जो हमें आज वर्तमान संस्कृति प्राप्त हुई है, इसका श्रेय इतिहास को ही जाता है।

- **सूचनात्मक महत्व**

इतिहास का सूचनात्मक महत्व भी अधिक है। यह एक तरफ से सूचनाओं का विशाल और अद्भुत भण्डार है। छात्र इसके अध्ययन द्वारा विविध मानवीय समस्याओं के समाधान खोज सकते हैं। इसके वास्तविक अध्ययन से अवबोध के नये आयाम जोड़े जा सकते है। अतीत कालीन अनुभवों के अध्ययन से व्यक्तियों में विद्वेष संकीर्णता दूर करने में सहायता मिलती है।

- **राष्ट्रीय महत्व**

इतिहास राष्ट्रीय महत्व का विषय है क्योंकि छात्र जब अपने देश के ऐतिहासिक दुर्गों, खण्डहरों, भवनों, राज प्रसादों, मीनारों, गुफाओं, स्तूपों, स्तम्भों एवंशिलालेखों आदि के विषय में पढ़कर ऐतिहासिक ज्ञान प्राप्त करता है तो राष्ट्रीय स्तर के महत्व से वह परिचित होता है। आज ताजमहल विश्व के अजूबों में शामिल है। इस जानकारी से छात्रों में राष्ट्रीय महत्व के प्रति जागृति पैदा होती है। इसके साथ ही इतिहास अध्ययन द्वारा देश की गौरवशाली गाथाओं से वह परिचित होता है। एक तरह से इतिहास छात्रों में देशप्रेम की भावना जागृत करने का काम करता है। यह राष्ट्रीय गौरव को प्रदान कर अच्छे नागरिक बनाने का प्रयत्न करता है। इतिहास अध्ययन से छात्र देश के महापुरुषों के शौर्य, त्याग, बलिदान एवं अन्य महत्वपूर्ण कार्यों का अध्ययन कर प्रेरणा प्राप्त करता है।

- **अंतर्राष्ट्रीय महत्व**

इतिहास का अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना की दृष्टि से भी विशेष महत्व है क्योंकि विश्व इतिहास के ज्ञान द्वारा ही छात्रों को विभिन्न देशों की सभ्यता एवं संस्कृति का ज्ञान कराया जा सकता है। इसके साथ ही इतिहास अध्ययन द्वारा विभिन्न राष्ट्रों के संबंधों, प्रभावों एवं उनकी सामाजिक,सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों को समझने की क्षमता उत्पन्न की जा सकती हैं परिणामस्वरुप इससे छात्रों में विश्व बंधुत्व की भावना विकसित होगी जो अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना एवं महत्व के लिए आधार बनेगी।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि विभिन्न क्षेत्रों में इतिहास का अध्ययन विशेष महत्व रखता है। इतिहास के ज्ञान के बिना विश्व की विविध समस्याओं का ज्ञान और उसका समाधान संभव नहीं है। अतः सभी को इतिहास का ज्ञान अवश्य प्राप्त करना चाहिए।

1.3 शिक्षा में इतिहास का स्थान

इतिहास-लेख या इतिहास-शास्त्र (Historiography) से दो चीजों का बोध होता है

(1) इतिहास के विकास एवं क्रिया पद्धति का अध्ययन तथा

(2) किसी विषय के इतिहास सम्बन्धित एकत्रित सामग्री।

इतिहासकार इतिहास शास्त्र का अध्ययन विषयवार करते हैं। भारत का इतिहास, जापानी साम्राज्य का इतिहास आदि। जैसे- इतिहास के मुख्य आधार युगविशेष और घटनास्थल के वे अवशेष हैं जो किसी न किसी रूप में प्राप्त होते हैं। जीवन की बहुमुखी व्यापकता के कारण स्वल्प सामग्री के सहारे विगत युग अथवा समाज का चित्रनिर्माण करना दुःसाध्य है। सामग्री जितनी ही अधिक होती जाती है उसी अनुपात से बीते युग तथा समाज की रूपरेखा प्रस्तुत करना साध्य होता जाता है। पर्याप्त साधनों के होते हुए भी यह नहीं कहा जा सकता कि कल्पनामिश्रित चित्र निश्चित रूप से शुद्ध या सत्य ही होगा। इसलिए उपयुक्त कमी का ध्यान रखकर कुछ विद्वान कहते हैं कि इतिहास की संपूर्णता असाध्य सी है, फिर भी यदि हमारा अनुभव और ज्ञान प्रचुर हो, ऐतिहासिक सामग्री की जाँच पड़ताल को हमारी कला तर्कप्रतिष्ठित हो तथा कल्पना संयत और विकसित हो तो अतीत का हमारा चित्र अधिक मानवीय और प्रामाणिक हो सकता है। सारांश यह है कि इतिहास की रचना में पर्याप्त सामग्री, वैज्ञानिक ढंग से उसकी जाँच, उससे प्राप्त ज्ञान का महत्व समझने के विवेक के साथ ही साथ ऐतिहासिक कल्पना की शक्ति तथा सजीव चित्रण की क्षमता की आवश्यकता है। स्मरण रखना चाहिए कि इतिहास न तो साधारण परिभाषा के अनुसार विज्ञान है और न केवल काल्पनिक दर्शन अथवा साहित्यिक रचना है। इन सबके यथोचित सम्मिश्रण से इतिहास का स्वरूप रचा जाता है।

इतिहास न्यूनाधिक उसी प्रकार का सत्य है जैसा विज्ञान और दर्शनों का होता है। जिस प्रकार विज्ञान और दर्शनों में हेरफेर होते हैं उसी प्रकार इतिहास के चित्रण में भी होते रहते हैं। मनुष्य के बढ़ते हुए ज्ञान और साधनों की सहायता से इतिहास के चित्रों का संस्कार उनकी पुनरावृत्ति और सुसंस्कृत होती रहती है। प्रत्येक युग अपने-अपने प्रश्न उठाता है और इतिहास से उनका समाधान ढूंढता रहता है। इसीलिए प्रत्येक युग समाज अथवा व्यक्ति इतिहास का दर्शन अपने प्रश्नों के दृष्टिबिंदुओं से करता रहता है। यह सब होते हुए भी साधनों का वैज्ञानिक अन्वेषण तथा निरीक्षण, कालक्रम का विचार, परिस्थिति की आवश्यकताओं तथा घटनाओं के प्रवाह की बारीकी से छानबीन और उनसे परिणाम निकालने में सतर्कता और संयम की अनिवार्यता अत्यंत आवश्यक है। उनके बिना ऐतिहासिक कल्पना और कपोलकल्पना में कोई भेद नहीं रहेगा।

इतिहास की रचना में यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि उसमें जो चित्र बनाया जाए वह निश्चित घटनाओं और परिस्थितियों पर दृढ़ता से आधारित हो। मानसिक काल्पनिक अथवा मनमाने स्वरूप को खड़ा कर ऐतिहासिक घटनाओं द्वारा उसके समर्थन का प्रयत्न करना अक्षम्य दोष होने के कारण सर्वथा वर्जित है। यह भी स्मरण रखना आवश्यक है कि इतिहास का निर्माण बौद्धिक रचनात्मक कार्य है अतएव अस्वाभाविक और असंभाव्य को प्रमाणकोटि में स्थान नहीं दिया जा सकता। इसके सिवा इतिहास का ध्येय विशेष एवं यथावत् ज्ञान प्राप्त करना है। किसी विशेष सिद्धांत या मत की प्रतिष्ठा, प्रचार या निराकरण अथवा उसे किसी प्रकार का आंदोलन चलाने का साधन बनाना इतिहास का दुरुपयोग करना है। ऐसा करने से इतिहास का महत्व ही नहीं नष्ट हो जाता, वरन् उपकार के बदले उससे अपकार होने लगता है जिसका परिणाम अंततोगत्वा भयावह होता है।

1.4 इतिहास शिक्षण की समस्याएं

इतिहास शिक्षण की वास्तविक संरचना को समझने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं—

- **इतिहास का डरावना ज्ञान**

एक सामान्य इतिहास शिक्षक आमतौर पर अपने विषय में ज्यादा दिलचस्पी नहीं रखता है और वह इतिहास के अपने ज्ञान के पूरक के लिए बहुत उत्साही नहीं है जो उसने कॉलेज की उम्र में हासिल किया है। उसे न तो पढ़ने में दिलचस्पी है और न ही सैर-सपाटे में। वह स्कूल में खुद को वैज्ञानिक तरीके से प्रशिक्षित करने के लिए इच्छुक नहीं है। आम तौर पर ऐतिहासिक तथ्यों के बारे में उनकी गलत धारणाएं हैं और इससे विनाशकारी स्थिति पैदा होती है। इस तरह के शिक्षक से विद्यार्थियों को विकृत तथ्य प्रस्तुत करने की संभावना होती है और इस प्रकार उनके व्यक्तित्व को विकृत किया जा सकता है।

- **विश्व इतिहास का ज्ञान खो देता है**

आमतौर पर हमारे स्कूलों में इतिहास के शिक्षकों में विश्व इतिहास के ज्ञान की कमी पाई जाती है। ज्ञान की इस कमी के कारण वे ऐतिहासिक तथ्यों को उनके वास्तविक प्रभाव में देखने में विफल होते हैं। दुनिया के किसी भी हिस्से में हर सामाजिक या राजनीतिक आंदोलन का प्रभाव पूरी दुनिया पर पड़ता है, इसलिए किसी के लिए भी अपने देश के इतिहास से काफी हद तक निपटना संभव नहीं है। इस प्रकार विश्व इतिहास का ज्ञान किसी भी सफल इतिहास शिक्षक के लिए जरूरी है, इसके बिना उसका शिक्षण अपूर्ण रहेगा।

- **धार्मिक या सामाजिक पूर्वाग्रह**

अधिकांश शिक्षक ऐसे पूर्वाग्रह से ग्रस्त हैं और इससे पीड़ित कोई भी व्यक्ति इतिहास का सही ज्ञान नहीं दे सकता है। यदि कोई हिंदू शिक्षक कट्टर है और नस्लीय पूर्वाग्रह रखता है तो वह मुसलमानों के इतिहास को सही और निष्पक्ष रूप से नहीं सिखा सकता है। वह निश्चित रूप से शिक्षण में बेईमान होंगे क्योंकि उनके लिए यह समझाना काफी मुश्किल होगा कि मुसलमान कैसे हिंदू शासकों पर विचार करते हैं। अन्य धर्मों के शिक्षक के लिए भी ऐसी ही स्थिति होगी।

- **राष्ट्रीय पूर्वाग्रह**

इतिहास के शिक्षण में राष्ट्रीय पूर्वाग्रह उतना ही हानिकारक है जितना कि धार्मिक या नस्लीय पूर्वाग्रह। "मेरा देश, सही या गलत" एक निंदा का नारा है। देशभक्ति के महान गुण हैं और एक देशभक्ति होनी चाहिए लेकिन देशभक्ति और राष्ट्रीय पूर्वाग्रह के अलग-अलग अर्थ हैं। एक सच्चा देशभक्त अपने देश की कमजोरियों को देखता है और स्वीकार करता है जबकि राष्ट्रीय पूर्वाग्रह रखने वाला व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता। राष्ट्रीय पूर्वाग्रह से पीड़ित इतिहास का एक शिक्षक अपने विद्यार्थियोंको उनके देश की कमजोरियों के बारे में कभी नहीं समझाएगा।

यदि भारत में एक इतिहास के शिक्षक के पास राष्ट्रीय पूर्वाग्रह है, तो वह बच्चों के सामने यह नहीं समझाएगा कि अंग्रेज अपने देश की कमजोरियों के कारण इस देश में अपना शासन करने में सक्षम थे। दूसरी ओर, वह विद्यार्थियोंको बताएगा कि भारतीय शासकों में कोई कमजोरियां नहीं थीं और यह केवल अंग्रेजों की चालाक थी कि वे भारतीयों पर

हावी थे। एक इतिहास शिक्षक को देशभक्त होना चाहिए लेकिन उसे कभी राष्ट्रीय पूर्वाग्रह नहीं होना चाहिए, उसे अपने और अपने लोगों में अंतर्राष्ट्रीय समझ विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।

- **शिक्षण की दोषपूर्ण विधि**

हमारे देश में आम तौर पर इतिहास को मृत राजकुमारों और बीती घटनाओं से निपटने के लिए माना जाता है और इस तरह सेशिक्षा निर्जीव हो जाएगी। हालांकि, इतिहास एक जीवित विषय है क्योंकि यहमानव के नाटक या दुनिया के मंच से संबंधित है जो अभी भी बढ़ रहा है। इस नाटक को बच्चों के सामने कक्षा-कक्ष में विषय केरूप से प्रस्तुत किया जाना चाहिए। इसके लिए एक इतिहास शिक्षक को सक्रिय औरअनुभव से भरा होना चाहिए।

- **सहसंबंध की कमी**

इतिहास पढ़ाने वाले अधिकांश शिक्षक अन्य विषयों के साथ इतिहास को सहसम्बंधितकरने में विफल होते हैं। चूंकि किसी भी विषय को अलगाव में नहीं पढ़ाया जा सकता है, इसलिए इतिहास को कभी भी इस तरह से नहीं पढ़ाया जाना चाहिए। इतिहास के शिक्षक के लिए भूगोल, नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र, शिल्प या किसी अन्य विषय के साथ सहसम्बंधबनाना हमेशा संभवहै।

1.5 चित्रकूट का इतिहास

भारतीय साहित्य और पवित्र ग्रन्थों में प्रख्यात, वनवास काल में साढ़े ग्यारह वर्षों तक भगवान राम, माता सीता तथा श्रीराम के अनुज लक्ष्मण की निवास स्थली रहा चित्रकूट मानव प्रसिद्ध है। एक पर्यटक यहाँ के खूबसूरत झरने, चंचल युवा हिरण और नाचते मोर को देखकर रोमांचित होता है, तो एक तीर्थयात्री पयस्विनी / मन्दाकिनी में डुबकी लगाकर और कामदगिरी की धूल में तल्लीन होकर अभिभूत होता है। प्राचीन काल से चित्रकूट क्षेत्र ब्रह्मांडीय चेतना के लिए प्रेरणा का एक जीवंत केंद्र रहा है। हजारों भिक्षुओं, साधुओं और संतों ने यहाँ उच्च आध्यात्मिक स्थिति प्राप्त की है और अपनी तपस्या, साधना, योग, तपस्या और विभिन्न कठिन आध्यात्मिक प्रयासों के माध्यम से विश्व पर लाभदायक प्रभाव डाला है। प्रकृति ने इस क्षेत्र को बहुत उदारतापूर्वक अपने सभी उपहार प्रदान किये हैं, जो इसे दुनिया भर से तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को आकर्षित करने में सक्षम बनाता है। अत्री, अनसुइया, दत्तात्रेय, महर्षि मार्कंडेय, सारभंग, सुतीक्ष्ण और विभिन्न अन्य ऋषि, संत, भक्त और विचारक सभी ने इस क्षेत्र में अपनी आयु व्यतीत की और जानकारों के अनुसार ऐसे अनेक लोग आज भी यहाँ की विभिन्न गुफाओं और अन्य क्षेत्रों में तपस्यारत हैं। इस प्रकार इस क्षेत्र की एक आध्यात्मिक सुगंध है, जो पूरे वातावरण में व्याप्त है और यहाँ के प्रत्येक दिन को आध्यात्मिक रूप से जीवंत बनाती है।

चित्रकूट सभी तीर्थों का तीर्थ है। हिंदू आस्था के अनुसार, प्रयागराज (आधुनिक नाम इलाहाबाद) को सभी तीर्थों का राजा माना गया है; किन्तु चित्रकूट को उससे भी ऊंचा स्थान प्रदान किया गया है। किंवदंती है किजबतक अन्य तीर्थों की तरह चित्रकूट, प्रयागराज नहीं पहुंचे तब प्रयागराज को चित्रकूट की उच्चतर पदवी के बारे में बताया गया तथा प्रयागराज से अपेक्षा की गयी की वह चित्रकूट जाएँ, इसके विपरीत किचित्रकूट यहाँ आयें। ऐसी भी मान्यता है कि प्रयागराज प्रत्येक वर्ष पयस्विनी नदी में स्नान करके अपने पापों को धोने के लिए आते हैं। यह भी कहा जाता है कि जब प्रभु राम ने अपने पिता का श्राद्ध समारोह किया तो सभी देवी-देवता शुद्धि भोज (परिवार में किसी की मृत्यु के तेरहवें दिन सभी सम्बन्धियों और मित्रों को दिया जाने वाला भोज) में भाग लेने चित्रकूट आए। वे इस स्थान की सुंदरता को देखकर मोहित हो गए थे। भगवान राम की उपस्थिति से इसमें एक आध्यात्मिक आयाम जुड़ गया। इसलिए वे वापस प्रस्थान करने के लिए तैयार नहीं थे। कुलगुरु वशिष्ठ, भगवान राम की इच्छा के अनुसार रहने की उनकी इच्छा को समझते हुए विसर्जन

(प्रस्थान) मंत्र को बोलना भूल गए। इस प्रकार सभी देवी-देवताओं ने इस जगह को अपना स्थायी आवास बना लिया और वहां हमेशा उपस्थित रहते हैं। आज भी यहां तक कि जब एक अकेला पर्यटक भी प्राचीन चट्टानों, गुफाओं, आश्रमों और मंदिरों की विपुल छटा बिखरे हुए इस स्थान में पहुंचता है तो पवित्र और आध्यात्मिक साधना में लगे ऋषियों के साथ वह अनजाने में ही खुद को पवित्र संस्कारों और ज्ञान प्राप्ति के उपदेशों और कृतियों से भरे माहौल में खो जाताहै और एक अलग दुनिया के आनंद को प्राप्त करता है। विश्व के सभी हिस्सों से हजारों तीर्थयात्री और सत्य के साधक इस स्थान में अपने जीवन को सुधारने और उन्नत करने की एक अदम्य इच्छा से प्रेरित होकर आश्रय लेते हैं।

प्राचीन काल से ही चित्रकूट का एक विशिष्ट नाम और पहचान है। इस स्थान का पहला ज्ञात उल्लेख वाल्मीकि रामायण में है जो कि पहले कवि द्वारा रचित सबसे पहला महाकाव्य माना जाता है। एक अलिखित संरचना के रूप में, विकास के इस महाकाव्य को, पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक परंपरा द्वारा सौंप दिया गया था। जैसा कि वाल्मीकि, जो राम के समकालीन (या उनसे पहले) माने जाते हैं, और मान्यता है कि उन्होंने राम के जन्म से पहले ही रामायण का निर्माण किया गया था, से इस स्थान की प्रसिद्धि व पुरातनता को अच्छी तरह से निरूपित किया जा सकता है। महर्षि वाल्मीकि चित्रकूट को एक महान पवित्र स्थान के रूप में चित्रित करते हैं, जो महान ऋषियों द्वारा बसाया गया है और जहाँ बंदर, भालू और अन्य विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षी और वनस्पतियां पाई जाती हैं। ऋषि भारद्वाज और वाल्मीकि दोनों इस क्षेत्र के बारे में प्रशंसित शब्दों में बोलते हैं और श्रीराम को अपने वनवास की अवधि में इसे अपना निवास बनाने की सलाह देते हैं, क्योंकि यह स्थान किसी व्यक्ति की सभी इच्छाओं पूर्ण करने और उसे मानसिक शांति देने में सक्षम था। जिससे वह अपने जीवन में सर्वोच्च लक्ष्यों को प्राप्त कर सके। भगवान राम स्वयं इस जगह के मोहक प्रभाव को मानते हैं। रामोपाख्यान' और महाभारत के विभिन्न स्थानों पर तीर्थों के विवरण में चित्रकूट एक को एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है। यह अध्यात्म रामायण और 'बृहत् रामायण' चित्रकूट की झकझोर कर देने वाली आध्यात्मिक और प्राकृतिक सुंदरता को प्रमाणित करते हैं। लेखकों के अनुसार बाद में चित्रकूट और इसके प्रमुख स्थानों का वर्णन सोलह खंडों वर्णित है।

राम से संबंधित पूरे भारतीय साहित्य में इस स्थान को एक अद्वितीय गौरव प्रदान किया गया है। फादर कामिल बुलके ने भी 'चित्रकूट महात्म्य' का उल्लेख किया है जो मैकेंज़ी के संग्रह में पाया गया है। विभिन्न संस्कृत और हिंदी कवियों ने चित्रकूट का वर्णन किया है। महाकवि कालिदास ने अपने महाकाव्य 'रघुवंश' में इस स्थान का सुंदर वर्णन किया है। वह यहाँ के आकर्षण से इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने मेघदूत में अपने यक्ष के निर्वासन का स्थान चित्रकूट (जिसे वह प्रभु राम के साथ इसके सम्मानित संबंधों की वजह से रामगिरी कहते हैं) को बनाया। हिंदी के संत कवि तुलसीदास जी ने अपने सभी प्रमुख कार्यों- रामचरित मानस, दोहावली और विनय पत्रिका में इस स्थान का अत्यंत आदरपूर्वक उल्लेख किया है। उनके अंतिम ग्रन्थ में कई छंद हैं, जो तुलसीदास और चित्रकूट के बीच एक गहन व्यक्तिगत बंधन प्रदर्शित करते हैं। अपने जीवन का काफी हिस्सा उन्होंने यहाँ भगवन राम की पूजा और उनके दर्शन की लालसा में व्यतीत किया। यहाँ उनकी उपलब्धियों का एक उल्लेखनीय पल माना जाता है जब हनुमान जी की मध्यस्थता में उन्हें, उनके आराध्य प्रभु राम के दर्शन प्राप्त हुए। उनके मित्र प्रसिद्ध हिंदी कवि रहीम (अब्दुर रहीम खान ए खाना, सैनिक, राजनीतिज्ञ, संत, विद्वान, कवि, जो अकबर के नव रत्नों में से एक थे) ने भी यहां कुछ समय बिताया था जब वह अकबर के पुत्र बादशाहजहांगीर के पक्ष में थे। प्रणामी संप्रदाय के बीटक साहित्य के अनुसार संत कवि महामति प्राणनाथ ने यहां अपनी दो पुस्तकों छोटाकयामत नामा और बड़ा कयामतनामा को लिखा था। वह वास्तविक स्थान, जहाँ प्राणनाथ रहे और जहाँ उन्होंने कुरान की व्याख्या और श्रीमद्भागवतगीता, महापुराण इसकी समानताओं से सम्बंधित कार्य किये, का सही पता नहीं लगाया जा सका है।

उत्तर प्रदेश में 6 मई 1997 को बाँदा जनपद से अलग कर छत्रपति शाहू जी महाराज नगर के नाम से नए जिले का सृजन किया गया जिसमे कर्वी तथा मऊ तहसीलें शामिल थीं। कुछ समय बाद, 4 सितंबर 1998 को जिले का नाम बदल कर चित्रकूट कर दिया गया। यह उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश राज्यों में फैली उत्तरी विंध्य श्रृंखला में स्थित है। यहाँ

का बड़ा हिस्सा उत्तर प्रदेश के चित्रकूट और मध्य प्रदेश के सतना जनपद में शामिल है। यहाँ प्रयुक्त "चित्रकूट" शब्द, इस क्षेत्र के विभिन्न स्थानों और स्थलों की समृद्ध और विविध सांस्कृतिक धार्मिक, ऐतिहासिक और पुरातात्विक विरासतों का प्रतीक है। प्रत्येक अमावस्या में यहाँ विभिन्न क्षेत्रों से लाखों श्रद्धालु एकत्र होते हैं। सोमवती अमावस्या, दीपावली, शरद पूर्णिमा, मकर संक्रांति और राम नवमी यहाँ ऐसे समारोहों के विशेष अवसर हैं।

1.6 चित्रकूट जनपद की ऐतिहासिक विरासत

1.6.1 कामदगिरी

प्रधान धार्मिक महत्व की एक वन्य पहाड़ी, जिसे मूल चित्रकूट माना जाता है। यहीं भरत मिलाप मंदिर स्थित है। तीर्थयात्री यहाँ भगवान कामदनाथ व भगवान श्रीराम का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए कामदगिरी पहाड़ी की परिक्रमा करते हैं।

चित्र संख्या 1.6,1 कामदगिरी

1.6.2 राम घाट

मन्दाकिनी नदी के तट पर स्थित यह घाट एक शांत तीर्थ स्थल है। इस नदी के किनारे इस स्थान को भगवान राम, देवी सीता और भगवान लक्ष्मण के साथ संत गोस्वामी तुलसीदास का साक्षात्कार स्थल माना जाता है। यह चित्रकूट के प्रमुख घाटों में से एक है जहाँ अध्यात्मिक व धार्मिक गतिविधियों के कारण भीड़ बनी रहती है। प्रातः काल से यहाँ दर्शनार्थ जाया जा सकता है। नदी के किनारे रंग बिरंगी नौकाओं के सुंदर दृश्यों के साथ यहाँ सायंकाल होने वाली आरती के दर्शन का लाभ अवश्य प्राप्त करना चाहिए।

चित्र संख्या 1.6.2 राम घाट

1.6.3 भरत कूप

भरत कूप, भरतकूप गांव के निकट एक विशाल कुआं है जो चित्रकूट के पश्चिम में लगभग किमी के दूर स्थित है। यह माना जाता है कि भगवान राम के भाई भरत ने अयोध्या के राजा के रूप में भगवान राम को सम्मानित करने के लिए सभी पवित्र तीर्थों से जल एकत्र किया था। भरत, भगवान राम को अपने राज्य में लौटने और राजा के रूप में अपनी जगह लेने के लिए मनाने में असफल रहे। तब भरत ने महर्षि अत्री के निर्देशों के अनुसार वह पवित्र जल इस कुएं में डाल दिया। ऐसीमान्यता है कियहाँ के जल से स्नान करने का अर्थ सभी तीर्थों में स्नान करने के समान है। यहाँ भगवान राम के परिवार को समर्पित एक मंदिर भी दर्शनीय हैं।

चित्र संख्या 1.6.3 भरत कूप

1.6.4 भरत मिलाप मंदिर

चित्र संख्या 1.6.4 भरत मिलाप मंदिर

ऐसा माना जाता है कि भरत मिलाप मंदिर उस जगह को चिह्नित करता है जहां भरत अयोध्या के सिंहासन पर लौटने के लिए भगवान श्री राम को मनाने के लिए उनके वनवास के दौरान उनसे मिले थे ऐसी कथा प्रचलित है किचारों भाइयों का मिलन इतना मार्मिक था कि चित्रकूट की चट्टानें भी पिघल गयीं थीं। भगवान राम और उनके भाइयों के इन चट्टानों पर छपे पैरों के निशान अभी भी देखे जा सकते हैं।

1.6.5 हनुमान धारा

चित्र संख्या 1.6.5 हनुमान धारा

यह एक विशाल चट्टान के ऊपर स्थित हनुमान मंदिर है। मंदिर तक पहुँचने के लिए कई खड़ी सीढ़ियों की चढ़ाई चढ़नी पड़ती है। इन सीढ़ियों पर चढ़ते समय चित्रकूट के शानदार दृश्य देखे जा सकते हैं। पूरे रास्ते में हनुमान जी की प्रार्थना योग्य अनेक छोटी मूर्तियां स्थित हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार हनुमान जी के लंका में आग लगा कर वापस लौटने पर इस मंदिर के अंदर भगवान राम, भगवान हनुमान के साथ रहे। यहां भगवान राम ने उनके गुस्से को शांत करने में उनकी मदद की थी। इस स्थान के आगे भगवान राम, माता सीता और लक्ष्मण जी को समर्पित कुछ और मंदिर है।

1.6.6 गुप्त गोदावरी

चित्र संख्या 1.6.6 गुप्त गोदावरी

गुप्त गोदावरी चित्रकूट से 18 किलोमीटर दूर स्थित एकतीर्थ स्थल है। पौराणिक कथा के अनुसार भगवान भगवान राम और लक्ष्मण अपने वनवास अवधि के दौरान कुछ समय के लिए यहां रुके थे। गुप्त गोदावरी एक गुफा के अंदर स्थित मंदिर है, जहाँ घुटने तक का जल स्तर रहता है। बड़ी गुफा में पत्थर के दो सिंहासन हैं जो राम और लक्ष्मण से संबंधित हैं। इन गुफाओं के बाहर स्मृति चिन्ह खरीदने के लिए दुकाने हैं।

1.6.7 सती अनुसुइया आश्रम

चित्र संख्या 1.6.7 सती अनुसुइया आश्रम

यह आश्रम ऋषि अत्री के विश्राम स्थान के रूप में जाना जाता है। महर्षिअत्री ने अपनी भक्त पत्नी अनुसुइया के साथ यहां ध्यान किया। कथा के अनुसार वनवास के समय भगवान राम और माता सीता इस आश्रम में सती अनुसुइया के पास गए थे। सती अनुसुइया ने यहाँ माता सीता को शिक्षाएं दी थी। यहाँ एक रथ पर सवार भगवान कृष्ण

की बड़ी सी मूर्ति है, जिसमे अर्जुन पीछे बैठे हैं, महाभारत के दृश्य को दर्शाती है। अंदर पवित्र दर्शन के लिए अनेक मूर्तियां एवं समाधियां स्थापित हैं।

1.6.8 राम दर्शन

राम दर्शन मंदिर, एक अनोखा मंदिर है, जहां पूजा और प्रसाद निषिद्ध हैं। यह मंदिर लोगों को मूल्यवान नैतिक पाठ प्रदान करके अभिन्न मानवता में प्रवेश करने में मदद करता है। यह मंदिर सांस्कृतिक और मानवीय पहलुओं का एकीकरण है, जो कभी भी इस मंदिर में जाने पर मन में एक निशान छोड़ता है। मंदिर भगवान राम के जीवन और उनके अंतर-व्यक्तिगत संबंधों की जानकारी देता है। परिसर में प्रवेश करने के लिए प्रवेश टिकट की व्यवस्था है।

चित्र संख्या 1.6.8 राम दर्शन

1.6.9 स्फटिक शिला

स्फटिक शिला एक छोटी सी चट्टान है, जो रामघाट से ऊपर की ओर मंदाकिनी नदी के किनारे स्थित है। यह ऐसा स्थान माना जाता है जहां माता सीता ने श्रृंगार किया था। इसके अलावा किंवदंतीहै कि यह वही जगह है जहां भगवान इंद्र के बेटे जयंतने एक कौवा के रूप में माता सीता के पैर में चोंच मारी थी। ऐसा कहा जाता है कि इस चट्टान में अभी भी राम के पैर की छाप है।

चित्र संख्या 1.6.9 स्फटिक शिला

1.6.10 मोरध्वज आश्रम

भारत देश के उत्तर प्रदेश एवम् मध्य प्रदेश की सीमा रेखा पर अवस्थित चित्रकूट नामक एक पवित्र, मनोरम स्थल है जो अपने धार्मिक एवम् ऐतिहासिक रूप से विश्व प्रसिद्ध है। माना जाता है, कि इसी स्थान पर भगवान श्री रामचन्द्र जी त्रेतायुग में वनवासकाल के दौरान 11 वर्ष रहकर व्यतीत किया।1 मध्य प्रदेश के सतना जिले के चित्रकूट नगर के पालदेव गाँव के पास विंध्याचल पहाड़ी की श्रेणी में स्थित मोरध्वज आश्रम है जो कि एक धार्मिक स्थल है और यहाँ आस–पास अनेक धार्मिक स्थल हैं, जैसे– गुप्त गोदावरी, सतीअनुसुइया, हनुमान धारा, रामघाट, चित्रकूट परिक्रमा, कामतानाथ मंदिर, स्फटिक शिला आदि प्रमुख दार्शनिक स्थल हैं। इसी धार्मिक नगरी चित्रकूट से पश्चिम दिशा में सतना गुप्त गोदावरी मार्ग पर पाल देवगाँव से दक्षिण दिशा में मोरध्वज आश्रम स्थित है। यह आश्रम पहाड़ों के बीच बना है जो चारों ओर जंगल से घिरा हुआ है। यहां अनादिकाल से साधु- संत अपना आश्रम बना कर रहते हैं तथा इस स्थल की देख- रेख एवम् अपनी साधना तपस्या में लीन रहते हैं।

चित्र संख्या 1.6.10 मोरध्वज आश्रम

1.9 समस्या का प्रादुर्भाव

अनुसंधान समस्या की उत्पत्ति प्रायः इस अनुभूति के द्वारा होती है कि किसी क्षेत्र विशेष में किसी कार्य के सुचारू ढंग से संचालन में कोई बाधा है एवं उस बाधा को दूर किया जा सकता है।

वस्तुतः आवश्यकता, जिज्ञासा व असन्तोष को आविष्कार की पृष्ठभूमि तैयार करने में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। किसी भी राष्ट्र का इतिहास उसके वर्तमान और भविष्य की नींव होता है। इतिहास जितना गौरवमयी होगा वैश्विक स्तर पर उसका स्थान उतना ही ऊंचा माना जाएगा। देश का यूं तो बीता हुआ कल कभी वापस नहीं आता लेकिन उस काल में बनी इमारतें और लिखे गए साहित्य उन्हें हमेशा सजीव बनाए रखते हैं। यह भी सत्य है कि वक्त रहते यदि हम अपनी भूल को पहचान नहीं पाए तो अपनी विरासत को धीरे-धीरे खो देंगे आज आवश्यकता यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक हो साथ ही आवश्यकता इस बात की भी है कि पुरानी हो चुकी भौगोलिक विरासतों को पर्यटक स्थल के रूप में विकसित किया जाए तथा भविष्य के लिए इन्हें संरक्षित किया जाए। यह तभी संभव होगा जब देश का प्रत्येक नागरिक अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जगरूप होगा तथा उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी समझेगा।

अतः उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर ही प्रस्तुत समस्या का चयन किया गया है। इस समस्या के अध्ययन से केवल विद्यार्थियों का ही नहीं अपितु अभिभावक, शिक्षक, समाज तथा राष्ट्र को भी लाभ होगा।

1.8 समस्या कथन

प्रस्तुत अध्ययन का समस्या कथन इस प्रकार है;

मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन।

1.9 अध्ययन का औचित्य

शोधकर्ता को समस्या का चयन करने से पूर्व उसके औचित्य एवं उपयोगिता के सम्बन्ध में विचार कर लेना चाहिये। शोध वस्तुतः ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में व्यवस्थित संज्ञान है। शोध में गहन निरीक्षण का प्रत्यय होता है। इसमें किसी सीमित क्षेत्र की किसी समस्या का सर्वांगीण विश्लेषण होता है। उसकी निरीक्षण प्रक्रिया में वैज्ञानिक निरीक्षण ही क्रमबद्ध सोद्देश्य सुनियोजित होते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन किया गया है। हमारी ऐतिहासिक विरासतें हमें अतीत के बारे में बहुत कुछ सिखाती और बतलाती है। साथ ही इस ऐतिहासिक विरासत को देखने के लिए दूर-दूर से पर्यटक यहाँ आते हैं। वर्तमान समाज एवं आने वाली पीढ़ियों को ऐतिहासिक स्थलों को देखने की जिज्ञासा होती है। दर्शनीयता, कलात्मकता दृश्यों के प्रति आकर्षण व्यक्ति को बार-बार उस स्थल पर आने की प्रेरणा प्रदान करता है। उन्हें दुर्गम स्थलों गुफाओं, प्राकृतिक दृश्यों को देखने की जिज्ञासा रहती है साथ ही विभिन्न सामाजिक संगठनों, वर्गों, समुदायों के लोग जब किसी स्थान विशेष पर आते हैं तो स्थानीय जनता का उनसे संपर्क होता है। वे उन्हें आवश्यकतानुसार आश्रय, भोजन आदि संसाधनों को उपलब्ध कराते हैं। उनकी हर प्रकार से व्यवस्था करते हैं। इस प्रकार से उनमें एक दूसरे को समझने व परखने के साथ-साथ उत्तरदायित्व पूर्ण भावना की अनुभूति होती है। किन्तु आज हमारी ऐतिहासिक विरासतों को पर्याप्त संरक्षण एवं लोगों को सही जानकारी न होने की वजह से इनका अस्तित्व समाप्त हो रहा है। इसके आस-पास साफ सफाई न होने से लोगों का रुझान इस ओर कम होता जा रहा है। आस-पास बस्ती होने की वजह से इसके अस्तित्व को खतरा हो रहा है। जब तक लोग अपने ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरुक नहीं होंगे तब तक इन विरासतों को संरक्षण दे पाना मुश्किल होगा। अतः प्रस्तुत अध्ययन इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर किया गया है।

1.10 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

परिभाषीकरण से तात्पर्य अध्ययन की समस्या को चिंतन द्वारा सम्पूर्ण समस्या क्षेत्र से बाहर निकल कर स्पष्ट करना है। प्रस्तुत अध्ययन के शीर्षक में प्रयुक्त कठिन शब्दों की व्याख्या निम्नानुसार है—

1.10.1 मोरध्वज आश्रम: मोरध्वज आश्रम सतना जनपद में 25°05'49" अक्षांश और 80°47'22" देशांतर पर स्थित है।

1.10.2 चित्रकूट: यह शहर बुंदेलखंड क्षेत्र में स्थित है। इस शहर का नाम यहां पर स्थित अनेको मन्दिरों एवं मूर्तियों के नाम पर है। चित्रकूट भगवान कामतानाथ की तपोभूमि है। यह शहर मन्दाकिनी नदी के तट पर स्थित है। चित्रकूट पूर्व में बांदा जिले के अन्तर्गत आने वाला एक ऐतिहासिक स्थान था जो बाद में बांदा जिले से अलग होकर नया जिला बना। यह शहर जिले का मुख्यालय भी है। चित्रकूट के चारो तरफ अनेक पर्यटन एवं धार्मिक स्थल हैं। यहाँ से करीब 60 किमी की दूरी पर बांदा तथा कालिंजर की दूरी भी लगभग 61 किमी है। चित्रकूट मन्दाकिनी नदी के तट पर बसे होने व यहां पर स्थित मन्दिरों के लिए प्रसिद्ध है, जिनका सैकडो वर्ष पुराना इतिहास रहा है। यहाँ विभिन्न ऐतिहासिक हिन्दू मंदिर हैं। यहाँ की मन्दाकिनी नदी जिले की एक प्रमुख नदी है। यहाँ के प्रमुख ऐतिहासिक मंदिरों में कोठी तालाब का शिव मंदिर, गणेश बाग का शिव गणेश मंदिर, चित्रकूट का कामतानाथ मन्दिर व रामघाट का मतगयेन्द्रनाथ मन्दिर है। यहां पर अनेक ऐतिहासिक स्थल जैसे कर्वी का राजा महल, तरौहा का किला, कोठी तालाब व गणेश बाग आदि प्रमुख हैं। जो कि वर्तमान में पुरातत्व विभाग के अधिकार में है। चित्रकूट बुन्देलखण्ड क्षेत्र का प्रमुख शहर है। चित्रकूट मुख्यतः प्रकृति की गोद में बसा एक प्राकृतिक स्थान है जहां पर अनेकों तरह के पेड़ पौधे पाए जाते हैं जिनका औषधीय रूप में बहुत महत्व है। यहां पर देश-विदेश से लोग घूमने आते हैं और यहां के मंदिरों एवं प्रकृति की छटा का आनंद लेते हैं। यहां से 35 किलोमीटर की दूरी पर यमुना नदी के तट पर स्थित राजापुर नामक स्थान पर महाकवि तुलसीदास जी का जन्म हुआ था जिन्होंने चित्रकूट में मां मंदाकिनी के तट पर रामचरित मानस नामक महाकाव्य लिखा था। चित्रकूट जिला भगवान राम की स्मृतियों से जुड़ा धार्मिक जिला है। यह अनेक महापुरुषों की जन्म स्थली एवं कर्म भूमि रही है। चित्रकूट एक ऐतिहासिक नगर है, जिसका वर्णन प्राचीन ग्रंथों में भी मिलता है।

क्षेत्रफल: चित्रकूट जनपद का क्षेत्रफल 3415 वर्ग किलोमीटर है। चित्रकूट मुख्यालय से 1 किलोमीटर बांदा रोड में राजा का महल और 3.5 किलोमीटर देवांगना रोड में गणेश बाग, तरौंहा में राजा का किला व ट्रैफिक चौराहा में कोठी तालाब आदि ऐतिहासिक स्थल है।

सीमाएँ: चित्रकूट जनपद के उत्तर में कौशाम्बी, फतेहपुर, दक्षिण में रीवा, सतना (म.प्र.) स्थित है। पूरब में जिला प्रयागराज व पश्चिम में बाँदा जिला इसकी राजनैतिक सीमा निर्धारित करते हैं।

विस्तार: विस्तार की दृष्टि से चित्रकूट जनपद उत्तर से दक्षिण 95 किलोमीटर चौड़ा है। यह पूरब में बरगढ, मुर्का, पश्चिम में रौली, भरतकूप, उत्तर में चिल्लीमल, यमुना नदी तथा दक्षिण में रानी कल्यानगढ़ तक फैला है।

प्राकृतिक रचना: चित्रकूट को प्राकृतिक बनावट के अनुसार दो भागों में बाँट सकते हैं।

1. दक्षिण का पहाड़ी भाग।

2. उत्तर पूर्व का समतल मैदान।

1. चित्रकूट का दक्षिणी भूभाग पूरी तरह से पहाड़ी एवं दुर्गम है। यहां पर विभिन्न तरह के पेढ़, पौधों एवं वनस्पतियां पाई जाती हैं जो औषधीय महत्व के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इस भाग में अधिकतर मानिकपुर तहसील का हिस्सा आता है।

2. उत्तर पूर्व का समतल मैदान इस भाग में राजापुर, कर्वी तहसीले आती हैं। यहाँ का अधिकतर भाग समतल है। केवल छोटी नदियों व नालों के किनारे ही ऊंचा नीचा है। समतल होने के कारण नहरों से सिंचाई होती है। जिले में मुख्य रूप से पांच प्रकार की मिट्टी होती है, जो इस प्रकार हैं:

I. काबर मिट्टी
II. बलुई मिट्टी
III. राकड़ मिट्टी
IV. पडुआ मिट्टी

वनस्पतियां: जनपद में पर्णपाती वन, झाड़-झांखड़, कटीली झाड़ियां, घास प्रमुख रूप से पायी जाती हैं।

पर्वत: चित्रकूट जिले में प्रमुख रूप से विंध्याचल पर्वत माला के कई पर्वत हैं, मुख्य पर्वत इस प्रकार हैं-

मड़फा पहाड़ : यह पर्वत कर्वी तहसील में स्थित है।

चित्रकूट पर्वत माला: कामदगिरि, हनुमान धारा, जानकी कुंड, लक्ष्मण पहाड़ी, देवांगना और मोरध्वज प्रसिद्ध धार्मिक पर्वत हैं।

वाल्मीकि पहाड़: यह पर्वत कर्वी तहसील में प्रयागराज और बांदा राष्ट्रीय राजमार्ग मार्ग पर स्थित है

नदियाँ: चित्रकूट जिले की महत्वपूर्ण नदियाँ हैं:

- यमुना नदी
- मंदाकिनी (पयस्विनी) नदी
- बाघिन नदी
- ओहन/बाल्मीकि नदी
- बरदहा नदी

ये प्रमुख नदियाँ हैं।

प्रस्तुत लघु-शोध में चित्रकूट से तात्पर्य 1997 में बाँदा जनपद से अलग करके बनाए गए उत्तर प्रदेश के 'चित्रकूट' जनपद से है। (मानचित्र परिशिष्ट- I)

1.10.3 ऐतिहासिक विरासत- देश के अंदर हमारे चारों तरफ मौजूद वे सभी वस्तुएं जो हमारे पूर्वजों के द्वारा प्राप्त हुई हैं विरासत कहलाती । ऐसे खास स्थल (स्मारक, भवन, मंदिर, पूजा स्थल, आश्रम, तालाब इत्यादि) जिनका संबंध इतिहास से होता है ऐतिहासिक कहलाते हैं।

कार्यात्मक परिभाषा– प्रस्तुत लघु शोध में ऐतिहासिक विरासत से तात्पर्य मोरध्वज आश्रम से है।

1.10.4 महाविद्यालयीन विद्यार्थी; महाविद्यालयीन विद्यार्थियों से तात्पर्य कक्षा 12 उत्तीर्ण करने के बाद उच्च शिक्षा हेतु देश के विभिन्न महाविद्यालय में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों से है।

कार्यात्मक परिभाषा– प्रस्तुत लघु शोध में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों से तात्पर्य चित्रकूट नगर में अवस्थित जिला प्रशिक्षण संस्थान एवं बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी से संबद्ध विभिन्न महाविद्यालय में अध्यनरत संस्थागत विद्यार्थियों से है।

1.10.5 जागरूकता: जागरूकता यानी सजग जीवन- चैतन्य जीवन अर्थात चिंतन पर आधारित जीवन, मंथन से निकला जीवन जागरूकता यानी बाहरी संसार भीतरी संसार की संपूर्ण जानकारी, उचित-अनुचित की जानकारी। वेबस्टर डिक्शनरीज के अनुसार- "जागरूकता का अर्थ देखना, समझना, विचारना या ज्ञान को प्राप्त करना है।"।

प्रस्तुत लघु शोध में जागरूकता से तात्पर्य उच्च स्तर के विद्यार्थियों को मोरध्वज आश्रम की जानकारी से है।

1.10.6 अध्ययन: किसी विषय के सभी अंगों, गुणों एवं तत्वों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसे समझने या पढ़ने की क्रिया अध्ययन कहलाती है।

1.11 अध्ययन के उद्देश्य

2. मोरध्वज आश्रम का अध्ययन करना।
3. मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण करना।
4. मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता का उनके लिंग एवं विद्यालय प्रकारानुसार अध्ययन करना-
   I. मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
   II. मोरध्वज आश्रम के महाविद्यालय के राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी महाविद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
   III. मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना
   IV. मोरध्वज आश्रम के प्रति निजी महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
   V. मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी महाविद्यालय के छात्रों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
   VI. मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी महाविद्यालय की छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. मोरध्वज आश्रम के प्रति जागरूकता संवर्धन के सम्बन्ध में सुझाव प्रस्तुत करना।
6. मोरध्वज आश्रम का ई- ब्रोशर (E-brochure) तैयार करना।

1.12 अध्ययन के चर

शोध अध्ययन के संदर्भ में निम्नलिखित चरों को प्रमुख रूप से लिया गया है।

मापदंड चर:

- मोरध्वज आश्रम के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता

वर्गीकरण चर:

- लिंग: छात्र-छात्राएं

- विद्यालय प्रकार: राजकीय/सहायता एवं निजी विद्यालय

1.13 परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत लघु शोध की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ हैं —

I. मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी महाविद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

II. मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

III. मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

IV. मोरध्वज आश्रम के प्रति निजी महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

V. मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी महाविद्यालय के छात्रों की जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

VI. मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी महाविद्यालय के छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

1.14 अध्ययन का परिसीमांकन

किसी भी अनुसंधान कार्य में एक महत्वपूर्ण सोपान समस्याओं को सीमांकित करना है। कोई भी शोधकर्ता शोध कार्य के लिए किसी विशेष समस्या ग्रस्त क्षेत्र का चुनाव करती है तथा विस्तृत अध्ययन के स्थान में गहन अध्ययन को वरीयता देता है। समस्या का स्वरुप साधारणत: अधिक व्यापक होता है। समस्या का व्यावहारिक रूप में अध्ययन करने के लिए सीमांकन करना आवश्यक होता है। सीमांकन अध्ययन की चाहरदीवारी होता है। शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित सीमांकन किया है:

प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जनपद के अंतर्गत कर्वी नगर तक सीमित है।

- प्रस्तुत अध्ययन कर्वी नगर के महाविद्यालय के विद्यार्थियों तक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन चयनित विद्यार्थियों के लिंग एवं विद्यालय प्रकारानुसार तुलनात्मक अध्ययन तक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन स्मार्टफोन प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों के अध्ययन तक सीमित है।

1.15 अध्ययन का महत्त्व एवं सार्थकता

भारत धार्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक रूप से समृद्ध देश है एवं हमारी कला-संस्कृति की आधरशिला हमारे विरासत स्थल हैं। इन स्थलों के धार्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व के साथ-साथ इनका व्यापक आर्थिक महत्त्व भी है। हमारी एक बहुत बड़ी समस्या ऐतिहासिक विरासतों को सुरक्षित रखने की भी है। पूरे देश में ऐसी अनगिनत प्राचीन और ऐतिहासिक, धार्मिक स्थल है जिनकी देखभाल ठीक से नहीं हो रही हैं। इनमें से कुछ इतनी बुरी तरह उपेक्षित है कि अगर उनका ध्यान ना दिया जाए तो वह विलुप्त हो जाएँगी। सरकारी विभाग अपनी सीमा और साधनों की कमी के कारण केवल उन्हीं विरासतों की देखभाल करते हैं जो उनकी सूची में शामिल हैं पर यह काफी नहीं है। देश की सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण की ज़िम्मेदारी केवल सरकार की ही नहीं है। वरन यह लोगों का मौलिक कर्तव्य भी है। किन्तु यह तभी सम्भव होगा जब लोग अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक होगे अतः इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत लघु शोध कार्य किया जा रहा है।

अध्याय द्वितीय
सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

2.1 प्रस्तावना

मानव ज्ञान के तीन पक्ष होते हैं—ज्ञान को एकत्र करना, एक-दूसरे तक पहुँचाना और ज्ञान में वृद्धि करना। किसी भी विषय के विकास में विशेष स्थान की प्राप्ति के लिए शोधकर्ता को पूर्व सिद्धांतों से भलीभांति अवगत होना चाहिए। सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा शोधकर्ता यह निश्चित कर सकता है कि उसके द्वारा प्रस्तावित शोध से सम्बन्धित विषयों पर विचारणीय कार्य पहले हो चुका है अथवा नहीं।

प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसन्धान में चाहे वह भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में हो यह सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में, साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य एवं प्रारम्भिक कथन है। सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान-कोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रति-लेखों, विज्ञप्तियों, प्रकाशित-अप्रकाशित शोध-प्रबन्धों आदि से है; जिनके अध्ययन से अनुसन्धानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा निर्मित करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। एक अनुसन्धान दूसरे अनुसन्धान के लिए सहायक सिद्ध होता है। इससे एक तो कार्य की पुनरावृत्ति नहीं होती, दूसरा पूर्व में जिन तथ्यों पर प्रकाश नहीं डाला गया उन पर प्रकाश डालकर शोधग्रन्थ को महत्वपूर्ण बनाया जा सकता है।

जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार— "मान्यता प्राप्त अधिकारियों और पिछले शोध के लेखन का सारांश इस बात का प्रमाण प्रदान करता है कि शोधकर्ता पहले से ज्ञात, अज्ञात और अनुपयोगी से परिचित है।"

"A summary of the writings of recognized authorities and of previous research provides evidence that the researcher is familiar with what is already known and what is still unknown and untested."

— **John W. Best.**

2.1.1 सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के उद्देश्य

उपरोक्त परिभाषा से सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य प्राप्त होते हैं—

- साहित्य के पुनरावलोकन से शोधकर्ता को विषय की गहराई तक पहुँचने में सफलता मिलती है।
- शोधकर्ता यह जान जाता है कि सम्बन्धित क्षेत्र में अभी तक कितना कार्य हो चुका है तथा कितना करना शेष है।
- शोधकर्ता जागरूक हो जाता है तथा समस्या के सभी पक्षों पर सोच-विचार करता है।
- शोध में प्रयुक्त की जाने वाली विधियाँ, न्यादर्श, परीक्षण तथा वर्गीकरण करने हेतु मार्गदर्शन मिलता है।
- यह परिणामों के विश्लेषण में सहायता करता है तथा उपयोग, निष्कर्षों एवं तुलनात्मक तथ्यों को निर्धारित करता है अर्थात सम्बन्धित अध्ययनों से निकाले गए निष्कर्षों की तुलना की जा सकती है।
- समस्या के परिभाषीकरण, अवधारणाएँ, सीमांकन तथा परिकल्पना के निर्माण में सहायता करता है।

इस प्रकार पूर्व शोधों का पुनरावलोकन वर्तमान में किए जाने वाले शोध हेतु प्रकाश स्तम्भ का कार्य करता है। सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन शोधार्थी को ज्ञान के उस शिखर तक ले जाता है, जहाँ वह अपने क्षेत्र की नवीन समस्याओं से परिचित होता है। वास्तव में सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना वह उचित दिशा में एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा सकता। जब तक

उसे यह ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है? किस विधि से कार्य हुआ है? तथा उसके निष्कर्ष क्या रहे हैं? वह अपने शोध कार्य को आगे नहीं ले जा सकता। अतः सम्बन्धित साहित्य अनुसन्धान के सभी स्तर पर सहायता प्रदान करता है।

2.1.2 सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण की आवश्यकता

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण की आवश्यकता को निम्न बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है—

- प्रत्येक अनुसन्धानकर्ता के लिये यह आवश्यक है कि वह दूसरों द्वारा किये गये शोधों के आधार पर अपनी समस्या से सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं से भली-भाँति अवगत हो। अतः इस दृष्टि से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण आवश्यक है।
- शोधकर्ता सम्बन्धित साहित्य से अपनी रूचि के अनुरूप शोधकार्य का क्षेत्र चुनता है तथा इस शोध का गुणात्मक तथा मात्रात्मक विश्लेषण शोधकर्ता को एक दिशा प्रदान करता है।
- अध्ययनकर्ता साहित्य से शोध की समस्या का चयन करता है तथा साहित्य के पुनर्निरीक्षण के आधार पर अपनी परिकल्पनाएँ बनाता है तथा अनुसन्धान के परिणामों और निष्कर्षों पर वाद-विवाद किया जा सकता है।
- यह समस्या समाधान हेतु अनुसन्धान की समुचित विधि का सुझाव देता है।
- तुलनात्मक आँकड़ों को प्राप्त करने एवं विश्लेषण करने में सहायक होता है।
- सम्बन्धित साहित्य समस्या के सीमांकन में सहायक होता है।
- सम्बन्धित साहित्य का गम्भीर अध्ययन अनुसन्धानकर्ता के ज्ञानकोष की वृद्धि करता है।

2.1.3 सम्बन्धित साहित्य के स्रोत

सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं के स्रोत से तात्पर्य अनुसन्धान विषय में किये गये पूर्व अध्ययनों से होता है तथा इसके लिये शोधकर्ता को अध्ययन सामग्री की आवश्यकता होती है। यह अध्ययन सामग्री शोधकर्ता को विभिन्न स्रोतों से प्राप्त होती है। स्रोत लिखित एवं संकलित हो सकते हैं, इससे शोधकर्ता को उस क्षेत्र में हुए कार्यों के बारे में जानकारी मिलती है, उसकी सूझ एवं अन्तर्दृष्टि का विकास होता है।

सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं के स्रोत दो प्रकार के होते हैं—

1. प्रत्यक्ष स्रोत
2. अप्रत्यक्ष स्रोत

1) **प्रत्यक्ष स्रोत:** शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा साहित्य के रूप में सूचना के प्रत्यक्ष स्रोत इस प्रकार के प्राप्त होते हैं—
   - **पत्रिकाओं में उपलब्ध सामयिक साहित्य**—शोध से सम्बन्धित जो कार्य हुए हैं उनकी साहित्य पत्रिकाएँ आदि हो सकती हैं, इनका साहित्य नवीन घटनाओं से सम्बन्धित होता है।
   - **शोध प्रबन्ध**—विषय से सम्बन्धित शोध मिल सकते हैं। शोध वे ही नहीं होते लेकिन उनकी रूपरेखा मिल जाती है।
   - **एक ही विषय पर निबन्ध पुस्तिकाएँ, वार्षिक पुस्तकें तथा बुलेटिन**—शोध चाहे दार्शनिक हो या सर्वे का दोनों में ही सम्बन्धित पुस्तकों को पढ़े बिना शोध कार्य सम्पन्न नहीं किया जा सकता।

2) **अप्रत्यक्ष स्रोत:** सूचना के अप्रत्यक्ष स्रोत अथवा शिक्षा साहित्य के लिये निर्देशिका निम्न रूपों में प्राप्त होती है—

- शिक्षा के विश्व ज्ञान कोष।
- शिक्षा सूची पत्र।
- शिक्षा सार।
- पत्रिकाएँ एवं सहायक पुस्तकें।
- मोनोग्राफ, बुलेटिन एवं वार्षिक पुस्तकें।

2.2 अध्ययन से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन

प्रस्तुत शोध कार्य में जागरूकता एवं ऐतिहासिक विरासत से सम्बन्धित विभिन्न शोधों का अध्ययन किया गया है, इनका विवरण निम्न प्रकार है–

2.2.1 जागरुकता से सम्बन्धित शोध अध्ययन

ग्रामीण और नगरीय परिवारों की जनसंख्या नियंत्रण के प्रति जागरूकता का अध्ययन
शोध-प्रबन्ध
2005

1. निधि अवस्थी (2005), ने *'ग्रामीण और नगरीय परिवारों की जनसंख्या नियंत्रण के प्रति जागरूकता का अध्ययन'* किया, जिसमें न्यादर्श के रूप में कानपुर नगर के 400 ग्रामीण तथा 400 नगरीय परिवारों को शामिल किया गया। ग्रामीण और नगरीय परिवारों की जनसंख्या नियंत्रण के प्रति जागरूकता के प्रदत्त संकलन हेतु शोधार्थिनी द्वारा 62 प्रश्नों की स्वनिर्मित प्रश्नावली तथा T.S. Sodhi द्वारा निर्मित Attitude Scale Towards small family and population education (ASSFPE) का प्रयोग किया। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि ग्रामीण परिवारों में आयु जागरूकता को प्रभावित कर रही है। ग्रामीण परिवारों में **15-25 आयु वर्ग में अधिक जागरूकता प्राप्त हुई है, परन्तु नगरीय परिवारों की जागरूकता पर आयु का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ रहा** है।

2. लक्ष्मण सिंह (2016), ने *'अलीगढ़ मण्डल के ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत शिक्षकों की पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन'* किया। इस शोध में न्यादर्श के रूप में उन्होंने अलीगढ़ मण्डल के चार जिलों कासगंज, एटा, हाथरस और अलीगढ़ के 800 शिक्षकों का चयन किया। प्रदत्त संकलन हेतु उन्होंने स्वनिर्मित पर्यावरण जागरूकता मापनी का प्रयोग किया जिसमें 75 प्रश्न रखे गये। शोध के निष्कर्ष रूप में उन्होंने पाया कि ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत महिला एवं पुरुषों की पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता में अन्तर है। महिला शिक्षकों की तुलना में पुरुष शिक्षक अधिक जागरूक हैं। इसी प्रकार शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में **शिक्षणरत पुरुषों** के पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता **महिला शिक्षकों की तुलना में अधिक** है।

3. शैलेन्द्र कुमार त्रिपाठी (2018), ने *'अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में एड्स के प्रति जागरूकता एवं पर्यावरण ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन'* किया। इस अध्ययन में उन्होंने कानपुर नगर के अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के माध्यमिक स्तर के 800 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया। एड्स जागरूकता के प्रदत्त संकलन हेतु डॉ० मधु अस्थाना द्वारा निर्मित एड्स जागरूकता मापनी का प्रयोग किया गया। इस प्रश्नावली में कुल 52 कथन व प्रश्न हैं, जिनके उत्तर हाँ या नहीं में देना होता है। इस अध्ययन के निष्कर्ष में उन्होंने पाया कि **अंग्रेजी तथा हिन्दी माध्यम के छात्रों** की एड्स के प्रति जागरूकता

छात्राओं की अपेक्षा अधिक है। साथ ही हिन्दी माध्यम की छात्राओं की अपेक्षा, अंग्रेजी माध्यम की छात्राएँ एड्स के प्रति अधिक जागरूक हैं।

4. विक्रम आनन्द (2019), ने *'माध्यमिक स्तर के हिन्दी अध्यापकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता एवं अध्यापक की शिक्षण प्रभाविकता का अध्ययन'* किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उन्होंने वाराणसी जनपद के 80 माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत 232 हिन्दी शिक्षकों को एवं 696 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया। माध्यमिक स्तर के हिंदी अध्यापकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता के प्रदत्त संकलन हेतु स्वर्निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में उन्होंने पाया कि CBSE और यूपी बोर्ड के हिन्दी अध्यापकों की सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर है। यूपी बोर्ड के हिन्दी अध्यापकों को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति अधिक जागरूक होने की आवश्यकता है। साथ ही उन्होंने यह भी पाया कि **प्रशिक्षित हिन्दी अध्यापक, अप्रशिक्षित हिन्दी अध्यापकों की तुलना में ICT के प्रति अधिक जागरूक** हैं।

5. पूनम राठौर (2020), ने *'अनुसूचित पिछड़े एवं सामान्य जाति के स्नातकोत्तर स्तर विद्यार्थियों के मानवाधिकार जागरूकता एवं व्यक्तिगत मूल्य विकास का तुलनात्मक अध्ययन'* किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उन्होंने मेरठ मण्डल के 2 जिलों मेरठ व गाजियाबाद से 720 स्नातकोत्तर विद्यार्थियों का चयन किया। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि **पिछड़े एवं सामान्य जाति के विद्यार्थियों** में मानवाधिकार जागरूकता स्तर **अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च** है। साथ ही सामान्य जाति की छात्राओं में मानवाधिकार जागरूकता स्तर छात्रों की अपेक्षा अधिक उच्च है।

2.2.2 ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित शोध अध्ययन

1. सरिता साहू (2016), ने *'क्षेत्रीय इतिहास अध्ययन के परम्परागत मौखिक स्रोतों की ऐतिहासिकता छत्तीसगढ़ के विशेष सन्दर्भ में'* अध्ययन किया तथा इस निष्कर्ष पर पहुँची कि छत्तीसगढ़ में **लिखित साहित्य की कमी** के कारण यहाँ के प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास के सम्बन्ध में **जानकारियों का अभाव** है। इस अञ्चल में विभिन्न पर्व-त्यौहार, उत्सवों व संस्कारों के निर्वहन के दौरान गीत गाने, नृत्य करने एवं लोक परम्पराओं को निभाने का चलन है।

2. प्रिन्सी चौरसिया (2018) ने *'स्नातक स्तर पर महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता का अध्ययन'* किया, जिसमें न्यादर्श के रूप में उन्होंने महोबा नगर के स्नातक स्तर के 50 छात्र-छात्राओं का चयन किया। अध्ययन के निष्कर्ष रूप में उन्होंने पाया कि छात्राओं की अपेक्षा छात्र महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों के प्रति अधिक जागरूक हैं। इस अध्ययन में उन्होंने निम्न सुझाव दिये—

- विद्यार्थियों द्वारा नुक्कड़ नाटक किए जायें ताकि लोग ऐतिहासिक स्मारकों के आसपास साफ-सफाई रख सकें।
- ऐतिहासिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए शासन-प्रशासन स्तर पर कार्य योजना तैयार की जानी चाहिए।

- शैक्षिक भ्रमण हेतु ऐतिहासिक स्थल तक पहुँचने के मार्ग-संकेत नगर के मुख्य चौराहों पर लगाए जायें।
- ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण एवं आसपास की स्वच्छता के लिए लोगों को प्रेरित किया जाना चाहिए।

3. पूजा चौरसिया (2019) ने *'माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन'* किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उन्होंने बाँदा जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के 150 छात्र-छात्राओं का चयन किया। अध्ययन के निष्कर्ष में उन्होंने पाया कि छात्र-छात्राओं की जागरूकता का स्तर समान है। इस अध्ययन में उन्होंने निम्न सुझाव प्रस्तुत किये—

- ऐतिहासिक विरासत के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का आयोजन किया जाना चाहिए।
- कालिंजर क्षेत्र/प्रान्त की ऐतिहासिक विरासत/शौर्य/वीरता /पराक्रम/संस्कृति/पुरुषार्थ का इतिहास उस क्षेत्र विशेष में विस्तृत रूप से अतिरिक्त सहायक पाठ्य पुस्तक के रूप में शामिल किए जाने की आवश्यकता है।
- परम्परागत कुटीर उद्योग को विकसित किया जाये।
- यहाँ से जुड़ी हुई संगीत परम्पराओं को विकसित करके समय-समय पर उनका प्रस्तुतीकरण किया जाये।
- महोत्सव का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाए और विदेशी पर्यटकों को आकर्षित किया जाये।

4. बृजलाल पटेल (2021) ने *'बाँदा जनपद के विद्यार्थियों में भूरागढ़ दूर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन'* किया। इस अध्ययन में उन्होंने न्यादर्श के रूप में बाँदा जनपद के 90 छात्र-छात्राओं का चयन किया। उन्होंने अपने निष्कर्ष में पाया कि भूरागढ़ दुर्ग क्षेत्र में धर्म, संस्कृति तथा विशिष्ट रीति-रिवाजों से युक्त **अनेक ऐतिहासिक स्थल** हैं, जिनके **गौरवमयी अतीत से प्रभावित हुए बिना व्यक्ति नहीं रह सकता**। पर्यटन की दृष्टि से यह क्षेत्र रमणीय क्षेत्र है। इस क्षेत्र में पर्यटन की पर्याप्त सम्भाव्यता है। अतः इस क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सुविधाएँ, यातायात, आवास, सुरक्षा की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए।

5. दीपक कुमार (2021) ने *'विद्यार्थियों में मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता का अध्ययन'* किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उन्होंने बाँदा जनपद के 50 छात्र-छात्राओं का चयन किया। इस अध्ययन में उन्होंने मड़फा दुर्ग की जागरूकता संवर्धन के सम्बन्ध में निम्न सुझाव प्रस्तुत किए—

- मड़फा तक जाने वाले मार्ग में थोड़ी-थोड़ी दूर पर संकेतक लगाए जायें।
- यहाँ पर सीढ़ियों पर रेलिंग लगी होनी चाहिए।
- पानी की व्यवस्था होनी चाहिए।
- मड़फा दुर्ग तक आवागमन के साधनों का विकास तीव्र गति से किया जाना चाहिए।
- शंकर जी की मूर्ति के पास भंडारा करने के लिए छाया के लिए टीन-शेड लगाना चाहिए।
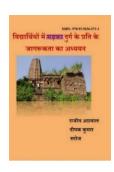
6. धीरेन्द्र कुमार वर्मा (2022) ने 'विद्यार्थियों में गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन" किया। इस अध्ययन में उन्होंने चित्रकूट जनपद के के 157 छात्र-छात्राओं का चयन किया। इस अध्ययन में उन्होंने गणेश बाग की जागरूकता संवर्धन के संबंध में निम्न सुझाव प्रस्तुत किए—

- चित्रकूट बस स्टैंड हम रेलवे स्टेशन में इन विराट स्टोन से संबंधित बोर्ड लगाए जाने चाहिए।
- गणेश बाग की बाउंड्री वालों की मरम्मत की जानी चाहिए।
- गणेश बाग के मुख्य मन्दिर में विग्रह की पुनर्स्थापना कर पूजा अर्चना प्रारंभ की जानी चाहिए।
- विद्यालयों में समय-समय पर स्थानीय संस्कृति से संबंधित कार्यक्रम किए जाने चाहिए।

2.3 समीक्षात्मक निष्कर्ष

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के द्वारा शोध प्रबन्ध में उल्लेख किए गए, शोध में अनावश्यक पुनरावृत्ति नहीं होने पाती है। सम्बन्धित साहित्य शोध प्रबन्ध के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में शोधकर्ता के ज्ञान एवं कुशलता को स्पष्ट करता है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शोधकर्ता ने वर्तमान अध्ययन से सम्बन्धित पिछले शोध अध्ययनों की समीक्षा दो भागों में की है। प्रथम भाग में जागरूकता से सम्बन्धित पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों की समीक्षा की गयी है, जिसमें पाया कि **जनसंख्या नियन्त्रण, पर्यावरण प्रदूषण, पर्यावरण संरक्षण, प्रदूषण उन्मूलन, वृत्तिक अभिमुखीकरण, मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता, एड्स के प्रति जागरूकता तथा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता** से सम्बन्धित अध्ययन पहले किए गये हैं। दूसरे भाग में ऐतिहासिक विरासत से सम्बन्धित पूर्ववर्ती शोधों की समीक्षा की गयी है, जिसमें पाया गया कि पूर्व में **छत्तीसगढ़ की क्षेत्रीय ऐतिहासिकता, महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों, कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत, भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत तथा मड़फा दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत** से सम्बन्धित अध्ययन किए गये हैं; परन्तु अभी तक कोई भी शोध कार्य सतना के चित्रकूट नगर की चयनित धार्मिक ऐतिहासिक विरासत मोरध्वज आश्रम की जागरूकता के सम्बन्ध में नहीं किया गया है, जिस कारण से शोधकर्ता ने इस विषय को शोध कार्य हेतु चुनने का निश्चय किया।

अध्याय तृतीय

मोरध्वज आश्रम: एक परिचय

3.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत देश के उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की सीमा रेखा पर अवस्थित चित्रकूट नामक एक पवित्र एवं मनोरम स्थल है जो अपने धार्मिक एवम् ऐतिहासिक रूप से विश्व प्रसिद्ध है। माना जाता है कि इसी स्थान पर भगवान श्री रामचन्द्र जी त्रेतायुग में वनवासकाल के दौरान 11 वर्ष रहकर व्यतीत किया। मध्य प्रदेश के सतना जिले के चित्रकूट नगर के पालदेव गाँव के पास विंध्याचल पहाड़ी की श्रेणी में स्थित मोरध्वज आश्रम है, जो कि एक धार्मिक स्थल है और यहाँ आस–पास अनेक धार्मिक स्थल हैं, जैसे— गुप्त गोदावरी, सती अनुसुइया, हनुमान धारा, रामघाट, चित्रकूट परिक्रमा, कामतानाथ मंदिर, स्फटिक शिला आदि प्रमुख दार्शनिक स्थल हैं।

चित्र संख्या-3.1 मोरध्वज आश्रम

इसी धार्मिक नगरी चित्रकूट से पश्चिम दिशा में सतना गुप्त गोदावरी मार्ग पर पालदेव गाँव से दक्षिण दिशा में मोरध्वज आश्रम स्थित है। यह आश्रम पहाड़ों के बीच बना है जो चारों ओर जंगल से घिरा हुआ है। यहां अनादिकाल से साधु-संत अपना आश्रम बना कर रहते हैं तथा इस स्थल की देख-रेख एवम् अपनी साधना तपस्या में लीन रहते हैं।

ऐतिहासिक कथानक

भगवान श्री कृष्ण और राजा मोरध्वज की कथा:

महाभारत का युद्ध समाप्त होने के बाद पांडवों द्वारा श्री कृष्ण के कहने पर अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया गया। अश्वमेध यज्ञ के बाद घोड़ा छोड़ा जाता है और वह घोड़ा जहाँ तक जाता है वहाँ तक उस राज्य के राजा की दास्तां स्वीकार कर ली जाती है, घोड़े की रक्षा के लिए धनुर्धर अर्जुन को नियुक्त किया गया था। कोई भी राज्य का राजा उसको रोकने की कोशिश नहीं करता था क्योंकि अर्जुन ने पितामह भीष्म और महाबली कर्ण जैसे योद्धाओं को मृत्यु का ग्रास बनाया था। घोड़ा निरंतर आगे बढ़ता जा रहा था। कई राज्यों को पार करने के बाद वह घोड़ा रतनपुर राज्य की सीमा तक जा पहुँचा।

रतनपुर के राजा मोरध्वज बड़े ही धर्मात्मा और श्री नारायण के परम भक्त थे। राजा मोरध्वज का पुत्र धीरध्वज (ताम्रध्वज) था। धीरध्वज ने अल्प आयु में ही युद्ध कला में सर्व शिक्षा प्राप्त कर ली थी। वीर धीरध्वज ने अश्वमेध का वह घोड़ा रोक लिया और घोड़े के रक्षक अर्जुन की प्रतीक्षा करने लगा। सेना सहित धनुर्धर अर्जुन वहाँ पहुँचे और उस वीर बालक से कहा हे बालक, तुमने जिस घोड़े को रोका है वह चक्रवर्ती सम्राट युधिष्ठिर ने के अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा है। जिसकी सुरक्षा में मैं स्वयं खड़ा हूँ, इस घोड़े को पकड़ने का साहस किसी भी राज्य के राजा ने नहीं किया, जिसके राज्य में इस घोड़ेने अपने पैर रखे हैं, उस राज्य के राजा ने युधिष्ठिर की दास्तां स्वीकार कर ली है मैं तुम्हारी भूल समझ कर तुम्हें क्षमा करता हूँ, इसलिए तुम यह घोड़ा छोड़ दो। इस बात पर ताम्रध्वज ने अपनी वीरता का परिचय देते हुए कहा, कि हे मैं अर्जुन सिर्फ आप ही कहोगे या मेरी भी सुनोगे, मैं रतनपुर का भावी सम्राट ताम्रध्वज हूँ मेरे पिता मयूरध्वज और माता विद्याधारणी है मैं क्षत्रिय

पुत्र हूँ और क्षत्रिय कभी किसी का दास नहीं होता। इस पर अर्जुन ने कहा कि नादान बालक तुम जानते नहीं हो, तुम क्या कर रहे हो? तुम्हारा ये बालहट युद्ध करवा सकता है और युद्ध का परिणाम तुम नहीं जानते हो इसलिए तुम यह घोड़ा छोड़ दो और अपने पिता को सूचित करो ताकि वह तुम्हें समझा सके। ताम्रध्वज ने अपनी वाकपटुता से अर्जुन पर पलटवार किया और कहा, हे कुंती नंदन अर्जुन क्षत्रिय पुत्र बाल्यकाल अवश्य अपने पिता की गोद में व्यतीत करता है, परन्तु जवानी में क्षत्रिय पुत्र क्षत्रिय परिपक्व हो जाता है यदि तुम्हें घोड़ा चाहिए तो तुम्हें मुझे अपने बाहुबल से प्राप्त करना होगा। व्यर्थ में अपना समय खराब ना करें। अर्जुन ने ताम्रध्वज से कहा हे मूर्ख ताम्रध्वज तुझ से युद्ध करके मैं अपयश का भागीदार नहीं बनना चाहता हूँ इसलिए मैं अपनीबाण से तुझे तेरी माता की गोद में सकुशल पहुँचा देता हूँ और अर्जुन ने बाण चलाया। परन्तुताम्रध्वज कोई कायर बालक नहीं था। वह भी शास्त्र कलाओं में प्रवीण था। ताम्रध्वज ने न सिर्फ अर्जुन द्वारा चलाए गए बाण का उत्तर दिया बल्कि ताम्रध्वज के तीर ने अर्जुन के सारथी को मार गिरा दिया बालक ताम्रध्वज की वीरता को देखकर अर्जुन चकित रह गए, अब तक जिसे वह एक साधारण बालक समझ रहे थे। वे एक श्रेष्ठ धनुर्धर थे और ताम्रध्वज को गंभीरता से लेते हुए दोनों के बीच भयंकर युद्ध चालू हो गया। ताम्रध्वज ने अर्जुन का वीरता पूर्वक सामना किया और अपनी एक तीर से महाबली अर्जुन को मूर्छित कर दिया, अर्जुन को वहीं छोड़ ताम्रध्वज घोड़ा लेकर अपने नगर गए, जहाँ उनका भव्य स्वागत किया गया। और जब अर्जुन मूर्छित अवस्था से बाहर आए तो उनके समक्ष श्री कृष्ण बैठे थे। अर्जुन ने कहा, भगवान यह सब आपकी माया का ही चमत्कार है, अन्यथा वह बालक युद्ध में अर्जुन से जीत नहीं सकता था। इस पर श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा, अर्जुन तुम अभी भी भ्रम में हो तुम यह सोचते हो कि संसार में तुम से बड़ा योद्धा कोई नहीं है और तुम से बड़ा मेरा भक्त भी कोई नहीं है।

अर्जुन ने श्री कृष्ण से कहा, क्या यह सत्य है माधव? इस पर श्री कृष्ण अर्जुन से कहा कि, तुम्हें तब भगवान श्री कृष्ण और अर्जुन ब्राह्मण का भेष धारण कर तथा यमराज एक सिंह के भेष में रतनपुर राज्य की ओर प्रस्थान किए। जहाँ राजा मयूरध्वज का राज दरबार लगा था। जैसे राजा मयूरध्वज की इस बात की खबर लगी कि साधु के दरबार में आए हैं तुरन्त उन्होंने अपना सिंहासन छोड़ साधुओं को प्रणाम कर आशीर्वाद लिया। ब्राह्मण रुपी श्री कृष्ण ने राजा से कहा, कि हमने तुम्हारे दान की बहुत प्रशंसा सुनी है चारों ओर तुम्हारे यश की कीर्ति है कि कोई भी याचक तुम्हारे दरबार से खाली हाथ नहीं जाता है। राजा मयूरध्वज ने ब्राह्मणरूपी श्री कृष्ण से कहा की यह भगवान नारायण की ही मुझ पर कृपा है कि आज तक मेरे दरबार से कोई खाली हाथ नहीं लौटा है। ब्राह्मण रूपी श्री कृष्ण ने कहा कि हम आपसे ऐसी कोई वस्तु नहीं मांगेंगे जो आपके अधिकार क्षेत्र से बाहर हो। श्री कृष्ण ने राजा मोरध्वज से कहा कि हम तीन प्राणी बहुत लंबे समय से यात्रा कर रहे हैं। हम दोनों तो कंदमूल खाकर अपनी भूख शांत कर लेते थे परन्तु हमारे साथ सिंहराज भी हैं जो सिर्फ माँसाहार करते हैं और यह सिर्फ मनुष्य का मांस भक्षण करते हैं। मयूरध्वज ने श्री कृष्ण से कहा कि मैं सिंहराज के समक्ष प्रस्तुत यदि वह मेरा भक्षण करेगे तो मैं खुद को धन्य समझंगा। श्री कृष्ण ने कहा कि पृथ्वी पर स्वयं को दान करने वालों की कमी नहीं है यदि तेरे जैसा भोजन करते तो हमें आपके पास आने की जरूरत नहीं होती। महाराज मयूरध्वज ने श्री कृष्ण से कहा कि अब आप ही बताएं कि, मैं कैसे सिंहराज को भोजन की व्यवस्था कर सकता हूं? ब्राह्मण बने श्री कृष्ण राजा मयूरध्वज से कहा कि हमारे सिंह के भोजन के लिए आपको अपनी रानी सहित आरा लेकर अपने पुत्र ताम्रध्वज को चीरना होगा जिससे सिंहराज भोजन कर सके। श्री कृष्णकी आवाज सुनकर सारा दरबार आश्चर्यचकित हो गया स्वयं अर्जुन श्री कृष्ण के इस तरह से बात से डर गए। एक क्षण के लिए राजा मयूरध्वज भी डगमगा गए परन्तु समझ गए। राजा मोरध्वज ने कहा की, महात्मा धन्य है मेरा पुत्र ताम्रध्वज जिसे आपने सिंहराज के आहार के लिए चुना । श्री कृष्ण ने राजा मोरध्वज से कहा कि पुत्र को चढ़ाते समय यदि माता-पिता की आँखों में आंसू आए तो सिंहराज भोजन स्वीकार नहीं करेंगे। राजा मोरध्वज ने अपने पुत्र और पत्नी को भी राजी कर लिया। अर्जुन राजा के इस प्रकार समर्पण और वचनबद्ध बातों को देखकर आश्चर्यचकित रह गया। इसके बाद राजा ने आरा उठाया और अपने इकलौते पुत्र के सर पर रखकर परमपिता परमात्मा का स्मरण करते हुए अपने पुत्र को चीर दिया। अर्जुन चौक कर मूर्छित हो गए। आगे से निरंतर उसके शरीर के दो भाग किए जा

रहे थे इस तरह ताम्रध्वज का शरीर दो भागों में बट गया राजा मयूरध्वज ने ब्राह्मण से महात्मा अपने सिंह को भोजन करवाईए। कहा कि सिंहराज ने आगे बढ़कर ताम्रध्वज का दायाँ भाग खा लिया। तभी ताम्रध्वज की माता की बाईं आँख से आंसू टपक पड़े। श्री कृष्ण ने महारानी से पूछा, यह आंसू किस लिए? तब रानी ने कहा की महा पितृ भक्त ताम्रध्वज के दाहिने अंग को तो आपने स्वीकार कर लिया परन्तु वाम अंग को छोड़ दिया इसी कारण मेरी बाईं ओर से आंसू निकल पड़े। इस दृश्य को देख अर्जुन का घमंड चूर चूर हो गया। भक्ति का ऐसा प्रकाश अर्जुन ने अपने जीवन में कभी नहीं देखा था। इसके बाद ब्राह्मणों के लिए सात्विक भोजन की व्यवस्था की गई श्री कृष्ण राजा मयूरध्वज से कहा कि तुम्हारे पुत्र को बैकुंठ में स्थान मिलेगा ईश्वर तुम्हारे दान भक्ति से अति प्रसन्न रहते है और वह कभी अपने भक्तों का अहित नहीं करेंगे। ब्राह्मण रूपी श्री कृष्ण ने राजा से कहा कि आप की दाहिनी तरफ देखिए आपके अलौकिक कार्य का फल आपको मिल चुका है जैसे ही राजा ने अपनी दाहिनी तरफ देखा ताम्रध्वज जीवित अवस्था में खड़ा था अपने पुत्र को देख रानी ने उसे गले से लगा लिया। राजा मोरध्वज ने ब्राह्मण से कहा कि, आप कौन हैं और किस कारण आपने मेरी इतनी कठिन परीक्षा ली? भगवान श्री कृष्ण ने अपने विराट रूप का दर्शन राजा मोरध्वज को दिए और राजा मयूर ध्वज श्री कृष्ण के चरणों में गिर गए। यह दृश्य देख अर्जुन उस महादानी राजा मोरध्वज के पैरों में गिर गए और इस तरह अर्जुन का अहंकार नष्ट हो गया।

चित्र संख्या-3.2, राजा मोरध्वज की परीक्षा लेते हुए भगवान श्री कृष्ण

3.2 मोरध्वज आश्रम के महत्वपूर्ण स्थल

3.2.1 राजा मोरध्वज, रानी पिंगला एवं ताम्रध्वज

मध्य प्रदेश राज्य के सतना जिले में अवस्थित विंध्याचल पर्वत श्रेणियाँ के समीप धार्मिक स्थल मोरध्वज आश्रम विद्यमान है, यह आश्रम चारों तरफ से घने जंगलों व पहाड़ों से घिरा हुआ है इस आश्रम तक सुगमता से पहुँचने के लिए पहाड़ों के मध्य से लगभग 200 सीढ़ियाँ बनी हुई है इन सीढ़ियों से चढ़ते हुए हमने पश्चिम दिशा में एक भारी, विशालकाय चट्टान में राजा मोरध्वज, रानी पिंगला एवं मध्य में पुत्र ताम्रध्वज की मूर्ति एक साथ स्थापित है, इन मूर्तियों के ऊपर कोई छत्र या मंदिर नहीं बना बल्कि यह मूर्तियाँ विशालकाय चट्टान के नीचे स्थित हैं और समीप से ही इन्हीं मूर्तियों से लगभग जुड़ी हुई हनुमान जी की मूर्ति स्थापित है और भगवान शंकर की मूर्ति भी शैलचित्र के रूप में उभरी हुई है।

चित्र संख्या- 3.2.1 राजा मोरध्वज रानी पिंगला ताम्रध्वाज

3.2.2 हनुमान जी

सीढ़ियों से पश्चिम दिशा की तरफ ही स्थानीय लोगों के द्वारा हनुमान जी की एक लगभग चार फीट की मूर्ति और अन्य दो हनुमान जी की छोटी मूर्तियाँ स्थापित हैं। जो इस धार्मिक स्थल की शोभा बढ़ाते हैं।

चित्र संख्या- 3.2.2 हनुमान जी

3.2.3 शिवलिंग मूर्तियाँ

चित्र संख्या- 3.2.3 शिव लिंग

वहीं पास में ही जलधारा के समीप पीपल के वृक्ष के नीचे शिवलिंग की तीन मूर्तियाँ तथा जलधारा के मध्य में शैल चित्र में उभारे गए शिवलिंग की एक प्रतिमा स्थापित है। जो इस प्रकार के प्राकृतिक एवम् धार्मिक मनोरम स्थल की शोभा बढ़ाते हैं।

3.2.4 जल की धारा

चित्र संख्या-3.2.4 जल धारा

सीढ़ियों से पश्चिम दिशा की ओर लगभग 15 मीटर की दूरी पर पहाड़ों के मध्य एक पाताल गंगा के रूप में अविरल, निर्मल जलधारा प्रस्फुटित होती रहती है। इस जलधारा का जल शुद्ध, स्वच्छ एवम् शीतल है। यह जलधारा अनादिकाल से लगातार आज भी बह रही है, जिसका स्रोत आज तक पता नहीं चल पाया है। कुछ ऋषि-मुनि, महात्मा यहाँ के बारे में बताते हैं कि यह दक्षिण भारत की गुप्त गंगा की एक अविरल, निर्मल जलधारा है। इस पवित्र जल धारा से नहाने मात्र से ही शारीरिक व्याधियाँ जैसे चर्म रोग आदि बीमारियाँ ठीक हो जाती है।

3.2.4 साधु-सन्त

चित्र संख्या-3.2.4 साधु सन्त

यहां अनेक ऋषि-मुनि तथा साधु-सन्त अपनी कुटिया बनाकर साधना एवम् तपस्या करते रहते हैं। तथा यहां के महन्त श्री श्री 108 श्री हनुमानदास जी महराज बताते हैं कि जब वे 8 वर्ष की आयु के थे, तभी से यहां अपनी कुटिया बनाकर तपस्या कर रहे हैं। और हनुमानदास महराज जी ही इस आश्रम स्थल के मुख्य महन्त हैं और वही इस धार्मिक स्थान की देख-रेख व सुरक्षा करते हैं।
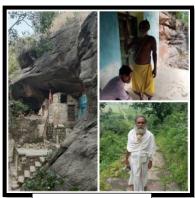
3.2.5 भण्डार गृह

चित्र संख्या-3.2.5 भण्डार गृह

इस आश्रम स्थल के समीप ही सीढ़ियों से लगा हुआ एक कक्ष भण्डार गृह है। जो अब लगभग जर्जर अवस्था में अवस्थित है।

3.2.6 प्राकृतिक दृश्य

चित्र संख्या–3.2.6 प्राकृतिक

इस आश्रम का धार्मिक एवम् प्राकृतिक दृश्य बहुत ही अद्भुत, लुभावना एवम् मनोरम है। यहाँ का दृश्य सुन्दर पहाड़ो के बीच बना हुआ है। यह सुहावना क्षेत्र चारों ओर से पहाड़, झरना, जंगली पशु पक्षियों एवम् पेड़-पौधों से युक्त है। यहा ताजी, शुद्ध एवम् प्राकृतिक हवाएँ चलती है। यह स्थल बहुत अच्छा एवम् मनमोहक लगता है।

अध्याय चतुर्थ

अध्ययन विधि एवं प्रक्रिया

4.1 प्रस्तावना

जब कोई अनुसन्धानकर्ता अपनी अनुसन्धान समस्या से सम्बन्धित उद्देश्य और परिकल्पनाओं का निरूपण कर लेता है तब वह अपनी परिकल्पनाओं का अनुभवपरक सत्यापन करना चाहता है। अनुभवपरक सत्यापन के लिए परिकल्पनाओं से सम्बन्धित तथ्यों और आँकड़ों की आवश्यकता होती है। यह तथ्य या आँकड़े किस योजना या अनुसन्धान व्यूह नीति के आधार पर एकत्र किए जायें कि परिकल्पनाओं की वैज्ञानिक और अनुभवपरक जाँच की जा सके और विश्वसनीय तथा वैद्य परिणाम प्राप्त किए जा सकें। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि अनुसन्धानकर्ता उपयुक्त रीतिविधान का निर्धारण करे और उपयुक्त अभिकल्प का चयन करे। वैज्ञानिक अनुसन्धानकर्ता को भी अनुसन्धान समस्या के अध्ययन के लिए अनेक साधन जुटाने पड़ते हैं। प्रायः उसे अपनी अनुसन्धान समस्या के लिए अनुसन्धान अभिकल्प की आवश्यकता होती है।

एकॉफ (1953) के अनुसार, "अभिकल्प वह प्रक्रिया है जिससे किसी समस्या समाधान के लिए निर्णयों को क्रियान्वित किया जाता है। किसी अपेक्षित परिस्थिति को नियन्त्रित करने की दिशा में यह एक संकलित पूर्वानुमान की प्रक्रिया है।**"**

"Design is the process of making decisions before the situation arises in which the decision is to be carried out. It is a process of deliberate anticipation directed towards bringing the expected situation under control."

—R. L. Ackoff

करलिंगर (1978) के अनुसार, "अनुसन्धान अभिकल्प नियोजित अन्वेषण की वह योजना, संरचना तथा अनुसन्धान व्यूह नीति है जिसके आधार पर अनुसन्धान प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किये जाते हैं और प्रसरण पर नियन्त्रण किया जाता है।"

"Research design is the plan, structures and strategy of investigation conceived so as to obtain answers to research questions and to control variance."

—F. N. Kerlinger

4.2 शोध विधि

प्रत्येक शोधकर्ता को अधिक विश्वसनीय एवं ठोस परिणामों की प्राप्ति हेतु कई विधियों का चयन करना होता है। शैक्षिक समस्याओं के समाधान हेतु सर्वेक्षण विधि सर्वाधिक प्रयोग की जाने वाली विधि है। प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है क्योंकि यह विधि व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित न होकर पूरे समूह से सम्बन्धित होती है और इसमें अधिक से अधिक व्यक्तियों को सम्मिलित किया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि को अपनाकर **मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन** करने का प्रयास किया है।

4.2.1 सर्वेक्षण विधि

सर्वेक्षण शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द Survey का हिन्दी रूपान्तरण है। Survey शब्द दो शब्दों (sur+vey) से मिलकर बना है। Sur शब्द का अर्थ ऊपर और Vey का अर्थ देखना है अर्थात सर्वेक्षण का अर्थ ऊपर से देखना या निरीक्षण करना है। विभिन्न विद्वानों के अनुसार सर्वेक्षण को निम्न प्रकार समझा जा सकता है—

मोर्स (1934) के अनुसार, " संक्षेप में सर्वेक्षण किसी सामाजिक स्थिति अथवा समस्या अथवा जनसंख्या के परिभाषित उद्देश्यों हेतु वैज्ञानिक तथा व्यवस्थित रूप में विश्लेषण की एक पद्धति है।"

"The Survey is, in brief, simply a method of analysis in scientific and orderly forms and for defined purposes of a given social situation or problem or population."

—H. N. Morse, The Social Survey in Town and Country Areas,

4.3 शोध अभिकल्प

बुन्देलखण्ड विश्विद्यालय, झाँसी द्वारा शोध के प्रारूप सम्बन्धी दिशा-निर्देश के अभाव में शोधर्थी द्वारा प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध में APA Style एवं Kumaun University, Nainital द्वारा शोध हेतु निर्गत दिशा-निर्देशों का संयुक्त रूप से प्रयोग किया गया है।

(विस्तृत विवरण परिशिष्ट—IV)

4.4 अध्ययन समष्टि

अनुसन्धान का अन्तिम लक्ष्य ऐसे सिद्धान्तों या सामान्यीकरणों का विकास करना है जो व्यक्तियों, घटनाओं या वस्तुओं के किसी समूह पर लागू होता है परन्तु ऐसे सिद्धान्त के विकास के लिए समूह के प्रत्येक सदस्य का अध्ययन करना सम्भव नहीं होता, न ही अक्सर आवश्यक होता है, विशेषकर उस स्थिति में जब समूह के सदस्यों की संख्या बहुत अधिक हो। सामान्यत: जिस समूह पर अनुसन्धान परिणामों का सामान्यीकरण करना होता है। उसके कुछ सदस्यों को लेकर उन पर अध्ययन किया जाता है, उसे समष्टि कहते हैं।

यह उन सभी प्रेक्षणों का कुलक अथवा समुच्चय है जिनमें एक या एक से अधिक विशेषताएँ उभयनिष्ठ हैं तथा जो किसी अध्ययन का विषय है।

सैद्धान्तिक रूप से समष्टि किन्ही ऐसी इकाइयों या तत्वों का कुलक (सेट) हो सकता है, जिसमें अनुसन्धानकर्ता की रुचि हो।

4.4.1 प्रस्तुत लघु शोध हेतु अध्ययन समष्टि

प्रस्तुत अध्ययन के सन्दर्भ में अध्ययन की मूल जनसंख्या जिनसे वाञ्छित सूचनाएँ संकलित की गयी हैं, वह है— **कर्वी नगर के विभिन्न महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी**।

इसमें कुल 126 विद्यार्थी लिए गए हैं, जिसमें 20 छात्र एवं 106 छात्राएं हैं।

4.5 प्रतिदर्श चयन

किसी भी शोध कार्य के लिए प्रतिदर्श का चयन करने से पूर्व उसके अर्थ को समझना आवश्यक होता है। प्रतिदर्श को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है—

प्रतिदर्श को न्यादर्श भी कहते हैं। प्रतिदर्श जनसंख्या का वह छोटा भाग है, जिसे अनुसन्धानकर्ता के द्वारा वास्तविक अध्ययन के लिए चयनित किया जाता है। प्रतिदर्श जनसंख्या का प्रतिनिधित्व सूक्ष्म-

रूप होता है तथा इससे प्राप्त सूचनाओं का सामान्यीकरण करके जनसंख्या के बारे में अनुमान लगाया जाता है। प्रतिदर्श के अंग्रेजी पर्याय Sample का उद्भव लैटिन भाषा के Exemplum शब्द से हुआ है, जिसका अर्थ है—Example अर्थात उदाहरण इस शाब्दिक अर्थ से भी संकेत मिलता है कि प्रतिदर्श जनसंख्या की कुछ ऐसी इकाइयों का संकलन होता है, जिन्हें जनसंख्या की विशेषताओं को स्पष्ट करने के लिए उदाहरण स्वरूप चुना जाता है।

गुडे और हाट (1960) के अनुसार, "प्रतिदर्श जैसा की इसके नाम से स्पष्ट है, विस्तृत समूह का छोटा प्रतिनिधि है।"

"A sample as the name applies is a smaller representation of a large whole."

—Methods in Social Research, Goode & Hatt.

प्रतिचयन, प्रतिदर्श चुनने की विधि है जिसमें पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार एक समूह में से निश्चित प्रतिशत की इकाइयों का चुनाव किया जाता है। प्रतिदर्श की इकाइयों को चुनते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि चुना गया प्रतिदर्श उस सम्पूर्ण जनसंख्या या समष्टि (Universe) का प्रतिनिधित्व करे, जिससे वह प्रतिदर्श चुना गया है।

बोगार्ड्स के अनुसार, "पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार एक समूह में से निश्चित प्रतिशत की इकाइयों का चुनाव ही प्रतिचयन कहलाता है।"

"Sampling is the selection of a certain percentage of a group of items according to a predetermined plan."

—Bogardus

4.5.1 प्रतिदर्श चयन की विधियाँ

प्रतिदर्श का चयन किसी न किसी प्रतिचयन विधि द्वारा किया जाता है। प्रतिचयन प्रक्रिया के लिये तकनीकी जानकारी और प्रशिक्षण आवश्यक है। प्रत्येक अध्ययनकर्ता प्रतिचयन नहीं कर सकता है। वह प्रतिचयन तभी कर सकता है जब उसे प्रतिचयन पद्धतियों का आवश्यक ज्ञान हो या इस क्षेत्र में उसे प्रशिक्षण प्राप्त हो।

प्रतिदर्श चयन की विधियों को मुख्यतः दो समूहों में विभक्त किया जा सकता है—

(I) यादृच्छिक प्रतिचयन विधियाँ—यादृच्छिक प्रतिचयन विधियों में वे सारी विधियाँ आती हैं जिसमें किसी न किसी प्रकार का यादृच्छिकरण शामिल होता है। ऐसी विधियों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है—

- संयोगिक प्रतिचयन
- वर्गबद्ध प्रतिचयन
- गुच्छ प्रतिचयन
- द्विस्तर प्रतिचयन

(II) गैर यादृच्छिक प्रतिचयन विधियाँ—गैर यादृच्छिक विधि में प्रतिदर्श के सदस्यों का चुनाव उनकी उपलब्धता और शोधकर्ता की सुविधा पर निर्भर करता है अर्थात् शोधकर्ता प्रतिदर्श में उन्हीं सदस्यों को रखता है जिन्हें वह आसानी से प्राप्त कर सकता है। इससे प्रतिदर्श में अधिक सदस्य लिए जा सकते हैं। इन विधियों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है—

- उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन
- अंश प्रतिचयन
- आकस्मिक प्रतिचयन
- **सुविधानुसार प्रतिचयन**
- स्वेच्छानुसार प्रतिचयन

4.5.1.1 सुविधानुसार प्रतिचयन

सुविधानुसार प्रतिचयन का प्रयोग सर्वेक्षणात्मक शोध में किया जाता है जहाँ शोधकर्ता को तथ्य का सस्ता सन्निकटन प्राप्त करना हो। जैसा कि इस विधि के नाम से पता चलता है, इसमें प्रतिदर्श का चयन इसलिए किया जाता है क्योंकि यह सुविधाजनक होता है। इसे **अव्यवस्थित या आकस्मिक प्रतिचयन** भी कहा जाता है, क्योंकि यह विधि उन लोगों पर लागू होती है जो टहलते हुए अचानक मिल जायें या उन लोगों पर लागू होती है जिसकी शोध में विशेष रुचि हो स्वयंसेवकों का उपयोग सुविधानुसार प्रतिचयन का एक उदाहरण है। इस विधि का प्रयोग परिणामों का सकल आकलन प्राप्त करने के लिए प्राथमिक अनुसन्धान

प्रयासों के दौरान किया जाता है। इस विधि से प्रतिदर्श का चयन करने में कोई खर्च या समय व्यर्थ नहीं जाता।

शोधकर्ता द्वारा प्रदत्त संकलन गूगल फॉर्म के माध्यम से करने का निश्चय किया गया, इस हेतु महाविद्यालयों के शिक्षकों द्वारा अध्ययन-अध्यापन के लिए विद्यार्थियों के WhatsApp ग्रुप में गूगल फॉर्म का लिंक प्रेषित कर तथा मोबाइल रखने वाले कुछ विद्यार्थियों से सीधा सम्पर्क कर विद्यार्थियों का न्यादर्श रूप में चयन किया गया।

4.6 लक्षित प्रतिदर्श का चयन

लक्षित न्यादर्श के चयन हेतु निम्नांकित प्रक्रिया का अनुकरण किया गया—

4.6.1 जनपद का चयन एवं न्यायोचितता

जैसा कि पूर्व में स्पष्ट किया जा चुका है कि वर्तमान शोध अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जनपद का चयन किया गया। चित्रकूट जनपद के अन्तर्गत कर्वी नगर, मऊ, मानिकपुर तथा राजापुर तहसीलें आती हैं जिसमें से न्यादर्श के चयन के लिए कर्वी नगर का चुनाव किया गया।

बुन्देलखण्ड के चित्रकूट जनपद की गिनती पिछड़े जिलों में होती है। इस जिले को विकास की मुख्यधारा में लाने हेतु अधिकाधिक शोध कार्य किये जाने की आवश्यकता है, इस आवश्यकता को समझते हुए शोधकर्ता ने अपने शोध कार्य हेतु चित्रकूट जनपद का चुनाव किया। साथ ही शोधकर्ता जन्म से ही कर्वी नगर का निवासी है एवं यहीं रहकर अध्ययन कार्य कर रहा है, जिस कारण शोधकर्ता का इस नगर से भावनात्मक जुड़ाव भी है। अतः शोधकर्ता द्वारा अध्ययन हेतु न्यादर्श चयन में सुविधानुसार प्रतिदर्श विधि को अंगीकृत कर कर्वी नगर को चयनित किया गया।

4.6.2 संस्थाओं का चयन

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध **मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन** से सम्बन्धित है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में शोधकर्ता द्वारा कर्वी नगर के विभिन्न महाविद्यालयों में अध्ययनरत 97 विद्यार्थियों का चयन सुविधानुसार प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया (परिशिष्ट—V) तथा उन्हें विभिन्न समूहों—छात्र-छात्राएँ, राजकीय/सहायता प्राप्त महाविद्यालय, निजी महाविद्यालय विद्यार्थियों में विभाजित किया गया, जिसका विवरण निम्नवत है–

तालिका संख्या 4.6.2.1

न्यादर्श वितरण तालिका

चर	वर्ग	संख्या	कुल संख्या
लिंग	छात्र	19	**97**
	छात्राएँ	78	
विद्यार्थी स्तर	राजकीय/सहायता प्राप्त महाविद्यालय	65	**97**
	निजी महाविद्यालय	32	

तालिका संख्या 4.6.2.2

लिंगवार प्रतिदर्श को प्रदर्शित करती तालिका

क्रम संख्या	महाविद्यालय का नाम	छात्र	छात्राएं
1	छत्रपति शाहू जी महिला महाविद्यालय, कर्वी (चित्रकूट)	2	40
2	गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्वी (चित्रकूट)	14	9
3	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, शिवरामपुर (चित्रकूट)	2	30
योग		**18**	**79**
		97	

तालिका संख्या 4.6.2.3

राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के आधार पर विभाजन को प्रदर्शित करती तालिका

क्रम संख्या	विद्यालय का नाम	राजकीय/सहायता प्राप्त महाविद्यालय	निजी महाविद्यालय
1	छत्रपति शाहू जी महिला महाविद्यालय, कर्वी (चित्रकूट)		42
2	गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्वी (चित्रकूट)	23	
3	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, शिवरामपुर (चित्रकूट)	32	
योग		**55**	**42**

4.7 प्रदत्तों की प्रकृति

प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों के रूप में विद्यार्थियों की जागरूकता जानने हेतु ' मोरध्वज आश्रम के प्रति जागरूकता मापनी' का प्रयोग कर अनुक्रियायें प्राप्त की गयी हैं, जिसमे 17 प्रश्न हैं। तत्पश्चात उपकरण से प्राप्त अनुक्रियाओं का अंकन किया गया, अतः प्रदत्तों की प्रकृति मात्रात्मक है।

4.8 शोध उपकरण

उपकरण वे उपकरण हैं जिनका उपयोग करके अनुसन्धान में डाटा एकत्र किया जाता है। यह अध्ययन के लिए डाटा संग्रह का साधन बन जाता है। यह विश्वसनीय और सटीक होना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में तथ्यों के संकलन के लिये प्रायोगिक विधि में किसी उपकरण/यन्त्र का उपयोग होता है। इसके साथ-साथ निरीक्षणों का भी सहारा लिया जाता है। लेकिन जब अध्ययन प्रयोगात्मक विधि के अतिरिक्त अन्य वैज्ञानिक विधियों द्वारा किये जाते हैं तो तथ्यों के संकलन में मुख्यतः निम्न उपकरणों का उपयोग करते हैं—

- प्रेक्षण
- साक्षात्कार
- अनुसूची
- **प्रश्नावली**
- समाजमिति
- वैयक्तिक अध्ययन
- व्यक्तिवृत विधि
- वस्तुपरक मापनियाँ
  - (i) निर्धारण मापनी
  - (ii) पदांकन मापनी
  - (iii) चिह्नांकन सूची
- मनोवैज्ञानिक परीक्षण
  - (i) बुद्धि परीक्षण

(ii) अभियोग्यता परीक्षण

(iii) अभिरुचि सूची

(iv) व्यक्तित्व परीक्षण

- अभिवृत्ति मापनियाँ

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में प्रदत्त संकलन के लिए शोधकर्ता द्वारा शोध उपकरण के रूप में **स्वनिर्मित प्रश्नावली** का प्रयोग किया गया है।

4.8.1 प्रश्नावली

प्रश्नावली प्रश्नों की वह सूची है जो शोध समस्या के सम्बन्ध में बनायी जाती है और जिसकी सहायता से अध्ययन इकाइयों से तथ्यों का संकलन करके शोध समस्या का अध्ययन पूर्ण किया जाता है। **गुड और हॉट (1952) के अनुसार**, "सामान्य रूप से प्रश्नावली का अर्थ, प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने की उस प्रणाली से है जिसमें एक पत्रक, प्रारूप या प्रपत्र का उपयोग किया जाता है जिसे उत्तर दाता स्वयं भरता है।"

"In general the word questionnaire refers to a device for securing answers to questions by using a form which the respondent fills in himself."

— Goode and Hatt

लुण्डबर्ग (1957) के अनुसार, "मौलिक रूप से प्रश्नावली उद्दीपकों का वह समूह होता है जिसे शिक्षित लोगों के सामने, इन उद्दीपकों के अन्तर्गत उनके मौखिक व्यवहारों का निरीक्षण करने के लिए प्रस्तुत किया जाता है।"

"Fundamentally, the questionnaire is a set of stimuli to which literate people are exposed in order to observe their verbal behaviour under these stimuli."

—Lundberg

4.8.2 स्वनिर्मित प्रश्नावली की आवश्यकता

शोधकर्ता के समक्ष महविद्यालयीन स्तर के विद्यार्थियों में मोरध्वज आश्रम के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने के लिए कोई मानकीकृत उपकरण उपलब्ध न होने के कारण स्व-निर्मित प्रश्नावली का

निर्माण किया गया। इसका निर्माण अध्ययन के लिए आवश्यक है। इस उपकरण का निर्माण अनुसन्धानकर्ता ने शोध समस्या के उद्देश्यों एवं समस्या के घटकों को ध्यान में रखकर किया है।

4.8.3 स्वनिर्मित प्रश्नावली निर्माण के सोपान

प्रस्तुत शोध हेतु गणेश बाग के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण किया गया। प्रश्नावली निर्माण के सोपान निम्नवत हैं—

(i) प्रथम सोपान: सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

अनुसन्धानकर्ता द्वारा प्रश्नावली निर्माण से पूर्व सम्बन्धित साहित्य का व्यापक एवं गहन अध्ययन किया गया।

(ii) द्वितीय सोपान: विषय विशेषज्ञों से परामर्श

शोधकर्ता ने प्रश्नावली निर्माण हेतु विषय से सम्बन्धित विशेषज्ञों की राय ली तथा उनके परामर्श से प्रश्नावली के निर्माण के लिए क्षेत्र निर्धारित किये।

(iii) तृतीय सोपान: प्रश्नों का निर्माण

मोरध्वज आश्रम से सम्बन्धित जागरूकता के अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा 17 प्रश्नों का निर्माण किया गया (परिशिष्ट—VII)। समस्या के उद्देश्य एवं न्यादर्श के स्तर के आधार पर संकलन हेतु बन्द प्रश्नावली का चयन किया गया। इनमें कथनों को विकल्पात्मक बनाया गया जिसमें चार विकल्प दिए गये; इन चार में से एक विकल्प को चुनना था।

(iv) चतुर्थ सोपान: विशेषज्ञों की राय

प्रश्नावली निर्माण के पश्चात इसे विशेषज्ञों को दिखाया गया। उनके द्वारा निरर्थक एवं दोहराव वाले प्रश्नों को हटाया गया तथा कुछ नवीन प्रश्न जोड़े गये। अतः सुझावों के पश्चात प्रश्नावली में प्रश्नों को क्रमवार रखा गया तथा अन्तिम रूप से कुल 17 प्रश्न बने (परिशिष्ट–VIII)।

4.9 परीक्षण का प्रशासन

परीक्षण का प्रशासन गूगल फॉर्म के माध्यम से ऑनलाइन रूप में किया जाना था। इस हेतु सर्वप्रथम शोधकर्ता ने गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्वी (चित्रकूट) के हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ० गौरव पांडेय जी से मिलकर उन्हें इस जागरूकता प्रश्नावली के विषय में

बताया। उन्होंने इसे प्रशासित करने की अनुमति दी तथा प्रश्नावली के लिंक को अपने व्हाट्स एप नम्बर पर भेजने के लिए कहा। उन्होंने इसको अपने विद्यालय के विद्यार्थियों के ग्रुप में भेज दिया।

इसी प्रकार शोधकर्ता छत्रपति शाहू जी महिला महाविद्यालय, कर्वी (चित्रकूट) में गया तथा कला संकाय के विभागाध्यक्ष डॉ० आशीष वर्मा से मिलकर उनसे प्रश्नावली को प्रशासित करने की अनुमति प्राप्त की। उनकी अनुमति से शोधकर्ता ने स्वयं कक्षाओं में जाकर प्रशिक्षुओं को इस प्रश्नावली के विषय में समझाया तथा अपने समक्ष ही प्रश्नावली को छात्रों के ग्रुप में भेजकर ऑनलाइन भरवाया।

इसी प्रकार शोधकर्ता जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, शिवरामपुर (चित्रकूट) गया तथा डायट प्रवक्ता डॉ० शिव प्रसाद से मिलकर उनसे प्रश्नावली को प्रशासित करने की अनुमति प्राप्त की। उनकी अनुमति से शोधकर्ता ने स्वयं कक्षाओं में जाकर प्रशिक्षुओं को इस प्रश्नावली के विषय में समझाया तथा अपने समक्ष ही प्रश्नावली को छात्रों के ग्रुप में भेजकर ऑनलाइन भरवाया।

गूगल फॉर्म के माध्यम से विद्यार्थियों के प्रत्युत्तर शोधार्थी को Gmail द्वारा प्राप्त हुए। कुछ विद्यार्थियों ने गूगल फॉर्म को एक से अधिक बार भर दिया। अतः उनके द्वारा भरे गये प्रथम गूगल फॉर्म को ही न्यादर्श में सम्मिलित किया गया। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे विद्यार्थियों ने भी गूगल फॉर्म भरा जो शोध हेतु चयनित विद्यालयों में अध्ययनरत् नहीं थे। ऐसे विद्यार्थियों को पहचानकर शोधकर्ता द्वारा उन्हें न्यादर्श में सम्मिलित नहीं किया गया। न्यादर्श में दिनांक 25/08/2022 तक प्राप्त विद्यार्थियों की अनुक्रियाओं को ही न्यादर्श में सम्मिलित किया गया। इस प्रकार अन्तिम रूप से कुल 97 विद्यार्थियों की न्यादर्श के रूप में अनुक्रियायें प्राप्त हुई।

4.10 परीक्षण का फलांकन

शोधकर्ता ने प्रश्नावली का निर्माण गूगल फॉर्म के माध्यम से क्विज के रूप में किया था जिसमें प्रत्येक प्रश्न के लिए 1 अंक निर्धारित था। सही उत्तर के लिए 1 अंक तथा गलत उत्तर देने पर 0 अंक प्रदान किया गया। गूगल फॉर्म में response पर क्लिक करने पर वह स्वतः ही उसका फलांकन करके परिणाम प्रस्तुत कर देता है।
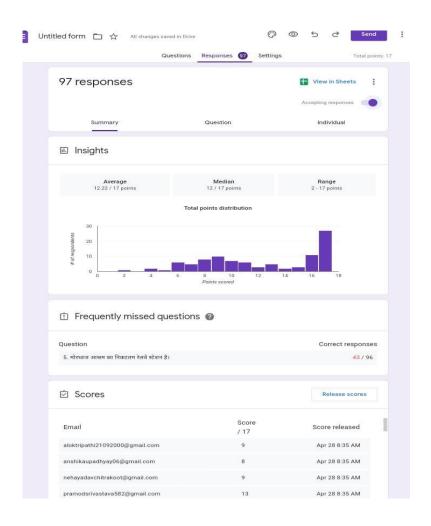
अध्याय पंचम

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन

प्रस्तुत अध्याय का उद्देश्य वर्णित शोध-विधि द्वारा एकत्रित प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण तथा विवेचन करना है। प्रस्तुत अध्याय में सांख्यिकी गणना से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण किया गया है।

5.1 मोरध्वज आश्रम के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता का अध्ययन करना

तालिका संख्या 5.1

मोरध्वज आश्रम के प्रति छात्र छात्राओं की जागरूकता विश्लेषण तालिका

लिंग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	माध्यिका (Md)	प्रमाण विचलन (S.D.)	वैषम्यता (Sk)	कुकुदता (Ku)
छात्र	18	13.777	15.5	3.9798	-1.5966	4.9307
छात्राएं	79	11.86	11	4.2358	-0.0281	1.5418
कुल विद्यार्थी	97	12.2164	12	4.2553	-0.28	1.7531

चित्र संख्या 5.1.1
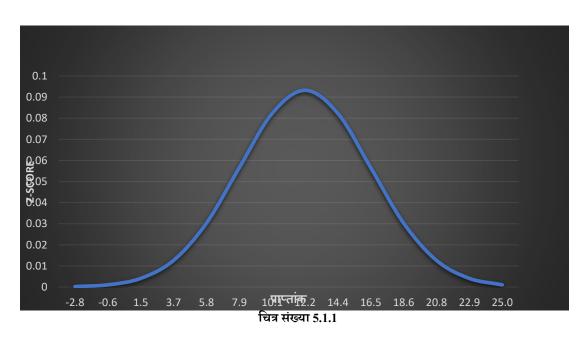
कुल विद्यार्थियों की जागरूकता से संबंधित सामान्य संभावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—छात्र-छात्राओं की जागरूकता का अध्ययन करने के सम्बन्ध में शोधकर्ता ने जागरूकता प्रश्नावली पर प्राप्त अंको के वितरण की प्रकृति का विश्लेषण किया। तालिका संख्या 5.1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल विद्यार्थियों के लिए वैषम्यता का मान -0.28 है, जब वैषम्यता का मान -0.5 तथा 0.5 के मध्य होता है तब वितरण सममित/सन्तुलित माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 1.7531 पाई गयी, जब कुकुदता का स्तर -3 से 3 के मध्य होता है तब वितरण सामान्य माना जाता है।

विवेचना—न्यादर्श में कुल विद्यार्थियों की संख्या पर्याप्त होने के कारण वैषम्यता तथा कुकुदता का स्तर सामान्य है/सामान्य वितरण के अनुरूप है, जो चित्र संख्या 5.1.1 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर लागू किया जा सकता है। प्रदत्त सामान्य सम्भावना वक्र के अनुसार वितरित हैं।
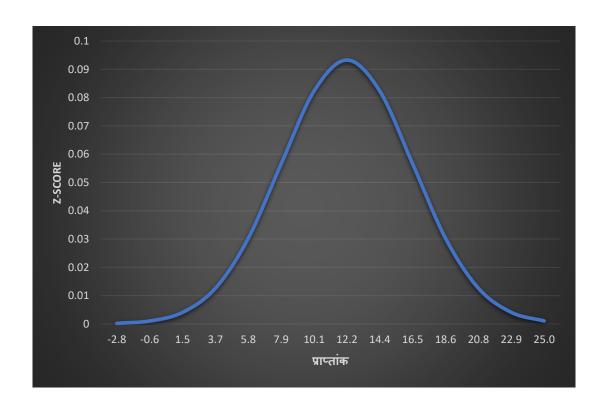
चित्र संख्या 5.1.2

छात्रों की जागरूकता से संबंधित सामान्य संभावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि छात्रों का मध्यमान 13.777 तथा प्रमाप विचलन 3.97 है। छात्रों के लिए वैषम्यता का मान – 1.59 है, जब वैषम्यता का मान -0.5 तथा 0.5 के मध्य होता है तब वितरण सममित/सन्तुलित माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 4.93 पाई गयी, जब कुकुदता का स्तर -3 से 3 के मध्य होता है तब वितरण सामान्य माना जाता है।

विवेचना—न्यादर्श में छात्रों की संख्या पर्याप्त होने के कारण वैषम्यता तथा कुकुदता का स्तर सामान्य है/सामान्य वितरण के अनुरूप नहीं है, जो चित्र संख्या 5.1.2 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर लागू नहीं किया जा सकता है। प्रदत्त सामान्य सम्भावना वक्र के अनुसार वितरित हैं।
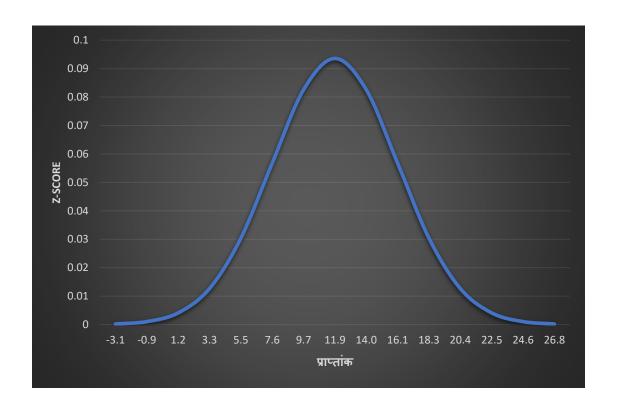
चित्र संख्या 5.1.3

छात्राओं की जागरूकता से संबंधित सामान्य संभावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि छात्राओं का मध्यमान 11.86 तथा प्रमाप विचलन 4.23 है। छात्राओं के लिए वैषम्यता का मान – 0.028 है, जब वैषम्यता का मान -0.5 तथा 0.5 के मध्य होता है तब वितरण सममित/सन्तुलित माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 1.54 पाई गयी, जब कुकुदता का स्तर -3 से 3 के मध्य होता है तब वितरण सामान्य माना जाता है।

विवेचना—न्यादर्श में छात्राओं की संख्या पर्याप्त होने के कारण वैषम्यता तथा कुकुदता का स्तर सामान्य है/सामान्य वितरण के अनुरूप है, जो चित्र संख्या 5.1.3 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर लागू किया जा सकता है। प्रदत्त सामान्य सम्भावना वक्र के अनुसार वितरित हैं।

5.2 मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त और निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन

तालिका संख्या 5.2

मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/ सहायता प्राप्त और निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता विश्लेषण

विद्यालय स्तर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	माध्यिका (Md)	प्रमाप विचलन (S.D.)	वैषम्यता (Sk)	कुकुदता (Ku)
राजकीय/ सहायता प्राप्त विद्यालय के विद्यार्थी	55	13.54	16	4.048	-0.924	2.594
निजी विद्यालय के विद्यार्थी	42	10.47	10	3.874	0.438	2.243
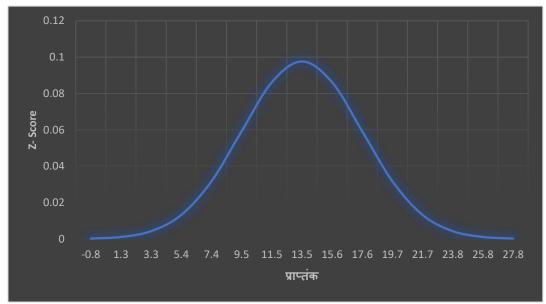
चित्र संख्या 5.2.1

राजकीय/ सहायता प्राप्त विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता से संबंधित सामान्य संभावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.2 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि राजकीय/ सहायता प्राप्त विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान 13.545 तथा प्रमाप विचलन 4.048 है। राजकीय/ सहायता प्राप्त विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए वैषम्यता का मान – 0.924 है, जब वैषम्यता का मान -0.5 तथा 0.5 के मध्य होता है

तब वितरण सममित/सन्तुलित माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 2.594 पाई गयी, जब कुकुदता का स्तर -3 से 3 के मध्य होता है तब वितरण सामान्य माना जाता है।

विवेचना—न्यादर्श में राजकीय/ सहायता प्राप्त विद्यालय के विद्यार्थियों का चयन असम्भाव्य विधि से होने के कारण वैषम्यता तथा कुकुदता का स्तर सामान्य है/सामान्य वितरण के अनुरूप है, जो चित्र संख्या 5.2.1 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर लागू किया जा सकता है। प्रदत्त सामान्य सम्भावना वक्र के अनुसार वितरित हैं।

चित्र संख्या 5.2.2
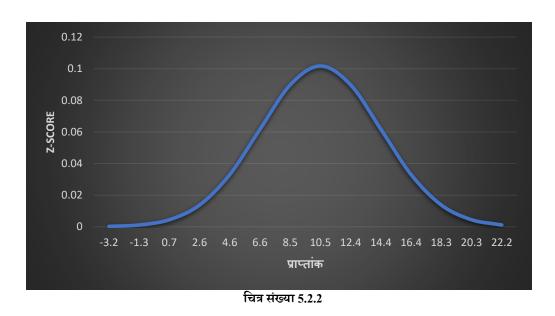
निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता से संबंधित सामान्य संभावना वक्र (NPC)

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.2 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि निजी विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान 10.47 तथा प्रमाप विचलन 3.874 है। निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए वैषम्यता का मान 0.4384 है, जब वैषम्यता का मान -0.5 तथा 0.5 के मध्य होता है तब वितरण सममित/सन्तुलित माना जाता है। प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण में कुकुदता 2.243 पाई गयी, जब कुकुदता का स्तर -3 से 3 के मध्य होता है तब वितरण सामान्य माना जाता है।

विवेचना—न्यादर्श में निजी विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों का चयन असम्भाव्य विधि से होने के कारण वैषम्यता तथा कुकुदता का स्तर सामान्य है/सामान्य वितरण के अनुरूप है, जो चित्र संख्या 5.2.2 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर लागू किया जा सकता है। प्रदत्त सामान्य सम्भावना वक्र के अनुसार वितरित हैं।

5.3 मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण

प्रश्न 1. मोरध्वज आश्रम किस जनपद में स्थित है?

सही उत्तर- सतना

तालिका संख्या 5.3.1
प्रश्न 1 के सम्बंध में विद्यार्थियों की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	18	13	72.22%
छात्राएं	79	36	45.56%
कुल विद्यार्थी	97	49	50.51%

चित्र संख्या - 5.3.1
प्रश्न संख्या 1 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.1 एवं चित्र संख्या 5.3.1 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि " मोरध्वज आश्रम सतना जनपद में स्थित है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 72.22 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 45.56 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 50.51 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है, कि लगभग आधे विद्यार्थी "मोरध्वज आश्रम सतना जनपद में स्थित" होने से परिचित हैं।

प्रश्न 2. मोरध्वज आश्रम से निकटतम ग्राम है?

सही उत्तर – पालदेव

तालिका संख्या 5.3.2
प्रश्न 2 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	18	14	77.77%
छात्राएं	79	51	64.55%
कुल विद्यार्थी	97	65	67.01%
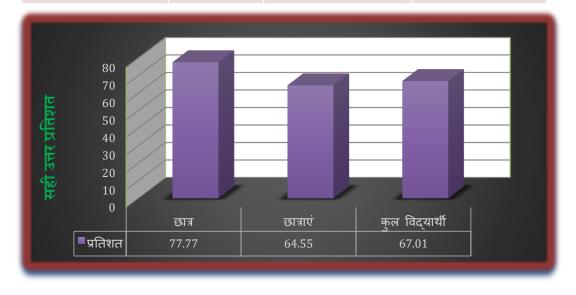
चित्र संख्या – 5.3.2
प्रश्न संख्या 2 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:-उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.2 एवं चित्र संख्या 5.3.2 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "मोरध्वज आश्रम से निकटतम ग्राम पालदेव है।" के प्रति सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 77.77 पाया गया, वहीं छात्राओं का प्रतिशत 64.55 पाया गया तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 67.01 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश विद्यार्थी "मोरध्वज आश्रम से निकटतम ग्राम पालदेव होने" से परिचित हैं।

प्रश्न 3. मोरध्वज की कथा किस ग्रन्थ में वर्णित है?

सही उत्तर – महाभारत

तालिका संख्या 5.3.3
प्रश्न 3 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	सही उत्तर		
	N	आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	18	16	88.88%
छात्राएं	79	67	84.81%
कुल विद्यार्थी	97	83	85.56%

चित्र संख्या - 5.3.3
प्रश्न संख्या 3 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:-उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.3 एवं चित्र संख्या 5.3.3 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "मोरध्वज की कथा महाभारत ग्रन्थ में वर्णित हैं।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 88.88 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 84.81 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 85.56 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश विद्यार्थी "मोरध्वज की कथा महाभारत ग्रन्थ में वर्णित ” होने से परिचित हैं।

प्रश्न 4. मोरध्वज आश्रम में लगभग कितनी सीढ़ियाँ हैं?

सही उत्तर - 200

तालिका संख्या 5.3.4
प्रश्न 4 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	18	16	88.88%
छात्राएं	79	53	67.08%
कुल विद्यार्थी	97	69	71.13%

चित्र संख्या - 5.3.4
प्रश्न संख्या 4 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.4 एवं चित्र संख्या 5.3.4 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "मोरध्वज आश्रम में लगभग 200 सीढ़ियाँ है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 88.88 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 67.08 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 71.13 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश विद्यार्थी " मोरध्वज आश्रम में लगभग 200 सीढ़ियाँ" होने से परिचित हैं।

प्रश्न 5. मोरध्वज आश्रम का निकटतम रेलवे स्टेशन है?

सही उत्तर– शिवरामपुर

तालिका संख्या 5.3.5

प्रश्न 5 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	18	10	55.55%
छात्राएं	79	33	41.77%
कुल विद्यार्थी	97	43	44.32%
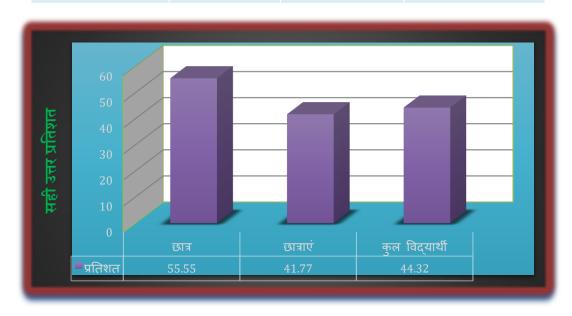
चित्र संख्या – 5.3.5

प्रश्न संख्या 5 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.5 एवं चित्र संख्या 5.3.5 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "मोरध्वज आश्रम का निकटतम रेलवे स्टेशन शिवरामपुर है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 55.55 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 41.77 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 44.32 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि आधे से भी कम विद्यार्थी "मोरध्वज आश्रम का निकटतम रेलवे स्टेशन शिवरामपुर होने से" परिचित हैं। आधे से अधिक छात्र परिचित हैं, जबकि आधे से कम छात्राएं इस तथ्य से परिचित हैं।

प्रश्न 6. मोरध्वज आश्रम के निकटतम धार्मिक स्थल है?

सही उत्तर– गुप्त गोदावरी

तालिका संख्या 5.3.6

प्रश्न 6 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	18	17	94.44%
छात्राएं	79	60	75.94%
कुल विद्यार्थी	97	77	79.38%

चित्र संख्या - 5.3.6

प्रश्न संख्या 6 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.6 एवं चित्र संख्या 5.3.6 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "मोरध्वज आश्रम के निकटतम धार्मिक स्थल गुप्त गोदावरी है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 94.44 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 75.94 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 79.38 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि तीन चौथाई से अधिक विद्यार्थी " मोरध्वज आश्रम के निकटतम धार्मिक स्थल गुप्त गोदावरी" होने से परिचित हैं।

प्रश्न 7. मोरध्वज किस पर्वत श्रृंखला पर स्थित है?

सही उत्तर– विंध्यांचल

तालिका संख्या 5.3.7

प्रश्न 7 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	**N**	**सही उत्तर**	
		आवृत्ति	**प्रतिशत**
छात्र	18	16	88.88%
छात्राएं	79	45	56.96%
कुल विद्यार्थी	97	61	62.88%

चित्र संख्या – 5.3.7

प्रश्न संख्या 7 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:-उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.7 एवं चित्र संख्या 5.3.7 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "मोरध्वज विंध्यांचल पर्वत श्रृंखला पर स्थित है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 88.88 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 56.96 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 62.88 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि आधे से अधिक विद्यार्थी "मोरध्वज विंध्यांचल पर्वत श्रृंखला पर स्थित होने" से परिचित हैं।

प्रश्न 8. मोरध्वज आश्रम के निकटतम झरना है—

सही उत्तर– सिद्धबाबा

तालिका संख्या 5.3.8

प्रश्न 8 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	18	14	77.77
छात्राएं	79	48	60.75
कुल विद्यार्थी	97	62	63.91
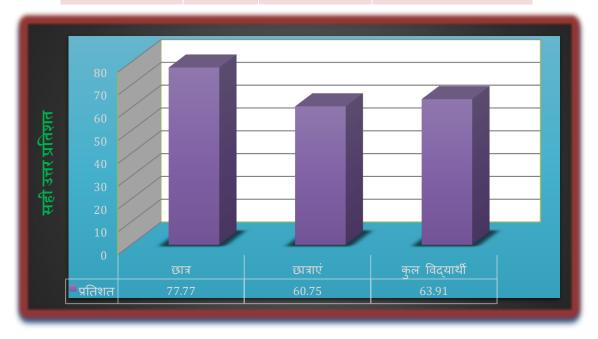
चित्र संख्या – 5.3.8

प्रश्न संख्या 8 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.8 एवं चित्र संख्या 5.3.8 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "मोरध्वज आश्रम के निकटतम सिद्धबाबा झरना है" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 77.77 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 60.75 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 63.91 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि दो तिहाई विद्यार्थी ही “मोरध्वज आश्रम के निकटतम सिद्धबाबा झरना ” होने से परिचित हैं।

प्रश्न 9. मोरध्वज आश्रम में स्थित जलधारा से दूर होते हैं—
सही उत्तर– चर्म रोग

तालिका संख्या 5.3.9
प्रश्न संख्या 9 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	18	16	88.88%
छात्राएं	79	51	64.55%
कुल विद्यार्थी	97	67	69.07%
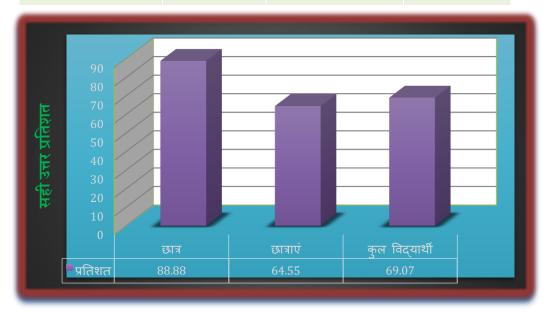
चित्र संख्या - 5.3.9
प्रश्न संख्या 9 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.9 एवं चित्र संख्या 5.3.9 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि " मोरध्वज आश्रम में स्थित जलधारा से चर्म रोग दूर होते हैं।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 88.88 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 64.55 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 69.07 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि दो तिहाई से अधिक विद्यार्थी " मोरध्वज आश्रम में स्थित जलधारा से चर्म रोग दूर" होने से परिचित हैं।

प्रश्न 10. ताम्रध्वज किसका पुत्र था?

सही उत्तर– मोरध्वज

तालिका संख्या 5.3.10

प्रश्न 10 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	18	15	83.33%
छात्राएं	79	76	96.20%
कुल विद्यार्थी	97	91	93.81%
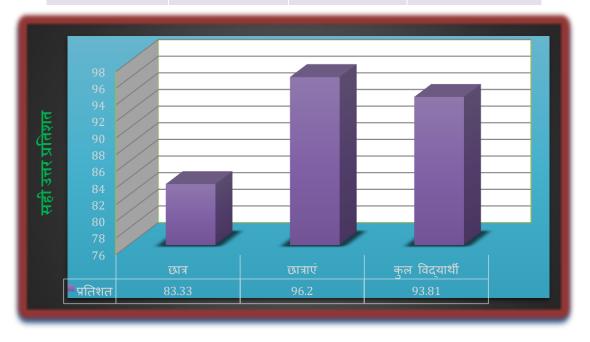
चित्र संख्या – 5.3.10

प्रश्न संख्या 10 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:-उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.10 एवं चित्र संख्या 5.3.10 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि " ताम्रध्वज मोरध्वज का पुत्र था।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 83.33 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 96.20 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 93.81 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि तीन तिहाई से कुछ कम विद्यार्थी " ताम्रध्वज मोरध्वज का पुत्र" होने से परिचित हैं।

प्रश्न 11. ताम्रध्वज ने किस महावीर को युद्ध में मूर्छित किया ?
सही उत्तर– अर्जुन

तालिका संख्या 5.3.11
प्रश्न 11 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	18	12	66.66%
छात्राएं	79	54	68.35%
कुल विद्यार्थी	97	66	68.04%
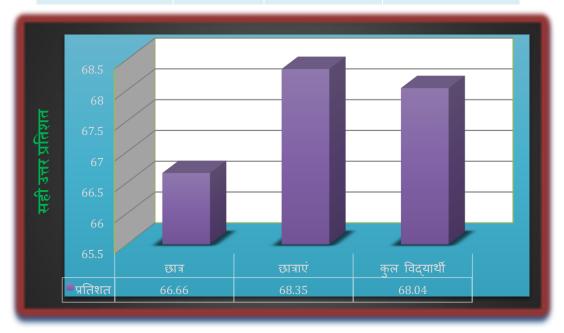
चित्र संख्या - 5.3.11
प्रश्न संख्या 11 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.11 एवं चित्र संख्या 5.3.11 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि " ताम्रध्वज ने महावीर अर्जुन को युद्ध में मूर्छित किया।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 66.66 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 68.35 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 68.04 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि दो तिहाई से अधिक विद्यार्थी "ताम्रध्वज ने महावीर अर्जुन को युद्ध में मूर्छित किया" होने से परिचित हैं।

प्रश्न 12. किसने अपने पुत्र को आरे से कटकर दो भाग किये?

सही उत्तर– मोरध्वज

तालिका संख्या 5.3.12

प्रश्न 12 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	18	16	88.88%
छात्राएं	79	67	84.81%
कुल विद्यार्थी	97	83	85.56%

चित्र संख्या - 5.3.12

प्रश्न संख्या 12 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.12 एवं चित्र संख्या 5.3.12 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "मोरध्वज ने अपने पुत्र को आरे से कटकर दो भाग किये।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 88.88 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 84.81 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 85.56 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि तीन चौथाई से अधिक विद्यार्थी " मोरध्वज ने अपने पुत्र को आरे से कटकर दो भाग" होने से परिचित हैं।

प्रश्न 13. मोरध्वज से गुप्त गोदावरी की दूरी है–

सही उत्तर– लगभग 5 KM

तालिका संख्या 5.3.13

प्रश्न 13 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	18	16	88.88%
छात्राएं	79	56	70.88%
कुल विद्यार्थी	97	72	74.22%
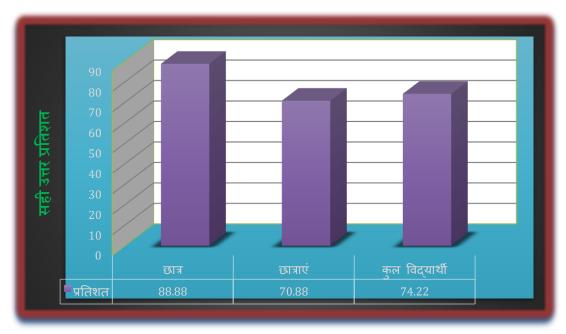
चित्र संख्या - 5.3.13

प्रश्न संख्या 13 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.13 एवं चित्र संख्या 5.3.13 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "मोरध्वज से गुप्त गोदावरी की दूरी लगभग 5 किलोमीटर है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत

88.88 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 70.88 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 74.22 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि तीन चौथाई से कुछ कम विद्यार्थी "मोरध्वज से गुप्त गोदावरी की दूरी लगभग 5 किलोमीटर है।" इस तथ्य से परिचित हैं।

प्रश्न 14. चित्रकूट जनपद के मुख्यालय से मोरध्वज आश्रम की दूरी है–
सही उत्तर– लगभग 20 किलोमीटर

तालिका संख्या 5.3.14
प्रश्न 14 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	18	13	72.22%
छात्राएं	79	43	54.43%
कुल विद्यार्थी	97	56	57.73%

चित्र संख्या - 5.3.14
प्रश्न संख्या 14 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.14 एवं चित्र संख्या 5.3.14 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि " चित्रकूट जनपद के मुख्यालय से मोरध्वज आश्रम की दूरी लगभग 20 किलो मीटर है ।" ऐसा सही उत्तर

देने वाले छात्रों का प्रतिशत 72.22 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 54.43 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 57.73 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि दो तिहाई से कुछ कम विद्यार्थी " चित्रकूट जनपद के मुख्यालय से मोरध्वज आश्रम की दूरी लगभग 20 किलो मीटर है ।" इस तथ्य से परिचित हैं। तीन चौथाई से कुछ छात्र इस तथ्य से परिचित हैं, जबकि आधे से कुछ अधिक छात्राएं इस तथ्य से परिचित हैं।

प्रश्न 15. राजा मोरध्वज की परीक्षा किसने ली?

सही उत्तर– भगवान श्री कृष्ण

तालिका संख्या 5.3.15

प्रश्न 15 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	18	15	83.33%
छात्राएं	79	67	84.81%
कुल विद्यार्थी	97	82	84.53%

चित्र संख्या – 5.3.15

प्रश्न संख्या 15 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.15 एवं चित्र संख्या 5.3.15 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि " **राजा मोरध्वज की परीक्षा भगवान** श्री कृष्ण ने ली।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 83.33 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 84.81 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 84.53 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि तीन चौथाई से अधिक विद्यार्थी " राजा मोरध्वज की परीक्षा भगवान श्री कृष्ण ने ली। " इस तथ्य से परिचित है।

प्रश्न 16. राजा मोरध्वज किस राज्य के राजा थे?

सही उत्तर– रतनपुर

तालिका संख्या 5.3.16
प्रश्न 16 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	18	14	77.77%
छात्राएं	79	66	83.54%
कुल विद्यार्थी	97	80	82.47%
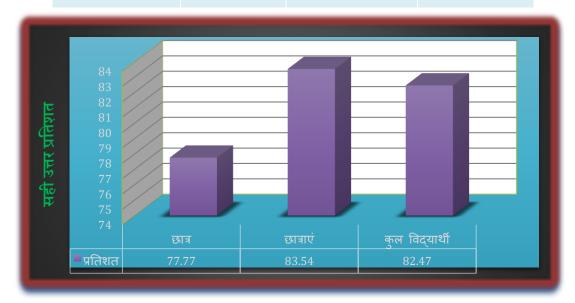
चित्र संख्या - 5.3.16
प्रश्न संख्या 16 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.16 एवं चित्र संख्या 5.3.16 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "राजा मोरध्वज रतनपुर राज्य के राजा थे।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 77.77 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 83.54 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 82.47 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि तीन चौथाई से अधिक विद्यार्थी "राजा मोरध्वज रतनपुर राज्य के राजा थे" इस तथ्य से परिचित हैं।

प्रश्न 17. निम्न मूर्तियाँ है–

सही उत्तर– ताम्रध्वज, मोरध्वज, पिंगला

तालिका संख्या 5.3.17

प्रश्न 17 के सम्बंध में विद्यार्थियो की जागरुकता

लिंग	N	सही उत्तर	
		आवृत्ति	प्रतिशत
छात्र	18	16	88.88%
छात्राएं	79	65	82.27%
कुल विद्यार्थी	97	81	83.50%

चित्र संख्या - 5.3.17

प्रश्न संख्या 17 के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता

विश्लेषण:- उपर्युक्त तालिका संख्या 5.3.17 एवं चित्र संख्या 5.3.17 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "चित्र में प्रदर्शित निम्न मूर्तियाँ ताम्रध्वज, मोरध्वज, पिंगला की है।" ऐसा सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत 88.88 पाया गया वहीं छात्राओं का प्रतिशत 82.27 पाया गया, तथा कुल विद्यार्थी प्रतिशत 83.50 पाया गया।

विवेचना:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि तीन चौथाई से अधिक विद्यार्थी " चित्र में प्रदर्शित निम्न मूर्तियाँ ताम्रध्वज, मोरध्वज, पिंगला की " होने से परिचित हैं। हैं।

5.4 मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.4

मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

श्रेणी	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	क्रान्तिक अनुपात गणना मान (CR)	't' तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
छात्र	18	13.77	3.97	1.8294	1.660	0.05	सार्थक अन्तर है।
छात्राएं	79	11.86	4.23				

df= 95
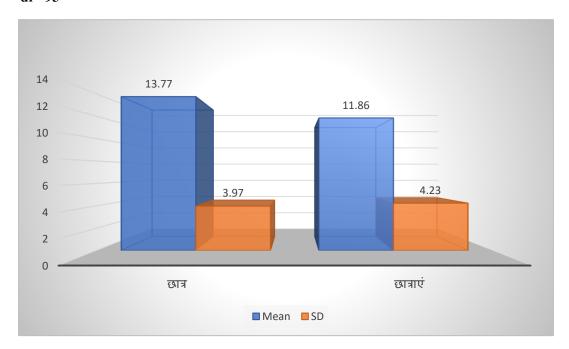
चित्र संख्या 5.4

मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालय के छात्र- छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा-चित्र

विश्लेषण — तालिका संख्या 5.4 एवं चित्र संख्या 5.4 से स्पष्ट है कि महाविद्यालय के छात्रों का मध्यमान 13.77 तथा छात्राओं का मध्यमान 11.86 है। गणना द्वारा प्राप्त CR मान 1.829 है जो कि स्वतन्त्रांश 95 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर 't' तालिका मान 1.660 से अधिक है।

अतः शून्य **परिकल्पना** "मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालय के छात्र- छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" 0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है तथा वैकल्पिक परिकल्पना "मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता में सार्थक अंतर है" स्वीकृत की जाती है।

विवेचना—तालिका संख्या 5.4 एवं चित्र संख्या 5.4 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालय के छात्र- छात्राओं की जागरूकता का स्तर असमान है। छात्र एवं छात्राएँ समान रूप से जागरूक हैं।

5.5 मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी महाविद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.5

मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/ सहायता प्राप्त एवं निजी महाविद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन तालिका

विद्यार्थी स्तर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	क्रान्तिक अनुपात (CR) गणना मान	't' तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
राजकीय/सहायता प्राप्त विद्यालय	55	13.54	4.04	3.7981	1.660	0.05	सार्थक अन्तर है।
निजी विद्यालय	42	10.47	3.87				

df= 95

चित्र संख्या 5.5

मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/ सहायता प्राप्त एवं निजी महाविद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा-चित्र

विश्लेषण — तालिका संख्या 5.5 एवं चित्र संख्या 5.5 से स्पष्ट है कि राजकीय/सहायता प्राप्त महाविद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान 13.54 तथा निजी महाविद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान 10.47 है। गणना द्वारा प्राप्त CR मान 3.798 है जो कि स्वतन्त्रांश 95 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर ‘t’ तालिका मान 1.660 से अधिक है।

अतः **शून्य परिकल्पना** “मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी महाविद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है” 0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। तथा वैकल्पिक परिकल्पना “मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी महाविद्यालय के विद्यार्थियोंमें सार्थक अंतर है” स्वीकृत की जाती है।

विवेचना — तालिका संख्या 5.5 एवं चित्र संख्या 5.5 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी महाविद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता का स्तर समान है। विद्यार्थी समान रूप से जागरूक हैं।

5.6 मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.6

मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन तालिका

विद्यार्थी स्तर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	क्रान्तिक अनुपात (CR) गणना मान	't' तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
छात्र	16	13.75	4.139	0.2366	1.684	0.5	सार्थक अन्तर नहीं है।
छात्राएँ	39	13.46	4.104				

df= 53
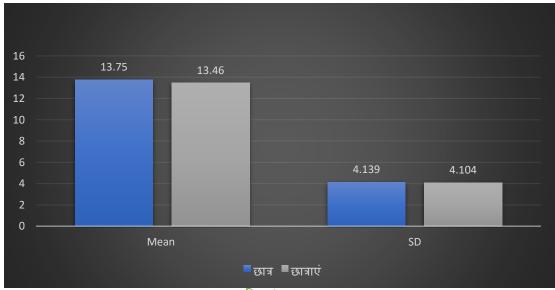
चित्र संख्या 5.6

मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन
रेखा-चित्र

विश्लेषण — तालिका संख्या 5.6 एवं चित्र संख्या 5.6 से स्पष्ट है कि राजकीय/सहायता प्राप्त महाविद्यालय के छात्रों का मध्यमान 13.75 तथा छात्राओं का मध्यमान 13.46 है। गणना द्वारा प्राप्त CR मान 0.2366 है जो कि स्वतन्त्रांश 53 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर 't' तालिका मान 1.984 से कम है।

अतः **शून्य परिकल्पना** "मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

विवेचना — तालिका संख्या 5.6 एवं चित्र संख्या 5.6 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का असमान है। छात्र एवं छात्राएँ असमान रूप से जागरूक हैं।

5.7 मोरध्वज आश्रम के प्रति निजी महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.7

मोरध्वज आश्रम के प्रति निजी महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन तालिका

विद्यार्थी स्तर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	क्रान्तिक अनुपात (CR) गणना मान	't' तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
छात्र	02	14	4.15	1.140	1.684	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है।
छात्राएं	40	10.57	4.16				

df = 40
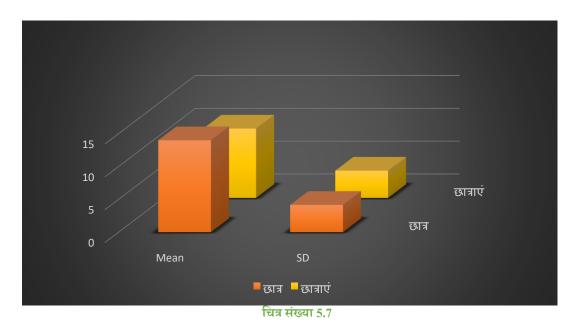
चित्र संख्या 5.7

मोरध्वज आश्रम के प्रति निजी महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मकअध्ययन रेखा-चित्र

विश्लेषण — तालिका संख्या 5.7 एवं चित्र संख्या 5.7 से स्पष्ट है कि निजी महाविद्यालय के छात्रों का मध्यमान 14 तथा छात्राओं का मध्यमान 10.57 है। गणना द्वारा प्राप्त CR मान 1.140 है जो कि स्वतन्त्रांश 40 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर 't' तालिका मान 1.684 है।

अतः **शून्य परिकल्पना** "मोरध्वज आश्रम के प्रति निजी महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

विवेचना — तालिका संख्या 5.7 एवं चित्र संख्या 5.7 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि मोरध्वज के प्रति निजी महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का स्तर समान है। छात्र एवं छात्राएँ समान रूप से जागरूक हैं।

5.8 मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं महाविद्यालय के छात्रों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.8

मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त, निजी महाविद्यालय के छात्रों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन तालिका

विद्यार्थी स्तर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	क्रान्तिक अनुपात (CR) गणना मान	't' तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
राजकीय/सहायता प्राप्त	**16**	**13.75**	**4.139**	**0.0803**	**1.746**	**0.05**	**सार्थक अन्तर नहीं है।**
निजी	**02**	**14**	**4.15**				

df= 16
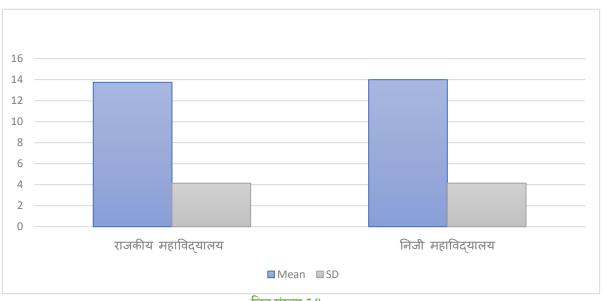
चित्र संख्या 5.8

मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी महाविद्यालय के छात्रों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा-चित्र

विश्लेषण — तालिका संख्या 5.8 एवं चित्र संख्या 5.8 से स्पष्ट है कि राजकीय/सहायता प्राप्त महाविद्यालय के छात्रों का मध्यमान 13.75 तथा निजी महाविद्यालय के छात्रों का मध्यमान 14 है। गणना द्वारा प्राप्त CR मान 0.0803 है जो कि स्वतन्त्रांश 16 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर 't' तालिका मान 1.746 है।

अतः **शून्य परिकल्पना** "मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त महाविद्यालय के एवं निजी महाविद्यालय के छात्रों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

विवेचना — तालिका संख्या 5.8 एवं चित्र संख्या 5.8 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी महाविद्यालय के छात्रों की जागरूकता का स्तर समान है। दोनों स्तर के छात्र समान रूप से जागरूक हैं।

5.9 मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं महाविद्यालय की छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.9

मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/ सहायता प्राप्त एवं निजी महाविद्यालय की छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मकअध्ययन तालिका

विद्यार्थी स्तर	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	क्रान्तिक अनुपात (CR) गणना मान	't' तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
राजकीय/सहायता प्राप्त विद्यालय की छात्राएं	**39**	**13.46**	**4.104**	**3.1405**	**1.671**	**0.05**	**सार्थक अन्तर नहीं है।**
निजी विद्यालय की छात्राएं	**40**	**10.57**	**4.16**				
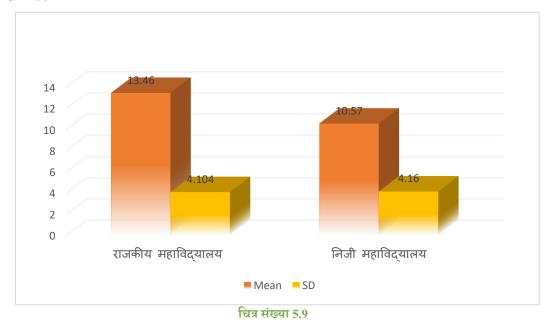
df = 77

चित्र संख्या 5.9

मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी महाविद्यालय की छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन रेखा चित्र

विश्लेषण — तालिका संख्या 5.9 एवं चित्र संख्या 5.9 से स्पष्ट है कि राजकीय/सहायता प्राप्त महाविद्यालय की छात्राओं का मध्यमान 13.46 तथा निजी महाविद्यालय की छात्राओं का मध्यमान 10.57 है। गणना द्वारा प्राप्त CR मान 3.1405 है जो कि स्वतन्त्रांश 77 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर 't' तालिका मान 1.671 से अधिक है।

अतः **शून्य परिकल्पना** "मोरध्वज के प्रति राजकीय/सहायता एवं निजी महाविद्यालय की छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" 0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। तथा वैकल्पिक परिकल्पना "मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी महाविद्यालय के छात्राओं में सार्थक अंतर है" स्वीकृत की जाती है।

विवेचना — तालिका संख्या 5.9 एवं चित्र संख्या 5.9 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी महाविद्यालय की छात्राओं की जागरूकता का स्तर असमान है। छात्र एवं छात्राएँ असमान रूप से जागरूक हैं।

अध्याय षष्ठ

निष्कर्ष एवं सुझाव

कोई भी शोध अध्ययन तब तक पूर्ण नहीं माना जाता जब तक उसके द्वारा किसी निष्कर्ष में न पहुँचा जाए। अनुसन्धान की वैज्ञानिक प्रक्रिया में तथ्यों को सापेक्षित कर, निष्कर्षों का सामान्यीकरण करके वर्ग विशेष के लिए अनुमोदित करना, अनुसन्धान का अन्तिम चरण माना गया। एक उत्तम शोध प्रबन्ध की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि उसके निष्कर्ष वस्तुनिष्ठ तथा वैज्ञानिक विधियों द्वारा संग्रहित प्रदत्त पर आधारित हों, उन पर शोधार्थी की व्यक्तिगत धारणाओं एवं अनुमानों का किञ्चित मात्र भी प्रभाव न पड़े। इस अध्याय को निम्न सोपानों में प्रस्तुत किया गया है:

- अध्ययन के निष्कर्ष
- अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता
- अध्ययन के सुझाव
- अध्ययन की सीमाएं
- भावी शोध हेतु सुझाव

6.1 अध्ययन के निष्कर्ष

सम्पूर्ण शोध कार्य के विश्लेषण एवं व्याख्या के पश्चात मुख्य कार्य उद्देश्यों की पूर्ति करना है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध के उद्देश्यों के सन्दर्भ में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए –

उद्देश्य 1: मोरध्वज आश्रम का अध्ययन करना

मोरध्वज से सम्बन्धित न्यादर्शों की वैषम्यता तथा कुकुदता के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि इनका स्तर सामान्य है/ सामान्य वितरण के अनुरूप है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर लागू किया जा सकता है।

उद्देश्य 2: मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण करना

शोधकर्ता द्वारा मोरध्वज आश्रम के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण किया गया, जिसमें 17 बहुविकल्पीय (4 विकल्प) प्रश्नों को सम्मिलित किया गया। इस जागरूकता प्रश्नावली का प्रशासन गूगल फॉर्म की सहायता से किया गया।

उद्देश्य 3: मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता का उनके लिंग एवं विद्यालय स्तरानुसार अध्ययन करना

चयनित मोरध्वज आश्रम के विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन छ: परिकल्पनाओं के अन्तर्गत किया गया है, जिनका निष्कर्ष निम्न प्रकार है:

I. मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना

मोरध्वज आश्रम के के प्रति महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। **छात्रों की जागरूकता, छात्राओं की अपेक्षा अधिक पाई गयी।** महाविद्यालय के छात्रों का मध्यमान 13.77 पाया गया, जो कि छात्राओं के मध्यमान 11.86 से कम है।

II. मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी महाविद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना

मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालय के राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी स्तर के विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

III. मोरध्वज आश्रम प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना

मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। मोरध्वज आश्रम के प्रति **राजकीय/सहायता प्राप्त महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का स्तर समान है।**

IV. मोरध्वज आश्रम के प्रति निजी महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति **निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का स्तर समान है।** वे विरासतों के प्रति मात्र 50% ही जागरूक हैं, जागरूकता का **यह स्तर सन्तोषजनक नहीं है।**

V. मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी स्तर के महाविद्यालय के छात्रों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना

मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी स्तर के महाविद्यालय के छात्रों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी महाविद्यालय के छात्रों की जागरूकता समान स्तर की है।

VI. **मोरध्वज आश्रम प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी स्तर के महाविद्यालय की छात्राओं की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना**

मोरध्वज आश्रम के प्रति राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी स्तर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। मोरध्वज आश्रम प्रति **राजकीय/सहायता प्राप्त एवं निजी स्तर के महाविद्यालय की छात्राओं की जागरूकता का स्तर समान है।**

उद्देश्य 4: चयनित मोरध्वज आश्रम के प्रति जागरूकता संवर्धन के सम्बन्ध में सुझाव प्रस्तुत करना

मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालय के विद्यार्थी पर्याप्त जागरूक नहीं हैं। उनकी जागरूकता संवर्धन के लिए सुझाव नीचे 'अध्ययन के सुझाव' के अन्तर्गत प्रस्तुत किए गये हैं।

प्रस्तुत उद्देश्य के संदर्भ में पाया गया कि मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालय के विद्यार्थी पूर्णतः जागरूक नहीं हैं। अतः जागरूकता के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं:

i. विद्यालयों में समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम किए जाएं।
ii. लोगों की जागरूकता के लिए संगोष्ठियाँ एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए।
iii. ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण के लिए विभिन्न कार्यक्रम चलाए जाएं।
iv. चित्रकूट क्षेत्र के ऐतिहासिक स्थलों को देश की ऐतिहासिक धरोहर घोषित किया जाए।

उद्देश्य 5: मोरध्वज आश्रम का ई- ब्रोशर (E-brochure) तैयार करना

मोरध्वज आश्रम का ई ब्रोशर (E-brochure) (**परिशिष्ट –XI)** में संलग्न है।

6.2 अध्ययन के सुझाव

- विद्यालयों में समय-समय पर स्थानीय संस्कृति से सम्बंधित कार्यक्रम किए जाए।
- विद्यार्थियों की जागरूकता के लिए स्थानीय संस्कृति एवं ऐतिहासिक धरोहरों से सम्बंधित संगोष्ठी एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए।
- ऐतिहासिक धरोहरों को शिक्षा के विभिन्न स्तरों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए। अथवा जनपद की ऐतिहासिक विरासत और से संबंधित सामग्री पूरक पाठ्यपुस्तक के रूप में शिक्षा के विभिन्न स्तरों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए।
- चित्रकूट बस स्टैण्ड एवं रेलवे स्टेशन में इन विरासतों से सम्बन्धित बोर्ड लगाए जाने चाहिए।
- शिक्षण संस्थानों द्वारा विद्यार्थियों को स्थानीय मेलों के अवसर पर भारतीय स्काउट गाइड, एन.सी.सी, राष्ट्रीय सेवा योजना, रेड क्रॉस सोसाइटी इत्यादि संस्थाओं के माध्यम से ट्रैफिक कंट्रोल, प्याऊ अन्य सेवा कार्य हेतु ले जाया जाना चाहिए। इससे विद्यार्थी स्थानीय संस्कृति के महत्व से परिचित होंगे तथा अपना महत्वपूर्ण योगदान भी कर सकेंगे।
- विद्यार्थियों को विद्यार्थियों को सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण धरोहरों की गहराई सूक्ष्मता से निरीक्षण हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए। शिक्षकों द्वारा अपने मार्गदर्शन में विद्यार्थियों को इसका अभ्यास कराया जाना चाहिए।
- यहां पर गाइड की व्यवस्था की जानी चाहिए जो आने वाले पर्यटकों को मोरध्वज आश्रम की विशिष्टताओं से अवगत करा सकें। शुरुआत में विभिन्न पर्वों के अवसर पर गाइड की व्यवस्था प्रारम्भ की जा सकती है।
- मोरध्वज आश्रम में समीपवर्ती ऐतिहासिक स्थलों की दूरी भी दर्शाई जानी चाहिए ताकि पर्यटक उससे परिचित होकर वहां का भी भ्रमण कर सकें।
- घर-परिवार द्वारा स्थानीय परंपराओं को पीढ़ी दर पीढ़ी अक्षुण्ण बनाए रखने का यत्न पूर्वक प्रयास किया जाना चाहिए । वैसे पंचकोसी परिक्रमा की परंपरा स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अत्यंत श्रेयस्कर है।
- गज-ग्राह जैसे विभिन्न पौराणिक आख्यान को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर सम्मिलित किया जाना चाहिए ताकि विद्यार्थी भारतीय संस्कृति से परिचित हो सकें।
- एकल परिवार के स्थान पर संयुक्त परिवार को पूरा स्थापित करना होगा ताकि दादी-नानी की छत्र-छाया में बच्चे पौराणिक कथा कहानियों को सुनकर बड़े हों तथा भारतीय संस्कृति को आत्मसात कर सकें।
- मोरध्वज आश्रम में मन्दिर का निर्माण किया जाना चाहिए।
- मोरध्वज आश्रम में पहुंचने के लिए सीढियों का निर्माण किया जाना चाहिए।
- विद्यालयों द्वारा शैक्षिक भ्रमण का आयोजन किया जाना चाहिए।
- मोरध्वज आश्रम का विकीपीडिया पेज बनाया जाना चाहिए।

- मोरध्वज आश्रम का में पहुंचने के लिए लिफ्ट की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- मोरध्वज आश्रम में पानी की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- मोरध्वज आश्रम पहुंचने के लिए हाईवे से रोड का निर्माण किया जाना चाहिए।
- मोरध्वज आश्रम में लाइट की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- मोरध्वज आश्रम का सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर व्यापक प्रचार-प्रसार जाना चाहिए।
- चित्रकूट जिले की Official website (https://chitrakoot.nic.in) के Menu Bar में Download का option होना चाहिए जिसके अन्तर्गत चित्रकूट का पर्यटन मानचित्र तथा पर्यटन स्थलों के ई-ब्रोशर डाउनलोड हेतु उपलब्ध होने चाहिए।
- उत्तर प्रदेश राज्य की ऑफिशियल पर्यटन वेबसाइट में 'Destination Column' के अन्तर्गत एक कॉलम जिले-वार पर्यटक स्थलों की सूची का होना चाहिए जिसमें जिले की ऐतिहासिक विरासतों का वर्णन किया जाना चाहिए।
- देश की ऑफिशियल पर्यटन वेबसाइट में 'Destination Column' के अन्तर्गत सभी राज्यों की एक सूची होनी चाहिए जिसमें राज्य की ऑफिशियल पर्यटन वेबसाइट का लिंक हाइपरलिंक होना चाहिए।

6.3 शैक्षिक उपादेयता

प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम शिक्षा जगत, विद्यार्थियों, शिक्षकों, इतिहासकारों, पुरातत्वविदों एवं समाज के लोगों के दृष्टिकोण को विकसित करने एवं ऐतिहासिक विरासतों से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं के समाधान में सहायक होंगे।

प्रस्तुत अध्ययन में दर्शनीय ऐतिहासिक विरासत पर विस्तृत चर्चा की गयी है, साथ ही पर्यटन जैसे विश्वव्यापी महत्व वाले विषय पर प्रकाश डाला गया है। इसके साथ ही स्थानों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष से सम्बन्धित चर्चा की गयी है । उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर पर ऐतिहासिक धरोहरों के प्रति विद्यार्थियों की अल्प जानकारी को भी प्रकाश में लाया गया है। प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों, शिक्षकों, पाठ्यक्रम निर्माताओं, प्रशासकों, इतिहासकारों, पुरातत्वविदों इत्यादि के लिए अत्यन्त सहायक सिद्ध होगा।

6.3.1 विद्यार्थियों के लिए

- विद्यार्थी मोरध्वज आश्रम के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- विद्यार्थी अपनी क्षेत्रीय धरोहर के महत्व को जान सकेंगे।
- विद्यार्थी मोरध्वज आश्रम के प्रति रुचि विकसित कर सकेंगे।
- विद्यार्थी मोरध्वज आश्रम के प्रति आकर्षित होकर खाली समय पर भ्रमण हेतु जा सकेंगे ।

6.3.2 शिक्षकों के लिए

- शिक्षक क्षेत्रीय धरोहर के महत्व को समझकर विद्यार्थियों को बता सकते हैं ।

- ❖ विद्यार्थियों के मन में मोरध्वज आश्रम के प्रति रुचि जागृति उत्पन्न कर सकते हैं।
- ❖ शिक्षक विद्यार्थियों को मोरध्वज आश्रम शैक्षिक भ्रमण हेतु ले जा सकते हैं।
- ❖ शिक्षक विद्यार्थियो को मोरध्वज आश्रम के प्रति जागरुक कर सकते हैं।
- ❖ शिक्षक अभिभावकों को शैक्षिक भ्रमण के महत्व का ज्ञान करा सकते हैं।

6.3.3 पाठ्यक्रम निर्माताओं के लिए

- ❖ ऐतिहासिक विरासतों को महाविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल करने हेतु नीति बनाने की आवश्यकता है।
- ❖ शैक्षिक भ्रमण को महाविद्यालय शिक्षा के पाठ्यक्रम में विशेष महत्व दिया जाना चाहिए।
- ❖ इतिहास विषय के महाविद्यालय शिक्षा के विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम में गणेश बाग को पूरक पाठ्य पुस्तक के रूप में सम्मिलित किया जा सकता है।

6.3.4 प्रशासकों के लिए

- ❖ जिले के प्रशासक मोरध्वज आश्रम पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करा सकते हैं।
- ❖ महाविद्यालय के विद्यार्थियों को गणेश बाग के शैक्षिक भ्रमण हेतु दिशा निर्देश जारी कर सकते हैं।
- ❖ कर्वी नगर के प्रशासक चित्रकूट बस स्टैण्ड एवं रेलवे स्टेशन में मोरध्वज आश्रम से सम्बन्धित बोर्ड लगवा सकते हैं।
- ❖ कर्वी नगर के मुख्य चौराहों पर मोरध्वज आश्रम से सम्बन्धित बोर्ड लगवाए जा सकते हैं।
- ❖ प्रस्तुत शोध में दिए गये सुझावों के आधार पर देश तथा प्रदेश की पर्यटक वेबसाइट्स में मोरध्वज आश्रम का उल्लेख किया जा सकता है।

6.3.5 इतिहासकारों के लिए

- ❖ इतिहासकार मोरध्वज आश्रम से जुड़े इतिहास के विषय में गहन जानकारी एकत्रित कर सकते हैं।
- ❖ इतिहासकार मोरध्वज आश्रम की जलधारा से जुड़े रहस्य के विषय में पता लगा सकते हैं।

6.4 अध्ययन की सीमाएँ

- ▪ शोध में प्रयुक्त स्वनिर्मित उपकरण का समय व धन के अभाव के कारण मानकीकरण सम्भव नहीं हो पाया है।
- ▪ प्रयुक्त शोध में आँकड़े एकत्रित करने के लिए विद्यार्थियों का चयन उपलब्धता के आधार पर किया गया है।
- ▪ प्रस्तुत अध्ययन में दिनांक तक गूगल फार्म से प्राप्त प्रश्नावली (126) को सम्मिलित किया गया है। सांख्यिकी गणना में सुविधा एवं समयाभाव के कारण शोधार्थी द्वारा व्यक्तिगत रूप से विद्यालयों में जाकर पूरित कराई गई 29 मुद्रित प्रश्नावलियों को अध्ययन में सम्मिलित नहीं किया गया है।

6.5 भावी शोध हेतु सुझाव

शोध अध्ययन के क्षेत्र में सत्य की खोज निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। कोई भी शोधकार्य पूर्ण व अन्तिम नहीं होता वरन् यह एक ऐसी श्रृंखला जिसमें एक कड़ी के सम्पन्न होने के साथ ही दूसरी कड़ी की शुरुआत होती है। कोई भी अध्ययन एक निश्चित परिधि तक सीमित रहता है किन्तु उसी क्षेत्र में और कार्य अन्य शोधार्थियों द्वारा किए जा सकते हैं ताकि समस्या का अधिक स्पष्ट निरूपण हो सके। शोध अध्ययन के अधिक स्थिर एवं विश्वसनीय परिणाम प्राप्त करने के लिए एक ही शोध समस्या पर कई शोध अध्ययनों का किया जाना आवश्यक होता है। शोध समस्या के लिए अधिक समय व धन की आवश्यकता होती है जो कि केवल एक शोधार्थी के लिए सम्भव नहीं होता, जिसके कारण वह एक विषय के विभिन्न पहलुओं पर कार्य नहीं कर पाता। एक शोध समस्या पर किया गया शोधकार्य, दूसरे शोधार्थी द्वारा किए गये शोध अध्ययन के लिए मार्गदर्शन एवं सुझाव का कार्य करता है। इस शोधकार्य के आधार पर भावी अध्ययनों के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं–

- ✓ वर्तमान शोध अध्ययन मध्यप्रदेश के सतना जनपद के चित्रकूट नगर के मोरध्वज आश्रम तक सीमित है, भावी शोध अध्ययन में अन्य जनपदों/राज्यों की अन्य ऐतिहासिक विरासतों को सम्मिलित किया जा सकता है।
- ✓ प्रस्तुत अध्ययन सतना जनपद के चित्रकूट नगर के मोरध्वज आश्रम तक ही सीमित है, भावी अध्ययन में चित्रकूट नगर की अन्य ऐतिहासिक विरासतों को सम्मिलित किया जा सकता है।
- ✓ प्रस्तुत अध्ययन महाविद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता तक सीमित है, भावी अध्ययन में प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को भी सम्मिलित किया जा सकता है।
- ✓ प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श का चयन असम्भाव्य विधि से किया गया है, भावी अनुसन्धान में सम्भाव्य विधि द्वारा न्यादर्श का चयन किया जा सकता है।

परिशिष्ट—I

चित्रकूट जनपद का मानचित्र
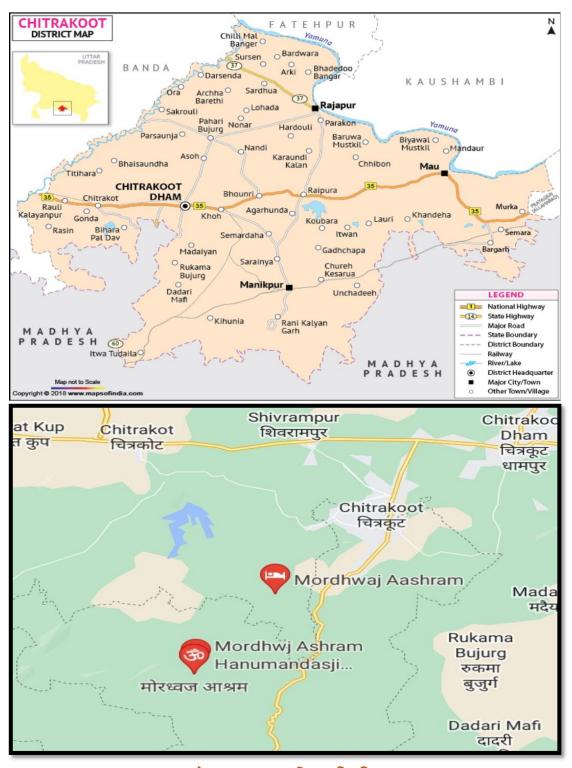
मोरध्वज आश्रम की अवस्थिति

परिशिष्ट—II

ऐतिहासिक विरासत भ्रमण चित्रावली

परिशिष्ट—III

मोरध्वज आश्रम चित्रावली
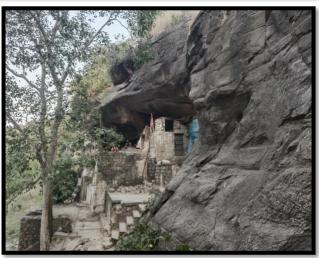
परिशिष्ट—IV

लघु शोध-प्रबन्ध प्रारूप

- Website Citations as per APA 7th Edition

Webpage
1 author
Full date

Reference entry

Slat, B. (2019, April 10). *Whales likely impacted by Great Pacific garbage patch*. The Ocean Cleanup. https://www.theoceancleanup.com/updates/whales-likely-impacted-by-great-pacific-garbage-patch/

In-text citation

Parenthetical: (Slat, 2019)
Narrative: Slat (2019)

Webpage
1 author
Full date

Reference entry

Author's Last Name, Initial(s). (Year, Month Day of publication). *Title of work*. Website. https://URL

In-text citation

Parenthetical: (Author's Last Name, Year of publication)
Narrative: Author's Last Name (Year of publication)

- Margins

Use 1-inch margins on every side of the page for an APA Style paper.

However, if you are writing a dissertation or thesis, your advisor or institution may specify different margins (e.g., a 1.5-inch left margin to accommodate binding).

- Line Spacing

2.1.3 Type -Setting, Text Processing and Printing

The text shall be printed employing laserjet or Inkjet printer, the text having been processed using a standard text processor. The standard font shall be Times New Roman or Arial of 12 pts with 1.5 line spacing. हिंदी के लिए Arial Unicode MS फांट का आकार 14 तथा शीर्षकों के लिए फांट का आकार 16 स्वीकार्य होगा।

- Page Numbering

  - The first page is numbered page 1.
  - Each page is numbered sequentially thereafter.
  - Numbers are positioned in the header at the top right of each page.

परिशिष्ट – V

चित्रकूट नगर स्थित महाविद्यालय

क्रम संख्या	विद्यालय का नाम
1.	छत्रपति पति साहू जी महाराज महिला महाविद्यालय, कर्वी (चित्रकूट)
2.	गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्वी (चित्रकूट)
3.	जिला शिक्षण एवम् प्रशिक्षण संस्थान, शिवरामपुर (चित्रकूट)
4.	श्री रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, कर्वी (चित्रकूट)
5.	हड़िया बाबा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कसहाई, कर्वी (चित्रकूट)
6.	सरदार वल्लभभाई पटेल महाविद्यालय, कर्वी (चित्रकूट)
7.	महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, (चित्रकूट)

परिशिष्ट—VI

मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता प्रश्नावली–प्रथम प्रारूप

मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालय विद्यार्थियों में जागरूकता प्रश्नावली

मार्गदर्शक **शोधार्थी**

डॉ0 राजीव अग्रवाल **अनुराग कुमार**

निम्न सूचनाएं भरिए :

नाम……………………………………………………………………………… …………

पिता का नाम………………………………………………………………….....................

लिंग………………………………………………………………………….....................

कक्षा……………………………………………………………………………………

विद्यालय का नाम…………………………………………………………….. …………

दिनांक……………………………………………………………………………………..

WhatsApp…………………………………………………………………………………

निर्देश

प्रस्तुत प्रश्नावली विद्यार्थियों में मोरध्वज आश्रम के प्रति जागरूकता के अध्ययन से सम्बन्धित है। इसमें मोरध्वज आश्रम के प्रति जागरूकता सम्बन्धी प्रश्न दिए गये हैं। दिए गए विकल्पों में से किसी एक पर सही का चिह्न लगायें। सभी प्रश्न करने अनिवार्य है। आपके द्वारा दी गयी जानकारी केवल शोध कार्य में प्रयुक्त की जाएगी, अतः आप निष्पक्ष रूप से अपने विचार प्रकट करें।

प्रश्न 1. मोरध्वज आश्रम किस जनपद में स्थित है ?

क- चित्रकूट ख- पन्ना

ग- बाँदा घ- चित्रकूट

प्रश्न 2. मोरध्वज आश्रम से निकटतम ग्राम है?

क- लालपुर ख- सेजवार

ग- पाल देव घ- घुरेटनपुर

प्रश्न 3. मोरध्वज की कथा किस ग्रंथ में वर्णित है?

क- महाभारत ख- शिव पुराण

ग- रामायण घ- कंठोपनिषद्

प्रश्न 4. मोरध्वज आश्रम में लगभग कितनी सीढ़ियाँ हैं?

क- 100 ख- 200

ग- 500 घ- 1000

प्रश्न 5. मोरध्वज आश्रम का निकटतम रेलवे स्टेशन है ?

क- चित्रकूट धाम कर्वी ख- भरतकूप

ग- मझगवां घ- शिवरामपुर

प्रश्न 6. मोरध्वज आश्रम के निकटतम धार्मिक स्थल है ?

क- गुप्त गोदावरी ख- सती अनुसुइया वह तो

ग- कामतानाथ घ- हनुमान धारा

प्रश्न 7. मोरध्वज आश्रम किस पर्वत श्रृंखला पर स्थित है ?

क- अरावली ख- विंध्याचल

ग- सतपुड़ा घ- इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 8. मोरध्वज आश्रम के निकटतम झरना है ?

क- सिद्ध बाबा　　　　　　　ख- सबरी

ग- बृहस्पति कुंड　　　　　　घ- सकरों

प्रश्न 9. मोरध्वज आश्रम में स्थित जलधारा से दूर होते हैं ?

क- पेट के रोग　　　　　　　ख- चर्म रोग

ग- नेत्र रोग　　　　　　　　घ- इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 10. ताम्रध्वज किसका पुत्र था ?

क- मोरध्वज　　　　　　　　ख- अर्जुन

ग- युधिष्ठिर　　　　　　　　घ- धीरध्वज

प्रश्न 11. ताम्रध्वज ने किस महावीर को युद्ध में मूर्छित किया ?

क- अर्जुन　　　　　　　　　ख- युधिष्ठिर

ग- नकुल　　　　　　　　　घ- भीम

प्रश्न 12. किसने अपने पुत्र को अरे से काट कर दो भाग किये?

क- मोरध्वज　　　　　　　　ख- ताम्रध्वज

ग- अर्जुन　　　　　　　　　घ- अम्बरीश

प्रश्न 13. मोरध्वज आश्रम से गुप्त गोदावरी की दूरी है।

क- लगभग 5 KM　　　　　　ख- लगभग 10 KM

ग- लगभग 15 KM　　　　　घ- लगभग 20KM

प्रश्न 14. चित्रकूट जनपद के मुख्यालय से मोरध्वज आश्रम की दूरी है।

क- लगभग 5KM　　　　　　ख- लगभग 10 KM

ग- लगभग 20 KM　　　　　घ- लगभग 25KM

प्रश्न 15. राजा मोरध्वज की परीक्षा किसने ली?

क- भगवान श्री कृष्ण　　　　ख- भगवान श्री राम

ग- भगवान श्री विष्णु　　　　घ- भगवान श्री शंकर

प्रश्न 16. राजा मोरध्वज किस राज्य के राजा थे ?

क- रतनपुर　　　　ख- गंधार

ग- इन्द्रप्रस्थ　　　　घ- हस्तिनापुर

प्रश्न 17. निम्न मूर्तियाँ है?

क- ताम्रध्वज, मोरध्वज, पिंगला

ख- कृष्ण, बलराम, सुभद्रा

ग- राम, लक्ष्मण, सीता

घ- इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 18. मोरध्वज आश्रम में किस कारण प्रसिद्ध है?

क- राजा मोरध्वज　　　　ख- प्राकृतिक सुन्दरता

ग- जल की धारा।　　　　घ- इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 19. अश्वमेध यज्ञ मे यज्ञ के बाद किस जानवर को छोड़ा जाता है?

क- घोड़ा　　　　ख- हाथी

ग- बेल　　　　घ-शेर

प्रश्न 20. किस वीर ने अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा रोका ?

क- धीरध्वज　　　　ख- मोरध्वज

ग- अर्जुन　　　　घ-श्री कृष्ण

प्रश्न 21. अश्वमेध यज्ञ के घोड़े का रक्षक कौन था ?

क- अर्जुन　　　　　　　　ख- युधिष्ठिर

ग-भीम　　　　　　　　घ- नकुल

प्रश्न 22. भगवान श्री कृष्ण ने किस राजा को अपने विराट रूप के दर्शन दिए?

क- राजा मोरध्वज　　　　　　ख- अर्जुन

ग- युधिष्ठिर　　　　　　　घ- इनमें से कोई नहीं

परिशिष्ट—VII

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरुकता प्रश्नावली–अंतिम प्रारूप

गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरुकता प्रश्नावली

मार्गदर्शक **शोधार्थी**

डॉ0 राजीव अग्रवाल **अनुराग कुमार**

निम्न सूचनाएं भरिए :

नाम………………………………………………………………………………… …………

पिता का नाम……………………………………………………………………….....................

लिंग…………………………………………………………………………….....................

कक्षा……………………………………………………………………………………………

विद्यालय का नाम……………………………………………………………….. …………..

दिनांक……………………………………………………………………………………..

WhatsApp……………………………………………………………………………….

निर्देश

प्रस्तुत प्रश्नावली विद्यार्थियों में गणेश बाग़ की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता के अध्ययन से सम्बन्धित है। इसमें गणेश बाग़ की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता सम्बन्धी प्रश्न दिए गये हैं। दिए गए विकल्पों में से किसी एक पर सही का चिह्न लगायें। सभी प्रश्न करने अनिवार्य है। आपके द्वारा दी गयी जानकारी केवल शोध कार्य में प्रयुक्त की जाएगी, अतः आप निष्पक्ष रूप से अपने विचार प्रकट करें।

परिशिष्ट–VIII

उत्तरमाला

प्रश्न 1. मोरध्वज आश्रम किस जनपद में स्थित हैं? **(सतना)**

प्रश्न 2. मोरध्वज आश्रम से निकटतम ग्राम है– **(पालदेव)**

प्रश्न 3.मोरध्वज की कथा किस ग्रन्थ में वर्णित है? **(महाभारत)**

प्रश्न 4. मोरध्वज आश्रम में लगभग कितनी सीढ़ियाँ हैं? **(200)**

प्रश्न 5. मोरध्वज का निकटतम रेलवे स्टेशन है ? **(शिवरामपुर)**

प्रश्न 6. मोरध्वज आश्रम के निकटतम धार्मिक स्थल है? **(गुप्त गोदावरी)**

प्रश्न 7. मोरध्वज आश्रम किस पर्वत श्रृंखला पर स्थित है? **(विंध्यानचल)**

प्रश्न 8. मोरध्वज के निकटतम झरना है– **(सिद्ध बाबा)**

प्रश्न 9. मोरध्वज आश्रम में स्थित जलधारा से दूर होते हैं– **(चर्म रोग)**

प्रश्न 10. ताम्रध्वज किसका पुत्र था ? **(मोरध्वज)**

प्रश्न 11. ताम्रध्वज ने किस महावीर को युद्ध में मूर्छित किया? **(अर्जुन)**

प्रश्न 12. किसने अपने पुत्र को आरे से काटकर दो भाग किए ? **(मोरध्वज)**

प्रश्न 13. मोरध्वज से गुप्त गोदावरी की दूरी है– **(लगभग 5KM)**

प्रश्न 14. चित्रकूट जनपद के मुख्यालय से मोरध्वज आश्रम की दूरी है– **(लगभग 20 KM)**

प्रश्न 15. राजा मोरध्वज की परीक्षा किसने ली? **(भगवान श्री कृष्ण)**

प्रश्न 16. राजा मोरध्वज किस राज्य के राजा थे? **(रतनपुर)**

प्रश्न 17. निम्न मूर्तियाँ हैं– **(ताम्रध्वज, मोरध्वज, पिंगला)**

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अवस्थी, निधि (2005)। *ग्रामीण और नगरीय परिवारों की जनसंख्या नियन्त्रण के प्रति जागरूकता का अध्ययन।* पी-एच०डी० थीसिस, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर। https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/270538

आनन्द, विक्रम (2019)। *माध्यमिक स्तर के हिंदी अध्यापकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता एवं अध्यापक की शिक्षण प्रभाविता का अध्ययन।* पी-एच०डी० थीसिस, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस।

https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/296838

आर्य, डॉ० मोहन लाल (2018)। *शिक्षा के ऐतिहासिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य मेरठ:* आर० लाल० बुक डिपो।

कतरन https://yogagurul.blogspot.com/2019/

कुमार, दीपक (2021)। *मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता का अध्ययन* लघु शोध शिक्षा, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

https://archive.org/details/kaagaz-20220727-180226152241/mode/2up

गुप्ता, एस. पी. & गुप्ता, अलका (2019)। *उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान: सिद्धान्त एवं व्यवहार (Rev.Ed.) प्रयागराज: शारदा पुस्तक भवन।*

चित्रकूट जिला विकिपीडिया। https://bit.ly/3cjql79

चौरसिया, प्रिन्सी (2018)। *स्नातक स्तर पर महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता का अध्ययन।* लघु शोध प्रबन्ध शिक्षा, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

https://archive.org/details/final-book-ready-to-submitted

चौरसिया, पूजा (2019)। *माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कालिन्जर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन।* एम०एड० लघु शोध-प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

https://archive.org/details/ilovepdf-merged-4-1/mode/2up?view=theater

जागरूकता (2018 दिसम्बर 04)। विकीपीडिया। https://shorturl.at/oEHUW

पटेल, ब्रजलाल (2021)। *बाँदा जनपद के विद्यार्थियों भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन*। लघु शोध प्रबन्ध-शिक्षा, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी। https://shorturl.at/mrDRU

पाठक, पी०डी० (2017)। *शिक्षा में मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य*। आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन।

प्रतिचयन विधियाँ और प्रतिदर्श आकार का आकलन/ E-gyankosh. https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/30591/1/Unit-15.pdf

प्रसामान्य वितरणः प्रसम्भाव्यता का प्रसम्प्रत्यय, प्रसामान्य सम्भाव्य वक्र की विशेषताएँ, विषमता एवं कुकुदता, प्रसामान्य सम्भाव्यता वक्र के अनुप्रयोग। उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय। https://www.uou.ac.in/sites/default/files/sim/BAPY-201.pdf

राजकुमार (2016)। *तकनीकी शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा तथा समायोजन पर प्रभाव का एक अध्ययन।* पी-एच० डी० थीसिस, जवाहर लाल नेहरू स्नातकोत्तर शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालय, कोटा, राजस्थान।

रायजादा, बी० एस० (2008)। *शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक है* / जयपुर: दी डाइमण्ड प्रिंटिंग प्रेस।

राठौर, पूनम (2020)*। अनुसूचित पिछड़े व सामान्य जाति के स्नातकोत्तर स्तर विद्यार्थियों के मानवाधिकार जागरूकता एवं व्यक्तिगत मूल्य विकास का तुलनात्मक अध्ययन*/ पी-एच०डी० थीसिस, स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय। *https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/245803*

लघु शोध-प्रबन्ध प्रकाशित https://yogagurul.blogspot.com/2020/05/blog-post.html

लाल, रमन बिहारी (2014)। *शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन*। मेरठः आर० लाल० बुक डिपो

लाल, रमन बिहारी (2018)। *शिक्षा के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य*। मेरठ: आर० लाल० बुक डिपो ।

सक्सेना, अर्चना (2010)। *पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषण उन्मूलन के प्रति जनमानस की जागरूकता एवं सहभागिता का अध्ययन।* पी-एच०डी० थीसिस, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर। https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/230163

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण अर्थ, उद्देश्य, आवश्यकता एवं स्रोता (2019 जुलाई 20)।Sootburor. https://www.scotbuzz.org/2019/07/sambandhit sahityhtml?m=1

सर्वेक्षण विधि का अर्थ (2020, मार्च 17)। टीचर दीदी, यू-ट्यूब। https://youtu.be/3Bazwi9gRe

साहू, सरिता (2016)। *क्षेत्रीय इतिहास अध्ययन के परम्परागत मौखिक स्रोतों की ऐतिहासिकता: छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ* माँ पी.एच०डी० [थीसिस, शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग (छत्तीसगढ़)। https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/245803

सांख्यिकीUnionpedia. http://suri.li/ephml

सिंह, लक्ष्मण (2016)। *अलीगढ़ मण्डल के ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत शिक्षकों की पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन*। पी-एच०डी० थीसिस, डॉ० भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा। https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/328345

शोधगंगा https://shodhganga.inflibnet.ac.in/

Guidelines for Preparation of thethesis/Dissertations (2018).Nainital:KumaunUniversity. https://www.kunainital.ac.in/images/document/KUDScDLittPhDMScDissertationThesisPreparationandSubmissionGuidelines2018.pdf

How to Add Page Numbers in APA 5. (2020, February 25). Editarians. https://www.editarians.com/page-numbers-in-apa-style/

How to Cite a website in APA Style: Format & Examples. (2022, May 10). Scribbr. https://www.scribbr.com/apa-examples/website/

How to Create a Bell Curve Chart in Excel. https://www.extendoffice.com/documents/excel/2404-excel-template-bell-curve-chart.html

Margins. (n.d.) APA Style. Retrieved (2022, June 10). https://apastyle.apa.org/style-grammar-guidelines/paper-format/margins

Normal Skewness Range. https://community.gooddata.com/metrics-and-maql-kb-articles-43/normality-testingskewness-and-kurtosis-241

Normal Kurtosis Range.

https://www.sciencedirect.com/topics/neuroscience/kurtosis

Paragraph Style. https://libguides.usc.edu/APA7th/formatting

t-test calculator. Graphpad.

www.graphipad.com/quickcales/test1.cfm>

परिशिष्ट-IX

जीवन वृत्त

नाम— अनुराग कुमार

माता का नाम— रानी देवी

पिता का नाम— शिव कुमार

जन्म तिथि— 12 जुलाई 2000

स्थाई पता— ग्राम-नारायणपुर, पोस्ट-पुरवा तरौंहा, कर्वी, चित्रकूट

मोबाइल नंबर— +917607683191 **व्हाट्सएपनंबर**—+917607683191

ईमेल—anuragkumarckt@gmail.com

क्रमांक	परीक्षा का नाम	विश्वविद्यालय/बोर्ड/महाविद्यालय का नाम	वर्ष	प्राप्तांक	श्रेणी	प्रतिशत
1.	हाईस्कूल	यू०पी० बोर्ड, प्रयागराज	2014	455/600	प्रथम	75.83%
2.	इण्टरमीडिएट	यू०पी० बोर्ड, प्रयागराज	2016	347/500	प्रथम	69.4%
3.	बी०एल०एड०	प्रोफेसर राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) विश्वविद्यालय, प्रयागराज	2020	1517/1900	प्रथम	79.84%

प्रकाशित पुस्तक—

क्रमांक	शीर्षक	वर्ष	पृष्ठ संख्या	ISBN	वेबसाइट
1.	**विज्ञान प्रयोगशालाएं वर्तमान परिदृश्य एवं भावी संभावनाएं**	**2022**	**162**	**978-93-5636-789-0**	**https://shorturl.at/gvCNS**

घोषणा: मैं एतद्द्वारा घोषणा करता हूँ कि उपरोक्त सभी जानकारी मेरे संज्ञानानुसार सर्वोत्तम रूप से सत्य है।

दिनांक: 05/11/2023

हस्ताक्षर

स्थान: अतर्रा, बाँदा

मोरध्वज आश्रम के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन
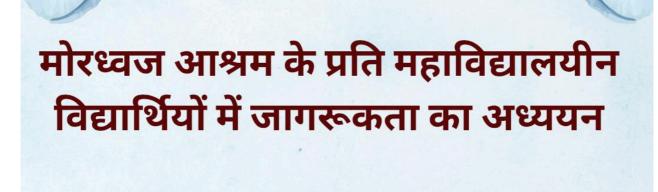
महिमा कीजै संत की,
तन मन धन सब देह।
शिर मांगै टाला नहीं,
मोरध्वज लखि लेह।

ISBN: 978-93-342-4722-0

9 789334 247220